शक्ति साधना विशेषांक
मई-2022
मूल्य-40/-
वर्ष 12
अंक 8
नारायण-मंत्र-साधना
विज्ञान
शनि साधना
धूमावती साधना
बगलामुखी कवच
तिब्बती पद्धति-
लक्ष्मी मंत्र साधना

कृपया ध्यान दें

- 1. यदि आप साधना सामग्री मंगवाना चाहते हैं।
- 2. यदि आप अपना पता या फोन नम्बर बदलवाना चाहते हैं।
- 3. यदि आप पत्रिका की वार्षिक सदस्यता लेना चाहते हैं।

तो आप जोधपुर कार्यालय के फोन नम्बरों पर सम्पर्क करें

8890543002

साधकों को सभी सामग्री स्पीड पोस्ट से भेजी जाती है। अतः साधना सामग्री मंगाने के लिए सामग्री की न्यौछावर राशि के साथ डाकखर्च 100 रुपये जोड़कर निम्न बैंक खाते में जमा करवा दें तथा जमा राशि की रसीद, साधना सामग्री का विवरण, अपना पूरा पता पिनकोड एवं फोन नम्बर के साथ हमें उपरोक्त नम्बर पर वाट्सअप कर दें तो हम आपको साधना सामग्री स्पीड पोस्ट से भेज देंगे, जिससे आपको साधना सामग्री शीघ्र प्राप्त हो सकेगी।

बैंक खाते का विवरण

खाते का नाम	: नारायण मंत्र साधना विज्ञान
बैंक का नाम	: स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया
ब्रांच कोड	: SBIN0000659
खाता नम्बर	: 31469672061

मासिक पत्रिका का वार्षिक मेम्बरशिप ऑफर

1 वर्ष सदस्यता 405/- — गणपति यंत्र एवं माला 405 + 45 (डाक खर्च) = 450

1 वर्ष सदस्यता 405/- — लक्ष्मी यंत्र एवं माला 405 + 45 (डाक खर्च) = 450

आनो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः
मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति प्रगति और भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक पत्रिका

आत्म-प्रकाश

|| ॐ परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः ||

धन-धान्य, सौभाग्य एवं ऐश्वर्य वृद्धि हेतु : तिब्बती लक्ष्मी साधना

भयमुक्त होकर सतत जीवन की प्रगति हेतु : शनि साधना

शत्रुओं पर पूर्णतः विजय प्राप्ति के लिए : बटूक भैरव साधना

सद्गुरुदेव

स्तम्भ

साधनाएँ

ENGLISH

विशेष

आयुर्वेद

स्तोत्र

योग

यात्रा

प्रेरक संस्थापक
डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली
(परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानंदजी)

आशीर्वाद
पूजनीया माताजी
(पू. भगवती देवी श्रीमाली)

सम्पादक
श्री अरविन्द श्रीमाली

सह-सम्पादक
राजेश कुमार गुप्ता

प्रकाशक, स्वामित्व एवं मुद्रक
श्री अरविन्द श्रीमाली
द्वारा
नारायण प्रिण्टर्स
नोएडा
से मुद्रित तथा
'नारायण मंत्र साधना विज्ञान'
कार्यालय :
हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर से
प्रकाशित

मूल्य (भारत में)
एक प्रति 40/-
वार्षिक 405/-

सम्पर्क
सिद्धाश्रम, 306 कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, दिल्ली-110034, फोन : 011-79675768, 011-79675769, 011-27354368
नारायण मंत्र साधना विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-342001 (राज.), फोन नं. : 0291-2433623, 2432010, 7960039
WWW address : http:/www.narayanmantrasadhanavigyan.org E-mail : nmsv@siddhashram.me

नियम

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं का अधिकार पत्रिका का है। इस *'नारायण मंत्र साधना विज्ञान'* पत्रिका में प्रकाशित लेखों से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। तर्क-कुतर्क करने वाले पाठक पत्रिका में प्रकाशित पूरी सामग्री को गल्प समझें। किसी नाम, स्थान या घटना का किसी से कोई सम्बन्ध नहीं है, यदि कोई घटना, नाम या तथ्य मिल जायें, तो उसे मात्र संयोग समझें। पत्रिका के लेखक घुमक्कड़ साधु-संत होते हैं, अतः उनके पते आदि के बारे में कुछ भी अन्य जानकारी देना सम्भव नहीं होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख या सामग्री के बारे में वाद-विवाद या तर्क मान्य नहीं होगा और न ही इसके लिए लेखक, प्रकाशक, मुद्रक या सम्पादक जिम्मेवार होंगे। किसी भी सम्पादक को किसी भी प्रकार का पारिश्रमिक नहीं दिया जाता। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद में जोधपुर न्यायालय ही मान्य होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी सामग्री को साधक या पाठक कहीं से भी प्राप्त कर सकते हैं। पत्रिका कार्यालय से मंगवाने पर हम अपनी तरफ से प्रामाणिक और सही सामग्री अथवा यंत्र भेजते हैं, पर फिर भी उसके बाद में, असली या नकली के बारे में अथवा प्रभाव होने या न होने के बारे में हमारी जिम्मेवारी नहीं होगी। पाठक अपने विश्वास पर ही ऐसी सामग्री पत्रिका कार्यालय से मंगवायें। सामग्री के मूल्य पर तर्क या वाद-विवाद मान्य नहीं होगा। पत्रिका का वार्षिक शुल्क वर्तमान में 405/- है, पर यदि किसी विशेष एवं अपरिहार्य कारणों से पत्रिका को त्रैमासिक या बंद करना पड़े, तो जितने भी अंक आपको प्राप्त हो चुके हैं, उसी में वार्षिक सदस्यता अथवा दो वर्ष, तीन वर्ष या पंचवर्षीय सदस्यता को पूर्ण समझें, इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति या आलोचना किसी भी रूप में स्वीकार नहीं होगी। पत्रिका के प्रकाशन अवधि तक ही आजीवन सदस्यता मान्य है। यदि किसी कारणवश पत्रिका का प्रकाशन बन्द करना पड़े तो आजीवन सदस्यता भी उसी दिन पूर्ण मानी जायेगी। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी साधना में सफलता-असफलता, हानि-लाभ की जिम्मेवारी साधक की स्वयं की होगी तथा साधक कोई भी ऐसी उपासना, जप या मंत्र प्रयोग न करें जो नैतिक, सामाजिक एवं कानूनी नियमों के विपरीत हों। पत्रिका में प्रकाशित लेख योगी या संन्यासियों के विचार मात्र होते हैं, उन पर भाषा का आवरण पत्रिका के कर्मचारियों की तरफ से होता है। पाठकों की मांग पर इस अंक में पत्रिका के पिछले लेखों का भी ज्यों का त्यों समावेश किया गया है, जिससे कि नवीन पाठक लाभ उठा सकें। साधक या लेखक अपने प्रामाणिक अनुभवों के आधार पर जो मंत्र, तंत्र या यंत्र (भले ही वे शास्त्रीय व्याख्या के इतर हों) बताते हैं, वे ही दे देते हैं, अतः इस सम्बन्ध में आलोचना करना व्यर्थ है। आवरण पृष्ठ पर या अन्दर जो भी फोटो प्रकाशित होते हैं, इस सम्बन्ध में सारी जिम्मेवारी फोटो भेजने वाले फोटोग्राफर अथवा आर्टिस्ट की होगी। दीक्षा प्राप्त करने का तात्पर्य यह नहीं है, कि साधक उससे सम्बन्धित लाभ तुरन्त प्राप्त कर सकें, यह तो धीमी और सतत् प्रक्रिया है, अतः पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ ही दीक्षा प्राप्त करें। इस सम्बन्ध में किसी प्रकार की कोई भी आपत्ति या आलोचना स्वीकार्य नहीं होगी। गुरुदेव या पत्रिका परिवार इस सम्बन्ध में किसी भी प्रकार की जिम्मेवारी वहन नहीं करेंगे।

प्रार्थना

ॐ महालक्ष्मी च विद्महे विष्णु पत्न्यां
च धीमहि तन्नो लक्ष्मी प्रचोदयात्।।

हे महालक्ष्मी! इस शुभ अवसर पर आप मेरे घर में स्थायी निवास करें, हे विष्णु पत्नी लक्ष्मी! आप विद्या, बुद्धि, बल एवं वैभव दें, जिससे हम सम्पन्न, सुखी एवं यशस्वी बन सकें

लगन हो तो मंजिल मिलती ही है

संस्कृत भाषा में पाणिनी के दुरूह व्याकरण को सुगम बनाकर जिस 'मुग्धबोध' नामक संस्कृत व्याकरण की रचना महापण्डित बोपदेव जी ने की, उनके गुरुकुल जीवन का एक प्रसंग है-

बोपदेव की स्मरण शक्ति बहुत क्षीण थी, काफी प्रयास के बावजूद भी व्याकरण के सूत्र उन्हें कण्ठस्थ नहीं हो पाते थे। उनके सहपाठी भी उन्हें चिढाते थे। इन सबसे दु:खी होकर बोपदेव एक दिन गुरु गृह से भाग खड़े हुए। चलते-चलते मार्ग में उन्हें एक कुंआ दिखाई दिया, उप्रर से वह पत्थर का बना था। कुंए से निकट गांव के लोग आकर जल भरते थे। रस्सी की सहायता से घड़े को कुंए में लटका कर गांव के लोग जल निकालते थे। फिर रस्सी को समेटकर कुंए के पत्थर पर दो क्षण के लिये घड़े को रखते, फिर सिर पर रखकर गांव को चले जाते।

बोपदेव ने देखा, कि रस्सी के स्पर्श से कुंए के मुंह पर कई जगह गड्ढे पड़ गये हैं, और जिस पत्थर पर वे घड़ा रखते, वहां भी गड्ढा बन गया है। बोपदेव ने मन ही मन सोचा-'जब मुलायम रस्सी और मिट्टी के घड़े की बार-बार रगड़ लगने से पत्थर में गड्ढा बन सकता है, तो निरन्तर और दृढ़ अभ्यास से क्या मैं विद्वान नहीं बन सकता हूं।'

बोपदेव तुरन्त वापस गुरुगृह की ओर लौट पड़े , वे आश्रम में दुगुने उत्साहके साथ जुट गये और सच्ची लगन व सतत अभ्यास के कारण आगे चलकर सुप्रसिद्ध विद्वान बन कर राज दरबार के महापण्डित बने।

जब रस्सी व मिट्टी के बने घड़े के स्पर्श से पत्थर में गड्ढे बन सकते हैं, तो बार-बार प्रयास से किसी कार्य में, संकल्प में सफलता क्यों नहीं मिल सकती। लगन हो, विश्वास हो, धैर्य हो, हिम्मत हो तो जीवन के प्रत्येक संघर्ष में सफलता मिल कर ही रहती है।
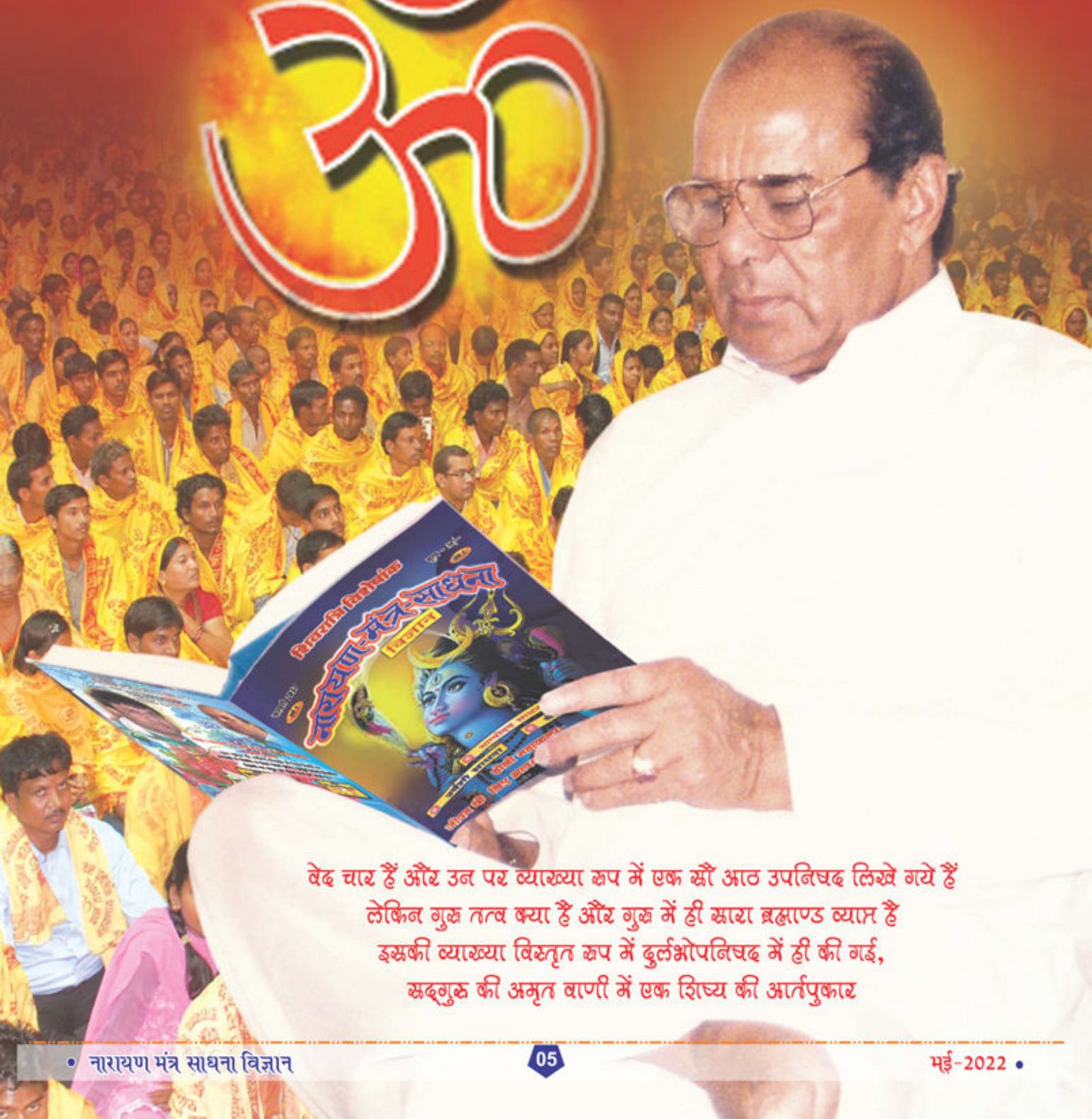
वेद चार हैं और उन पर व्याख्या रूप में एक सौ आठ उपनिषद लिखे गये हैं
लेकिन गुरु तत्व क्या है और गुरु में ही सारा ब्रह्माण्ड व्याप्त है
इसकी व्याख्या विस्तृत रूप में दुर्लभोपनिषद में ही की गई,
सद्गुरु की अमृत वाणी में एक शिष्य की आर्तपुकार

दुर्लभोपनिषद समस्त उपनिषदों में
अद्धितीय और श्रेष्ठ है।
ऋषियों ने इस बात को
स्वीकार किया है कि
जहां दुर्लभोपनिषद की चर्चा
होती है वहां पवित्रता का वातावरण बन जाता है।

जहां दुर्लभोपनिषद के श्लोकों का उच्चारण होता है वहां जीवन में आनन्द, प्रसन्नता, आहलाद और खुशी छलकने लग जाती है। जो दुर्लभोपनिषद के पदों को गेय अवस्था में गाता है, सुनता है, मनन करता है, चिन्तन करता है वह स्वत: साधक बन जाता है, समस्त सिद्धियां स्वत: उसके सामने उपस्थित हो जाती हैं। उसको साधना करने की विशेष आवश्यकता नहीं होती क्योंकि ये श्लोक अपने आप में दिव्य और चैतन्य हैं इन श्लोकों की रचना ही इस प्रकार हुई है कि सुनने वाले की चेतना पर, देह पर, आत्मा पर प्रहार करती है और उसके सारे शरीर को साधनामय बना देती है।

इसलिए शास्त्रकारों ने कहा है कि वास्तव में ही वे बहुत सौभाग्यशाली व्यक्ति होते हैं जिनके घर में दुर्लभोपनिषद होता है, वास्तव में ही पुण्योदय होते हैं, जब दुर्लभोपनिषद की चर्चा करते हैं। वास्तव में पूर्वजों का पुण्य जीवन में अवतरित होता है जब दुर्लभोपनिषद के शब्दों को व्यक्ति उच्चारित करता है और वास्तव में जब उसका अच्छा समय, उसका सौभाग्य प्रारम्भ होता है तब व्यक्ति के जीवन में ये श्लोक उच्चारित होते हैं और वह उन्हें सुनता है। दुलभोपनिषद के प्रारम्भ में ऋषि ने आत्म वाक्य में स्पष्ट किया हैकि साधना और सिद्धियां तो स्वत: प्राप्त हो जाती हैं। साधनाओं को करने के लिए कोई विशेष प्रयत्न की आवश्यकता नहीं है यदि व्यक्ति ने दुर्लभोपनिषद को पढ़ा है, उच्चारित किया हो या श्रवण किया हो और जो निरन्तर 108 दिनों तक दुर्लभोपनिषद की चर्चा करता है या सुनता है उसको प्रत्येक प्रकार की सिद्धि अपने आप प्राप्त हो जाती है वह चाहे महाकाली साधना हो या महालक्ष्मी हो, भैरव हो, यक्ष हो, गंधर्व हो या किसी प्रकार की साधना हो या सिद्धि हो।

वास्तव में यह एक अद्धितीय और दुर्लभ उपनिषद है जिसको मैं स्पष्ट कर रहा हूं। इसके कुछ महत्वपूर्ण श्लोकों को आपके सामने रख रहा हूं।

दुर्लभोपनिषद आपके घर में हो यह सौभाग्य की बात है। मगर दुर्लभोपनिषद के प्रारम्भ में कहा गया है कि गुरू मुख से उच्चारित दुर्लभोपनिषद ही घर में हो, क्योंकि गुरू ने बोला और आपके घर में गुंजरित हुआ तो सीधा संबंध गुरू से बना। इसका तात्पर्य है कि गुरू स्वयं आपके घर में अवतरित हुए आपके घर में आए। आपने उनकी वाणी से इसके श्लोकों को सुना यह जीवन का सौभाग्य है। यही जीवन की श्रेष्ठता कही जाती है।

और मेरे जीवन का यह अनुभव रहा है कि दुर्लभोपनिषद सुनने से, सुनने मात्र से आधी से ज्यादा सिद्धियां स्वतः प्राप्त हो जाती हैं। इसलिए प्रत्येक व्रत, साधना, पूजन, अर्चना से पहले इसके श्लोकों को अवश्य सुनना चाहिए, उच्चारित करना चाहिए और पूरे वातावरण को पवित्र और दिव्य बनाना चाहिए क्योंकि दुर्लभोपनिषद की चर्चा होने से या उच्चारण

होने से समस्त देवता घर में आते ही हैं। समस्त ऋषि घर में पदार्पण करते हैं, उन ऋषियों का आशीर्वाद प्राप्त होता है, उन देवताओं का आशीर्वाद प्राप्त होता है।

जहां दुर्लभोपनिषद है वहां समस्त देवता हैं, समस्त सिद्धियां हैं, पूर्णता है, श्रेष्ठता है। इसलिए यह उपनिषद अपने आप में गोपनीय रहा, इसलिए यह कम लोगों को ज्ञात हो सका। वशिष्ठ ने स्वयं कहा कि दुर्लभोपनिषद जैसा ग्रंथ और श्लोक तो अपने आप में बन ही नहीं सकते। विश्वामित्र ने कहा कि मेरी समस्त साधनाओं का सार दुर्लभोपनिषद है। शंकराचार्य ने कहा कि मैं जो कुछ हूँ, उसका आधार दुर्लभोपनिषद हैं।

इसका तात्पर्य है कि दुर्लभोपनिषद वास्तव में ही अद्‌भुत कृति है। किसी एक ऋषि ने दुर्लभोपनिषद के श्लोकों की रचना नहीं की। समस्त ऋषियों के शरीर से निकले तेज पुंज ने एक आकार ग्रहण किया, एक ब्रह्मत्व ग्रहण किया और उसके मुख से उन श्लोकों को उच्चारण हुआ।

जिस प्रकार से समस्त देवताओं के शरीर से जो तेज पुंज निकला वह भगवती जगदम्बा बनी, ठीक उसी प्रकार से ऋषियों और गुरूओं के शरीर से जो तेज पुंज के माध्यम से ब्रह्म तत्व प्रकट हुआ और उसके मुख से ये श्लोक उच्चारित हुए। इसलिए दुर्लभोपनिषद की महिमा अपने आप में अद्वितीय है।

दुर्लभोपनिषद अपने आप में गुरू चितंन है, गुरू मनन है। जहां गुरू शब्द का उच्चारण करते हैं वहाँ समस्त तीर्थों के नाम का उच्चारण करते हैं। जहां गुरू शब्द उच्चारित होता है वहाँ समस्त देवताओं का उच्चारण होता है। जहां गुरू बोला वहाँ ब्रह्मा, विष्णु और महेश स्वयं अवतरित होते ही हैं क्योंकि गुरू शब्द अपने आप में इतना नगण्य, ओछा और तुच्छ शब्द नहीं है, यदि हम इसकी गरिमा समझें इसकी महत्ता समझे, यदि इसका मूल्य आंके तो यह शब्द दिव्य, पवित्र और उच्च कोटि का है।

दुर्लभोपनिषद में गुरू से संबंधित उन पदों की कल्पना की गई है जो पद अपने आप में अद्वितीय है। कुछ पद इस प्रकार के होते हैं कि उनके उच्चारण मात्र से देवता प्रकट हो जाते हैं। ये श्लोक ऐसे ही हैं कि इनके उच्चारण मात्र से देवता प्रकट होते ही हैं, दृश्य रूप में अदृश्य रूप में। समस्त ऋषि, यक्ष, गंधर्व उसके सामने खड़े होते हैं हाथ बांधकर, क्योंकि वहां पर दुर्लभोपनिषद का उच्चारण होता है या सुना जाता है। जहाँ ऐसा होता है उसके समान तो देवताओं का स्वर्ग भी नहीं होता, इन्द्र की पुरी भी उसके सामने नगण्य और तुच्छ मानी जाती है क्योंकि वहां पर गुरू चर्चा होती है, गुरू का चिंतन होता है, गुरू के हृदय की भाव भूमि स्पष्ट होती है और हम उन तत्वों को रचनाओं को स्पष्ट करते हैं जिनके माध्यम से गुरू पद विन्यास को समझ सके, गुरू के चिंतन को समझ सके।

क्योंकि यह ग्रंथ समस्त ऋषियों और देवताओं के शरीर के तपोपुंज का समग्र स्वरूप है इसलिए यह दुर्लभोपनिषद इतना सामान्य नहीं हैं यह किसी मनुष्य या देवता या एक ऋषि का बनाया हुआ नहीं है, यह तो अपने आप में एक अद्वितीय चिंतन है, अद्वितीय भाव भूमि है।

मैं पहली बार उन दिव्य श्लोकों का उच्चारण कर रहा हूँ जिससे कि आपका जीवन पवित्र हो सके , आप सही अर्थों में साधक बन सकें, पूर्णता प्राप्त कर सकें, आपके घर में पवित्रता का वातावरण बन सके, सुख सौभाग्य आ सके। आपके जीवन की दरिद्रता मिट सके, कष्ट और अभाव दूर हो सकें, आपके परिवार में एक श्रेष्ठ वातावरण बन सके और देवताओं का निवास बन सके समस्त ऋषि आकर आपको आशीर्वाद दे सके और आपके घर में दुःख, संताप, चिन्ताएं

दूर हो सकें, आप जीवन में वह सब प्राप्त कर सकें जो आपके जीवन का लक्ष्य है जो आपके जीवन का ध्येय है, जीवन का उद्देश्य है।

और आप जब इन श्लोकों को सुनें या पढ़ें या उच्चारण करें तब अत्यन्त पवित्र भाव मन में ला करके अपने सामने प्रत्यक्ष या चित्र में गुरू के दर्शन करके, उनकी पूजा अर्चना करके, उनके प्रति प्रणम्य हो करके, साष्टांग प्रणाम करके, अपने आपको गुरू के हृदय से जोड़ करके इन श्लोकों को सुने या उच्चारण करें। इन समस्त वातावरण में इन श्लोकों का गुंजरण करें, आपकी पत्नी, पुत्र, पुत्रियों एवं घर के सदस्यों के साथ सुनें जिससे उनका जीवन भौतिकता से कट करके पवित्र दिव्य, चेतनावान, सुसंस्कारित बन सके। बच्चों में अच्छे संस्कार आ सकें, बड़ों के प्रति आदर सत्कार उनके हृदय में आ सके। उनके घर में देवता खेल सकें, गणपति, शिव, ब्रह्मा, विष्णु, इन्द्र, मरूदगण सभी उनके घर में स्थायी निवास कर सके और अटूट लक्ष्मी का निवास उनके घर में हो सके।

इसलिए तो इसको जीवन का श्रेष्ठतम उपनिषद माना गया है। इसीलिए तो महा ऋषियों ने एक स्वर में स्वीकार किया है कि यह मनुष्यों के द्वारा उच्चारित उपनिषद नहीं है यह तो समस्त योगियों का तपोपुंज स्वरूप हैं उन्हीं श्लोकों को मैं उच्चारित कर रहा हूँ।

गुरूर्वै सदां पूर्ण मदैव तुल्यं
प्राणो वद्धार्यै वह्रितं सदैव
चित्यं विचिन्त्य भवयेक रूपं
गुरूर्वै शरण्यं गुरूर्वै शरण्यं

मैं इस जीवन में क्यों आया हूँ, मेरे जीवन की डोर कहां बंधी हुई है, ईश्वर ने मेरा जन्म क्यों किया है, मैं इस पृथ्वी तल पर क्यों हूँ, मेरे जीवन का उद्देश्य, लक्ष्य क्या है, इसको तो गुरूदेव केवल आप ही समझा सकते हैं। इसको तो कोई और समझा नहीं सकता और सब तो जीवन के स्वार्थमय बंधन हैं, जिनसे मैं जकड़ा हुआ हूँ, उन पाशों से मैं बंधा हुआ छटपटा रहा हूँ, बंधन ग्रस्त हो रहा हूँ, अपने आप में दुःखी और संतप्त हो रहा हूँ, प्रत्येक पल अपने आप में व्यथित होता हुआ, निरन्तर मृत्यु की ओर अग्रसर हो रहा हूँ। मेरे जीवन में सुख नहीं है, मेरे जीवन में कोई चिन्तन नहीं है, मेरे जीवन में सौभाग्य नहीं है, मैं समझ नहीं पा रहा हूँ कि आखिर मेरे जीवन का लक्ष्य क्या है? और मेरे जीवन का लक्ष्य केवल अपने जीवन को समझना है।

और इस जीवन को समझाने के लिए, यर्थाथता से परिचित कराने के लिए संसार में कोई शक्ति है, स्वरूप है तो केवल आप हैं गुरूदेव।

इसलिए मैं अत्यन्त भीगे नयनों से गदगद कंठ से, भाव विह्वल वक्ष स्थल से, आपको दण्डवत प्रणाम करता हुआ, आपके चरणों में अपने सिर को रखता हुआ प्रार्थना करता हूँ कि आप उस मर्म को, रहस्य को, चिन्तन को समझाएं जो मेरे जीवन का उद्देश्य है, जो मेरे जीवन का लक्ष्य है और पूर्णता है क्योंकि मैं तो केवल आपका हूँ आपकी शरण में हूँ।

गुरूवै प्रपन्ना महितं वदैवं
अर्त्योवतां वै प्रहितं सदैव
देवो त्वमेव भवतं सहिचिंत्य रूपं

गुरूर्वै शरण्यं गुरूर्वै शरण्यं

लोग कह रहे हैं कि मैं देवताओं की आराधना करूं, कौन से देवता की आराधना करूं? हजारों लाखों देवता हैं। मैं किन-किन के सामने गिड़गिडाऊ, किन किन की चौखट पर अपने सिर को फोड़ूं, कहां-कहां जाकर मैं याचना करूं, मैं दरिद्री भिखारी होकर किन-किन देवताओं के आगे भीख मांगता फिरूं। और वे मुझे दे भी क्या सकेंगे? वे सब तो स्वयं आपके सामने हाथ बांधे खड़े हैं और जो देवता भी आपके समाने हाथ बांधे खड़े हैं, वे देवता भी आपसे बहुत कुछ प्राप्त करने की आकांक्षा रखते हैं। तो फिर मैं उन भिखारियों के पास क्या जाऊँ, मैं आपके पास सीधा आना चाहता हूँ, मैं आपके चरणों में बैठना चाहता हूँ, मैं आपके सामने उन सिद्धियों को प्राप्त करना चाहता हूँ, जो आपसे प्राप्त हो सकती हैं। यदि आप देवताओं को दे पाने में समर्थ हैं तो निश्चय ही आप हमें भी दे पाने में समर्थ हैं, मुझे भी दे पाने में समर्थ हैं।

मैं देवताओं से परिचित नहीं हूँ और न ही देवता मुझसे परिचित हैं, मैंने देवताओं को देखा नहीं है। मैंने केवल चित्रों के माध्यम से देवताओं के अंकन को देखा है। हो सकता है कि वह चित्र सही हो, हो सकता है कि वह चित्र गलत हो। कोई जरूरी नहीं है कि जैसे चित्र में मैंने देवताओं को देखा है ब्रह्मा को देखा है, विष्णु को देखा है ठीक उसी रूप में वे देवता हों, मैं नहीं समझता।

यह तो चित्रकार की एक भावना है जो उसने कपड़े पर चित्र में उतारी है। उस चित्रकार ने उस देवता को देखा नहीं, केवल कल्पना के माध्मम से उनके स्वरूप बिम्ब को उस कपड़े पर उतारा है इसीलिए कपड़े पर जो देवता का चित्र है, जो मूर्ति है वह सब अपने आप में अधूरा है।

मैं देवताओं से परिचित नहीं हूँ, परन्तु गुरूदेव मैं आपसे परिचित हूँ, मैंने आपको देखा है, मैंने आपके सारे शरीर को स्पर्श किया है, मैं आपके चरणों में बैठा हूँ, आपकी आँखें, आपकी नाक, कान, हाथ, पाँव, वक्ष स्थल और गर्वोन्नत भाल इन सबको मैंने अपनी आँखों के माध्यम से अपने ह्रदय में उतारा है इसलिए मैं आपसे परिचित हूँ।

आपसे परिचित हूँ और आप तो दानी हैं, आप तो श्रेष्ठ हैं, ज्ञानी हैं, चेतना पुंज है, आप बहुत कुछ देने में समर्थ हैं समस्त ब्रह्माण्ड को जो देने में समर्थ है तो मुझ जैसे अकिंचन व्यक्ति को कुछ दे पाना आपके लिए असंभव है ही नहीं, अत्यन्त सरल और सामान्य सी बात है। इसलिए मैं तो आपमें ही समस्त देवताओं को देख रहा हूँ। मैं तो देख रहा हूँ कि ब्रह्मा, विष्णु और रूद्र समस्त आपके शरीर में समाहित हैं।

जहां जहाँ भी जिस रोम में भी मेरी दृष्टि पड़ती है वहां एक नवीन देवता के मुझे दर्शन होते हैं। और ये सारे देवताओं के समूह को जब में अपने सामने देखता हूँ तो भाव विहवल हो जाता हूँ, गद-गद हो जाता हूँ। अपने आप में मैं रह नहीं पाता हूँ, इसीलिए आप मुझे देवताओं की आराधना करने के लिए मत कहिए। मैं देवताओं की आराधना चाहता भी नहीं हूँ।

मेरे सामने तो प्रत्यक्ष देवता हैं, सशरीर देवता हैं, चैतन्य पुंज देवता हैं फिर इन जीवित जागृत देवताओं को छोड़ करके उन पाषाण मूर्तियों को पूजने से क्या होगा। मैं तो गुरूदेव केवल मात्र आपकी शरण में हूँ।

सतंवै सदानं देहाल्योवैप्रातोभविवै
सहितं न दीर्घये
पूर्णतं परांपूर्ण मदैव रूपं

गुरूर्वै शरण्यं गुरूर्वै शरण्यं।

मैं काशी और कांची, हरिद्वार और मथुरा तीर्थ स्थलों पर जाकर भी क्या करूंगा। उस गंगा में भी बार-बार डूबकी लगाने से क्या हो जाएगा? अगर गंगा में डुबकी लगाने से पवित्र और दिव्य बन जाता तो सारी मछलियां और मेंढक अपने आपमें पवित्र और दिव्य हैं। यदि काशी में रहने से ही जीवन की पूर्णता प्राप्त हो जाती है तो वहां श्वान और खर बहुत घूमते हैं, वे सभी अपने आप में पवित्र ओर दिव्य आत्मा बन जाते। वहां जाने से कुछ नहीं हो सकता, वहां कुछ सम्भव है ही नहीं। उन देवालयों में तो एक पत्थर की मूर्ति है, जो बोल नहीं सकती, जो मेरी बात सुन भी नहीं पाती, उन पत्थरों से कुछ कहना अपने सिर को फोड़ने के बराबर है क्योंकि वे मेरी बात सुन नहीं पाती। मैं अपनी बात उन तक नहीं पहुंचा सकता क्योंकि पत्थरों को कहने से कोई लाभ नहीं होता है। मेरे लिए हरिद्वार और काशी, मथुरा और कांची अपने आप में नगण्य हैं। मैं तो आपको और आपकी देह को पूर्ण रूप से देवालय मानता हूँ। पूरा मंदिर है यह जो मेरे सामने है।

और आपकी देह मंदिर के रूप में है, जो जीवित और जागृत मंदिर है, चैतन्य मंदिर है, चलता फिरता मंदिर है, बोलता हुआ मंदिर है, अपने आप में आशीर्वाद देता हुआ मंदिर है। आपके दोनों पैर इस देवालय के स्तम्भ हैं। अच्छे स्तम्भों पर यह मंदिर टिका है। इस मन्दिर में जो मूर्ति स्थापित है आपके प्राणों की, आपके हृदय की आपकी चेतना की आपका हृदय स्थल अपने आप में एक गर्भ गृह है उस गर्भ गृह में जाकर जब मैं खड़ा होता हूँ तो मेरा सारा शरीर भाव विह्वल हो जाता है। चेतना युक्त हो जाताहै, एक-एक रोम चैतन्य होकर पुकारने लग जाता है और उनमें से गुरूदेव के अलावा कोई शब्द निकलता ही नहीं।

मेरी आँखों से आंसू की धारा बहने लग जाती है, मेरा सारा शरीर थरथराने लग जाता है जब मैं उस जीवित जाग्रत मूर्ति को देखता हूँ। और इस गर्भ ग्रह में जो मूर्ति है, प्राण हैं, जो हृदय है वो अपने आप में इतना स्पंदनशील है, इतना आह्लादकारक है कि उसको देख करके मेरे सारे शरीर में चैतन्यता व्याप्त हो जाती है, सारे शरीर में ओजस्विता आ जाती है। ऐसा लगता है कि मेरा सारा शरीर प्रसन्नता के आवेग में उछलने लग गया है।

और इस गर्भ गृह के ऊपर जहां मूल मूर्ति स्थापित है, जहां आपका हृदय है, इसके ऊपर सिर के रूप में शिखर है जैसा मंदिरों के ऊपर शिखर होता है उस शिखर को देखकर के ऊँचाई का भाव होता है, हिमालय का भाव होता है। आपका गर्वोन्नत सिर, आपका दैदीप्यमान सिर, ललाट, भाल, आँखें, आपका मुंह आपकी जिह्वा और आपका सारा शरीर अपने आप में उस मंदिर की भाँति है जिसको देखते ही पवित्रता का बोध होता है।

ऐसा लगता है कि आपको देखने से मानो हजार-हजार तीर्थोंमें स्नान कर लिया हो, सातों समुद्रों में स्नान कर लिया हो, ऐसा लगता है कि कोई गंगा आकर मुझे स्नान कराकर चली गई है और जहां पर आपके नेत्रों की कृपा दृष्टि होती है, जहाँ नेत्रों से आनन्द की वर्षा होती है, वह तो वही समझ सकता है जो आपके पास खड़ा हो करके उस कृपा दृष्टि से भीगा है, उस आनन्द से भीगा है, आपके नेत्रों से निकलती दिव्यता को अनुभव किया है, उससे धन्यतो कोई हो ही नहीं सकता। उसके समान तो कोई व्यक्ति हो ही नहीं सकता।

वह तो एक अद्वितीय चिंतन है, अद्वितीय धारणा है। मैं इस शिखर युक्त, गर्भगृह युक्त, स्तम्भ युक्त, चलते फिरते मंदिर को छोड़कर और किस मंदिर में जाऊं। विश्वनाथ का मंदिर, मथुरा का मन्दिर, कृष्ण राम का मंदिर या अन्य मंदिर मेरे लिए फिर कैसे उपयोगी हैं? उन मंदिरों से मुझे फिर क्या मिलने वाला है? यदि मैं इस मंदिर को ही नहीं समझ सका, इस मंदिर की पूजा नहीं कर सका, इस मंदिर को स्वच्छ और दिव्य नहीं रख सका, इस मंदिर में सेवा नहीं कर सकता तो

फिर मेरा सब कुछ जानना व्यर्थ है क्योंकि इस मंदिर में तो समस्त देवता निवास करते हैं। इस मन्दिर को देखने के लिए तो देवता तरसते हैं, इस मंदिर को स्पर्श करने केलिए देवता भी तरसते हैं।

गुरूदेव मुझे किसी मानसरोवर, किसी गंगा, किसी हरिद्वार, किसी समुद्र के पास जाने की आज्ञा मत दीजिए। मुझे उनसे कोई मोह नहीं हैं। वे तो केवल एक पानी के बहाव हैं। वे तो मछलियों के सागर हैं, खारे समुद्र हैं, झील है, निर्जीव, जो बोल नहीं सकते। मुझे ऐसे तीर्थों में जाने से न कोई प्रयोजन है न आवश्यकता है क्योंकि जहां समस्त तीर्थों का स्नान मैं आपके नेत्रों से निकलती हुई कृपा से कर सकता हूँ, फिर इससे ज्यादा सौभाग्य तो कुछ हो नहीं सकता।

वास्तव में ही में सौभाग्यशाली हूँ, वास्तव में ही मैंने जीवन के पुण्य किए होंगे जो मैं आपके सामने खड़ा हूँ। वास्तव में ही मेरे पुण्यों का उदय हुआ होगा कि आप सजीव रूप में मेरे सामने हैं, इस पीढ़ी में इस युग में मैं आपके सामने हूँ। वास्तव में ही आपके नेत्रों की वर्षा से मैं आप्लावित हूँ, वास्तव में ही आपके नेत्रों से निकली आनन्द की वर्षा में भीगता हुआ मैं नाच रहा हूँ, छलछला रहा हूँ, कूद रहा हूँ, क्योंकि पूज्य गुरूदेव मैं केवल आपकी शरण में हूँ।

अदोयं बदेवं चिन्त्यं सहेतं
पूर्वोतरूपं चरणं सदेयं
आत्मोसतां पूर्ण मदेव चिन्त्यं
गुरूर्वै शरण्यं, गुरूर्वै शरण्यं।

वह तो मूर्ख और मूढ़ होगा जो आपके चरण छोड़कर इधर-उधर भटकता होगा। उसके पाप ही उसके बीच में आते होंगे जो आपकी दृष्टि से ओझल होता होगा। उसके जीवन का दुर्भाग्य होगा कि वह आपसे दूर खड़ा होकर भी सांस ले रहा होगा। आपसे दूर रह कर सांस लेने की कल्पना भी अपने आप में आश्चर्यजनक है। जिस प्रकार से समुद्र से निकलने पर मछली तड़प कर मर जाती है उस प्रकार से आप से अलग होकर मर क्यों नहीं जातें तड़प कर समाप्त क्यों नहीं हो जाते, जिन्दा रहने का महत्व क्या है, अधिकार क्या है?

जिस प्रकार बिना चांद को देखे चकोर अपना सिर फोड़कर समाप्त हो जाता है, उसी प्रकार हम अपना सिर फोड़कर समाप्त क्यों नहीं हो जाते। आपका वियोग हम कैसे सहन कर सकते हैं। यह कैसे संभव है कि आप दूर हों ओर हमारे प्राण हमारे शरीर में टिके रह सकें, ऐसे प्राण की जरूरत भी नहीं हैं। प्राण तो व्यर्थ हैं, तुच्छ हैं, ऐसा लग रहा है, जैसे मुर्दा शरीर में धड़क रहे हों ।

मुझे ऐसा शरीर नहीं चाहिए गुरूदेव। मुझे ऐसे प्राण, ऐसी धड़कन भी नहीं चाहिए। उस धड़कन का महत्व और मूल्य भी क्या है जो आपके बिना धड़क कर रह जाती हो। आप हैं तो जीवन है, संसार है, खुशियां हैं, प्रसन्नता है, आह्लाद है और दिव्यता है।

आप नहीं हैं और मैं जीवित रहूं यह मेरे जीवन का दुर्भाग्य है, मेरे जीवन की न्यूनता है। यह मेरे जीवन का अभाव है, वास्तव में मैंने कोई पाप किए होंगे जो मैं आपके वियोग को सहन करके भी जीवित हूँ। वास्तव में ही मेरे जीवन का दुर्भाग्य है कि आप नहीं हैं और मैं सांस ले रहा हूँ, वास्तव में ही मेरे जीवन की न्यूनता है कि बिना आपके भी मैं सांस ले रहा हूँ, खाना खा रहा हूँ, पानी पी रहा हूँ और चल रहा हूँ। मैं मर क्यों नहीं जाता, मुझे समझ नहीं आ रहा कि मृत्यु मुझे दबोच क्यों नहीं देती, समाप्त क्यों नहीं कर देती क्योंकि मरने के बाद कम से कम मैं आपके चरणों से लिपट कर तो रहूंगा। मैं आपमें अपने को लीन तो कर सकूंगा, क्योंकि जहां पर भी मेरी मृत्यु हो मेरे देह की राख उड़ कर आपके चरणों में गिरे

और उस राख पर आपके पांव पडें। इससे बड़ा सौभाग्य मेरे जीवन का क्या हो सकता है? मैं ऐसी देह नहीं चाहता, मैं ऐसा हृदय नहीं चाहता, मैं ऐसे प्राणों को नहीं चाहता जो आपकी अनुस्थिति में जीवित जाग्रत हो सके। ऐसे जीवन से कोई मतलब नहीं है।

मैं तो आपके पास रहना चाहता हूँ,। चकोर जिस प्रकार चांद को देखता रहता है उसी प्रकार मैं हरदम आपको देखते रहना चाहता हूँ। मैं तो हर क्षण पपीहे की तरह गुरू गुरू शब्द का उच्चारण करना चाहता हूँ। हर क्षण आप मेरी कल्पना में बने रहें। हर क्षण मेरी प्रत्येक धड़कन के साथ गुरू शब्द का उच्चारण हों मेरा प्रत्येक शब्द गुरूमय हो, प्रत्येक चिन्तन गुरूमय हो मेरा रोम-रोम आवाज दे सके गुरू गुरू और इसके अलावा और किसी शब्द का मुझे ज्ञान नहीं हो। न मुझे काली मंत्र की जरूरत है न लक्ष्मी मंत्र की। किसी मंत्र की मुझे आवश्यकता नहीं है क्योंकि जो मंत्रों में श्रेष्ठ और अद्वितीय यदि गुरू मंत्र मेरे पास है तो उससे श्रेष्ठ मंत्र और क्या हो सकता है?

जहाँ गुरू मंत्र है वहाँ सब कुछ जीवन की श्रेष्ठता है और इसीलिए मैं चाहता हूँ कि जो जीवनके क्षण मुझे प्रभु ने दिए हैं वे सारे क्षण आपके साथ व्यतीत हों, आपके लिए व्यतीत हों, मेरा शरीर आपके काम आ सके, मैं आपके चरणों से लिपट सकूं, मैं आपकी सुगंध से आप्लावित हो सकूं, मैं चकोर की तरह टकटकी लगाकर बराबर आपको देखता रहूं।

यदि आपसे विरह होना ही पड़े, अलग होना ही पड़े तो मछली की तरह तड़प कर मर जाऊं मृत्मु मुझे प्राप्त हो जाए ऐसा चाहता हूँ। मैं तो ऐसा आपसे आशीर्वाद चाहता हूँ कि एक क्षण भी जुदाई सहन नहीं कर सकूं,मेरी आँखों से आंसू प्रवाहित हो और प्रत्येक आंसू में आपका बिम्ब हो, आपका चित्र हो, प्रत्येक आंसू पर आपका नाम लिखा हो। मेरे हृदय की धड़कन में आपका नाम उच्चारित होता हो और प्रत्येक धड़कन में गुरू मंत्र का उच्चारण हो, मैं जीवन की प्रत्येक स्थिति में ऐसा चाहता हूँ।

यदि ऐसी स्थिति मुझे प्राप्त है तो मेरा जीवन धन्य है, तो मेरा जीवन पवित्र है, यदि ऐसा नहीं है तो मेरे जैसा पापी, अधर्मी कोई नहीं हो सकता।

आप मुझे आशीर्वाद दें तो ऐसा आशीर्वाद दें, आप मुझ पर कृपा करें तो ऐसी कृपा करें कि मैं हर क्षण आपके पास रह सकूं, आपकी वाणी को सुन सकूं, आपके शब्दों को अपने हृदय में उतार सकूं, मैं एकटक आपको ही देखता रहना चाहता हूँ। मैं आपमें समाहित हो जाना चाहता हूँ, लीन हो जाना चाहता हूँ क्योंकि गुरूदेव मैं आपकी शरण में हूँ।

चैतन्य रूपं अपरं सदैव
प्राणोद वेवं चरणं सदैव
सतीर्थो सदैव भवतं वदैव
गुरूर्वै शरण्यं गुरूर्वै शरण्यं

लोगों ने अनुभव किया हो या नहीं किया हो मगर मैं तो आपके शरीर का एक हिस्सा हूँ। मैंने अनुभव किया है कि आप हिमालय से भी महान गर्वयुक्त ओर सागर से भी अधिक विशाल हैं। सागर भी आपके सामने बहुत तुच्छ है, नगण्य है। हिमालय बहुत बौना है, आपका गर्वोन्नत भाल हिमालय से भी बहुत ऊंचाई की ओर उठा हुआ है और जब मैं अपना सिर उठाकर ऊपर की ओर देखता हूँ तो मेरी आंखें चौधियां जाती हैं।

मैं समझ नहीं पाता हूँ कि इतने अद्वितीय और उन्नत गर्वोन्नत भाल को अपनी आँखों के माध्यम से मैं कैसे समाहित कर सकूंगा। मैं जब आपके वक्षस्थल को देखता हूँ तो ऐसा लगता है जैसे पूरा समुद्र हिलोरें मार रहा हो, उस वक्षस्थल में अपने सिर को छिपा लेना चाहता हूँ, उसमें लीन हो जाना चाहता हूँ। आप मुझे अपने बाहों के घेरे में भीच लें,

इतना भीच लें कि मैं आपके सीने में आपके हृदय में प्रवेश कर लूं, उसमें समाहित हो जाऊं, उसमें एकाकार हो जाऊँ, जहाँ मुझे सुख मिल सकेगा, सौभाग्य मिल सकेगा, तृप्ति मिल सकेगी, पूर्णता प्राप्त हो सकेगी।

और जब मैं आपके सम्पूर्ण शरीर को देखता हूँ तो मेरे सामने सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड साकार हो जाता है और शरीर को जब मैं भाव विह्वल होकर देखता हूँ, तो कहीं मुझे ब्रह्म लोक दिखाई देता है, कहीं विष्णु लोक दिखाई देता है, कहीं इन्द्र लोक दिखाई देता है। इन्द्र गन्धर्व, यक्ष, किन्नर और उन समस्त देवताओं के आकार मुझे दिखाई देते हैं। चन्द्र लोक और सूर्य लोक मुझे स्पष्ट रूप से प्रतिबिम्बित होते हैं।

ऐसा लगता है जैसे सारा ब्रह्माण्ड मेरे सामने साकार हुआ हो। फिर मैं कौन सी साधना करूं, उस ब्रह्माण्ड साधना करने से मुझे क्या लाभ होगा, ब्रह्माण्ड साधना करके तो मैं एक-एक करके उन लोकों को देख पाऊंगा, यहां तो मै समस्त ब्रह्माण्ड को साकार देख पाता हूँ। जब मैं आपके सिर को देखता हूँ तो एक अलग ब्रह्माण्ड दिखाई देता है जब मैं आपके नेत्रों को देखता हूँ तो सूर्य लोक और चन्द्र लोक स्पष्ट दिखाई देते हैं। जब मैं आपके मुस्कुराते हुए चेहरे को देखता हूँ तो ऐसा लगता है जैसे सारा ब्रह्माण्ड मुस्कुरा रहा हो, खिलखिला रहा हो और इस पूरे ब्रह्माण्ड को जब मैं अपने सामने देखता हूँ मैं तो अपने आपको बहुत छोटा और नगण्य अनुभव करता हूँ, ऐसा लगता है कि इस ब्रह्माण्ड में मेरा अस्तित्व कहां है, ऋषि हैं, योगी हैं, गंधर्व हैं, किन्नर हैं, ब्रह्मा है, विष्णु हैं, महेश हैं, गर्ग, अत्रि, कणाद आदि ऋषि हैं। इन सब ऋषियों और देवताओं के बीच मेरा अस्तित्व कहां है। मैं तो बहुत छोटे से कण की तरह दिखाई देता हूँ।

उसके बावजूद भी आपने इस कण को अपनाया, इससे बड़ा सौभाग्य क्या हो सकता है? इस कण पर आपकी कृपा दृष्टि हुई इससे बड़ा सौभाग्य क्या हो सकता है? आपने इस कण पर हाथ रखा यह मेरा अहोभाग्य है। आपने इस कण को अपनाया यह मेरे पूर्वजन्म के पुण्यों का उदय है, मुझे अपने आप पर गर्व है कि मैं इस ब्रह्माण्ड का हिस्सा बन सका, उस ब्रह्माण्ड की कृपा दृष्टि मुझ पर पड़ी, उस ब्रह्माण्ड की वर्षा मुझ पर हो सकी और मैं उसमें अवगाहन कर सका। आपकी और मेरी तुलना हो ही नहीं सकती, हजारों-हजारों जन्म लेने के बाद भी मैं आपके बराबर चिंतन कर ही नहीं सकता।

एक कण की और विशाल पृथ्वी की तुलना नहीं हो सकती, एक कण और विशाल समुद्र की तुलना नहीं हो सकती। एक दीपक और सूर्य की तुलना नहीं हो सकती, ठीक उसी प्रकार से मेरी और आपकी तुलना करना ही व्यर्थ है, तुच्छता है, नगण्यता है, मेरा ओछापन है।

मैं तो इस पूरे ब्रह्माण्ड का एक छोटा सा कण भी बना रह सकूं तो बहुत बड़ी उपलब्धि है इस ब्रह्माण्ड में मेरा अस्तित्व है और इससे भी बड़ा सौभाग्य है कि इस कण पर आपकी कृपा दृष्टि है, इस कण ने आनन्द का अनुभव किया है। इससे बड़ा सौभाग्य और मुझे क्या चाहिए।

और जब मैं पूर्ण भावना के साथ आपके चरणों में झुकता हूँ तो मुझे वो चरण दिखाई नहीं देते मुझे तो वहां विश्वनाथकी नगरी दिखाई देती है, मुझे वहां सोमनाथ मंदिर दिखाई देता है, मुझे वहां काशी और कांची, मथुरा और हरिद्वार दिखाई देते हैं। समस्त तीर्थ मुझे आप में दिखाई देते हैं, इन चरणों को आंसुओं से जब मैं भिगोता हूँ तो मुझे ब्रह्मा, विष्णु और रूद्र दिखाई देते हैं। वे केवल चरण नहीं है वे तो सम्पूर्ण देव लोक हैं और जब मैं आंसुओं के माध्यम से उन चरणों को प्रक्षालित करता हूँ तो ऐसा लगता है जैसे समस्त देवताओं की पूजा अर्चना एक साथ कर ली हो। वास्तव में ही आपका यह अद्वितीय शरीर, गर्वोन्नत भाल, तीक्ष्ण और सुन्दर आंखें, नकीली नाक और अद्वितीय मुस्कुराहट मुझे

पागल कर देती है। भूल नहीं पाता हूँ इस मुस्कुराहट को, मैं कहीं भी होता हूँ तो यह मुस्कुराहट मेरा पीछा करती है। हर क्षण इस मुस्कुराहट में मैं अपनेआपको निमग्र करता रहता हूँ, हर क्षण इच्छा होती है कि मैं दौड़ूं, आपके पास आऊं ओर आपको देखूं।

और जब मैं आपके वक्षस्थल को देखता हूँ तो लगता है कि जैसे सम्पूर्ण हिमालय सामने खड़ा हो गया हो और इस वक्षस्थल में इतनी ताकत, इतनी क्षमता, इतना उठा हुआ भाल है कि यदि एक बार हिमालय से टकरा जाए तो हिमालय को कई कदम पीछे हटना पड़े।

ऐसा अद्वितीय वक्षस्थल तो जीवन में और हो ही नहीं सकता, न आर्यों का रहा न देवताओं का रहा। यह तो मैंने देखा है, इस वक्षस्थल से मैं चिपका हूँ, इस वक्षस्थल का मैंने स्पर्श किया है, इस वक्षस्थल की गर्मी को मैंने एहसास किया है। इस उष्णता को मैंने अपने हृदय में प्राणों में उतारा है। इस धड़कन को अपने कानों से सुना है और आपके लम्बे बाहु अपने आपमें ताकत और साहस के परिचायक हैं। ऐसा लगता है कि स्वयं इन्द्र सामने खड़ा हो गया हो, ऐसा लगता है कि पूर्ण ऐश्वर्य क्षमता के साथ खड़े हों।

और आपके चरण तो समस्त तीर्थों का आगार हैं, समस्त देवालयों का आधार हैं, समस्त ब्रह्माण्ड के ऋषियों और मुनियों के तपोपुंज का आधारभूत स्वरूप हैं। वास्तव में ही आपका वरद हस्त आपकी कृपा, आपकी श्रेष्ठता और अद्वितीयता का वर्णन नहीं किया जा सकता। मैं एक मुंह से नहीं हजार-हजार मुंह से भी अगर आपके गुणों को स्पष्ट करना चाहूं तो नहीं कर सकता। अगर पूरी पृथ्वी को कागज बना दिया जाए और उस पर आपके गुणों को लिखा जाए तो वह धरती बहुत छोटी रह जाएगी। फिर भी आपके गुण व्याख्यचित नहीं हो सकते। मैं तो पूर्ण दरिद्री हूँ, शब्दों का भिखारी हूँ, मैं तो आपका वर्णन कर ही नहीं सकता। मगर मैं एकटक आपको देख सकता हूँ। मैं इन आँखों के माध्यम से आपको हृदय में उतार सकता हूँ, मैं अपनी धड़कन को मिटा देना चाहता हूँ। एकाकार हो जाना चाहता हूँ, आपके चरणों में अपने शरीर को निमग्न कर देना चाहता हूँ। अपने आपको पूर्णता के साथ आपमें समावेश कर देना चाहता हूँ। अपने अस्तित्व को मिटा देना चाहता हूँ और आपके चरणों में सिर रखकर अपने नेत्रों के माध्यम से उनको प्रक्षालित करते हुए सम्पूर्ण देवताओं के दर्शन कर लेना चाहता हूँ।

गुरूदेव मैं केवल आपका हूँ और आपकी शरण में हूँ। पूरे ब्रह्माण्ड में कोई मेरा रखवाला नहीं है कोई मेरा ख्याल रखने वाला नहीं है, मैं तो केवल और केवल आपकी शरण में हूँ।

चैतन्य रूपं भवतं सदैव
ज्ञानोच्छवासं सहितं तदैव
देवो तथां पूर्ण मदेव शक्तिं
गुरूर्वै शरण्यं गुरूर्वै शरण्यं

इस ब्रह्माण्ड में जितनी भी शक्तियां हैं वह चाहे महाकाली हो या महासरस्वती हो, चाहे बगलामुखी हो, चाहे धूमावती हो, छिन्नमस्ता हो, जगदम्बा हो किसी भी प्रकार की कोई भी शक्ति हो मैं तो सबको आपके सामने अठखेलियां करते हुए देखता हूँ। मैं देखता हूँ कि वे आपके सामने नृत्य कर रही हैं, मैं देखता हूँ कि वे आपकी कृपा कटाक्ष पाने केलिए प्रयत्नशील हैं। वे स्वयं टुकूर-टुकूर आपकी ओर निहारती रहती हैं कि कब आपकी नजर उठे, कब आपकी उन पर कृपा दृष्टि हो, और जब मैं यह सब कुछ देखता हूँ तो में समझता हूँ कि आपको छोड़कर कौन सी साधना मेरे लिए उपयुक्त है,

ॐ सर्वमंगल मांगल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके |

कौन सी शक्ति मुझे चाहिए, कौनसी साधना चाहिए?

तारा मंत्र से क्या हो जाएगा? काली मंत्र का उच्चारण करने से क्या होगा? नवार्ण मंत्र के द्वारा क्या होगा? इन सबको तो मैं आपके सामने नृत्य करते देख रहा हूँ। ये सारे गंधर्व, किन्नर, देवता नृत्य करते जब मैं आपके सामने देखता हूँ तो समझता हूँ कि आपसे अधिक और देवत्व क्या हो सकता है? आपसे बड़ा और पुरूषत्व और क्या हो सकता है? आप तो जीवन का एक पूंजीभूत स्वरूप हैं, ब्रह्माण्ड का एक पार्श्व हैं, चैतन्य स्वरूप हैं, अपने आप में समग्र हैं और जब मैं आपको देखता हूँ तो ऐसा लगता है कि समस्त ब्रह्माण्ड को अपने आप में आत्मसात कर रहा हूँ। सारा ब्रह्माण्ड मेरे हृदय में अवतरित हो जाता है। मेरा हृदय, अपने आप में धड़कने लग जाता है, चैतन्य हो जाता है, मेरा सारा शरीर थरथराने लग जाता है। मैं अपने आप में पूर्ण कुण्डलिनी जागरण क्रिया योग से दीक्षित हो जाता हूँ। सारा शरीर अपने आप में पूर्ण हो जाता है। अपने आपमें तपस्वी बन जाता हूँ, पूर्णता युक्त हो जाता हूँ, और सही अर्थोमें विश्वामित्र, वशिष्ठ, कणाद बन जाता हूँ। मैं विष्णु और रूद्र बन जाता हूँ क्योंकि वे सब तो आपके सामने सामान्य और नगण्य हैं। जिस प्रकार से मैं खड़ा हूँ उसी प्रकार से ये सारी शक्तियां, ये सारे देवता, ये सारे यक्ष, ये सारे गंधर्व, ये सारे किन्नर मैं आपके सामने खड़े देख रहा हूँ।

इसलिए गुरूदेव उनके समान तो में भी बन गया हूँ। ये हो सकता है कि ये सारे कुछ आगे और मैं कुछ पीछे हूँ। हो सकता है उनके और मेरे बीच फासला हो मगर यदि आपकी कृपा दृष्टि उन पर है तो उनसे भी पहले मुझ पर है। यह मेरे लिए सौभाग्य की बात है, प्रसन्नता की बात है, यह मेरे लिए आह्लाद की बात है पुस्तकों में लिखे मंत्रों को मैं क्या करूं? उन मंत्रों से क्या हो जाएगा? मुझे मंत्र नहीं चाहिए, मुझे तंत्र नहीं चाहिए, मुझे योग और दर्शन नहीं चाहिए। आपके मुंह से निकला प्रत्येक शब्द मंत्र है। आपके मुंह से निकला प्रत्येक शब्द मेरे लिए आज्ञा है, तंत्र है। यदि मैं उन शब्दों का पालन कर लेता हूँ, यदि मैं उन शब्दों को अपने हृदय में उतार लेता हूँ, यदि मैं उनकी आज्ञा का पालन कर लेता हूँ तो अपने आप तंत्र मेरे सामने साकार और पूर्णता के साथ स्पष्ट हो जाएगा। अपने आपमें मंत्र चैतन्य युक्त बन जाएगा।

यदि मैं आपके शरीर को स्पर्श कर लेता हूँ तो अपने आप योग की सारी भावभूमियां मेरे शरीर में अवतरित हो जाएंगी। जब मैं आपके शरीर को स्पर्श करता हूँ तो सारे शरीर में एक विद्युत प्रवाह सा अनुभव होता है। ऐसा लगता है कि जैसे मैं बहुत जोरों से उछल गया हूँ। ब्रह्माण्ड में समाहित होने लग गया हूँ क्योंकि उस तेजस्विता को मैं अपने हृदय में, शरीर में अनुभव करने लगता हूँ।

इसीलिए न मुझे तंत्र की आवश्यकता है, न मंत्र की आवश्यकता है, न योग की, न मीमांसा की न किसी प्रकार की साधना की या सिद्धियों की। मैं सिद्धियों को लेकर क्या करूंगा? जब मेरे जीवन की पूर्णता, मेरे जीवन का लक्ष्य आपके चरणों में अपने आप को मिटा देना है, अस्तित्वमय बना देना है तो फिर उन मंत्रों और साधनाओं, उन काली और सरस्वती से क्या हो जाएगा, उस बगलामुखी और छिन्नमस्ता से क्या हो जाएगा?

वे तो मेरे लिए महत्वपूर्ण नहीं रह गए हैं, जब मैंने आपको देखा है, समुद्र को देखा है, फिर बूंद को देखकर क्या करूंगा, जब मैंने आकाश को देखा है तो फिर एक टिमटिमाते तारे को देखकर क्या करूंगा? जब मैंने एक बसंत को अनुभव किया है तो एक छोटे से सुगंध के झोंके से क्या होगा गुरुदेव मैं तो केवल, मैं तो इतना जानता हूँ कि मैं केवल तुम्हारा हूँ, मैं तो इतना जानता हूँ कि केवल आपकी मुझ पर कृपा दृष्टि है। मैं इतना जानता हूँ कि मैं आपकी शरण में हूँ, मैं तो केवल इतना ही तंत्र मंत्र जानता हूँ कि केवल आपकी शरण में हूँ।

न तातो वतान्यै न मातं न भ्रातं
न देहो वदान्यै पत्नीर्वतैवं
न जानामि विर्ति न वृतं न रूपं
गुरुर्वै शरण्यं गुरुर्वै शरण्यं

मैं न माता को जानता हूँ, न पिता को जानता हूँ क्योंकि वे तो स्वार्थमय संबंध हैं, पिता इसीलिए मुझे पुत्र कहते हैं कि में जीवन में उनके काम आ सकूं, न मेरे जीवन में कोई भाई है, न रिश्तेदार है, न पत्नी है, न बंधु है, न बांधव है, न धन है, न ऐश्वर्य है, न वैभव है। मेरे जीवन में कुछ है ही नहीं, मैं जीवन में कुछ चाहता ही नहीं। इनसे मेरा कोई प्रयोजन नहीं है, इनसे मेरी लक्ष्य प्राप्ति नहीं हो सकती, ये तो श्मशान यात्रा के पड़ाव हैं, जन्म से लेकर मृत्यु तक मैं श्मशान की ओर अग्रसर हो रहा हूँ, जन्म से लेकर मृत्यु तक मैं श्मशान की ओर अग्रसर हो रहा हूँ और इस यात्रा में ये भी मेरे सहायक हैं, मुझे श्मशान की ओर अग्रसर कर रहे हैं।

ये सब मेरी देह को छीनते हैं, मेरे प्राणों को छीनते हैं, मेरे धन को छीनते हैं, मेरी सेवा का उपयोग करना चाहते हैं। इनसे क्या हो जाएगा, इससे तो मैं एक मलिन नाली का कीड़ा बन कर रह जाऊंगा। अगर मैं पुत्र को पैदा करूंगा तो ज्यादा से ज्यादा मेरी अर्थी को कंधा दे देगा। यदि मैं पत्नी को रखूंगा तो ज्यादा से ज्यादा चार आंसू बहा देगी, अगर माँ बाप होंगे तो ज्यादा से ज्यादा धन की याचना करेंगे।

मगर यह मेरी जिन्दगी का प्रयोजन नहीं है मेरे जीवन का लक्ष्य नहीं है, मैं उस जगह खड़ा हूँ जहां ये सब तुच्छ हैं, आखिर जीवन में कोई तो क्षण आता है जब ये सब नगण्य और तुच्छ लगने लगते हैं। हिमालय के सामने जाते हैं तो एक बड़ा पत्थर भी कंकर के समान दिखाई देता है। जब मैं आपके सामने प्रस्तुत हुआ हूँ तो मुझे ये सब संबंध बेमानी और बहुत तुच्छ और अस्तित्वहीन लगने लगे हैं।

मैं इन संबंधों से जीवित नहीं रहना चाहता, मैं किसी का पुत्र, पति, पत्नी या सखा बनकर जिन्दा नहीं रहना चाहता। इन बंधनों से मैं समुद्र नहीं बन सकता, ये बंधन तो अभिशाप हैं, पांव की बेडियां हैं जो मुझे जकड़े हुए हैं। मेरी सांसों पर इनका नियंत्रण है। मेरे प्राणों को इन ने दबोच लिया है, मैं समाज में घुटकर रह गया हूँ, एक अंधियारी कोठरी में मैं भटक रहा हूँ और जिस ओर भी मैं जाता हूँ मेरा सिर फूट जाता है, फिर भी मैं दरवाजा ढूंढने की कोशिश करता हूँ, मैं बदहवास सा आगे और पीछे भटकता रहता हूँ। चारों तरफ अंधेरा है, और घनघोर अंधेरा है।

इस समाज ने अंधेरे के अलावा कुछ दिया ही नहीं है। भूख और प्यास, बाधाएं और परेशानियां, आलोचना और गंदगी के अलावा कुछ नहीं दिया। घटियापन और तुच्छता के अलावा इस परिवार ने कुछ नहीं दिया। मैं इस कीचड़ से, दल दल से निकलना चाहता हूँ। मैं इस गंदगी से निकलकर पवित्र होना चाहता हूँ। मैं महान अद्वितीय और गुरुमय बनकर के अपने जीवन को पवित्र बनाना चाहता हूं मैं उस स्थिति को प्राप्त करना चाहता हूँ जो अपने आप में महत्वपूर्ण है, मैं उस ब्रह्म से साक्षात्कार करना चाहता हूँ जिसको ऋषियों और योगियों ने अंहब्रह्मास्मि कहा है।

मैं उस चैतन्यता को प्राप्त करना चाहता हूँ जो जीवन की पूर्णता है, आप मुझ पर कृपा करें, आप वापस मुझे उन बंधनों में नहीं डालें। मुझे किसी प्रकार का कोई मोह नहीं रहा है और यदि कुछ मोह है तो उस मोह को आप समाप्त करें। मैं मानसरोवर के पास आकर प्यासा नहीं रहना चाहता, बसंत आने के बाद भी मैं उदासीन नहीं रहना चाहता, मैं मुस्कुराते पुष्पों के बीच भी निर्जीव नहीं रहना चाहता। आपके सामने आकर मैं दुर्भाग्यशली नहीं रहना चाहता, मैं सौभाग्यशाली बनना चाहता हूँ, मैं जीवन में श्रेष्ठता चाहता हूँ, मैं जीवन में गुरू चाहता हूँ, मैं आपके शरीर में मिल जाना चाहता हूँ,

आपकी प्राणों की धड़कन बनना चाहता हूँ, क्योंकि गुरूदेव मैं आपकी शरण में हूँ।

त्वदीयं त्वदेयं भवत्वं भवेयं
चिंत्यं विचिंत्यं सहित सदैव:
आतोन वातं भवमेक नित्यं,
गुरूर्वै शरण्यं गुरूर्वै शरण्यं।

मैं दोनों हाथ ऊपर उठाकर चीख रहा हूँ, मैं प्राणों में आवाज भर करके उच्चारण कर रहा हूँ, इतनी जोर से बोलकर अपनी बात आप तक पहुंचाना चाहता हूँ, मेरा सारा शरीर थर-थर कांप रहा है, सारे शरीर के रोम-रोम आवाज करने लग गए हैं, चीखने लग गए हैं। मैं अपने आप में नहीं रहा हूँ। ऐसा लगता है कि मैं ऐसी बूंद हूँ जो अंगारे पर गिरती है और छन्न के साथ खत्म हो जाती है।

ऐसा लगता है कि मैं एक बादल का टुकड़ा हूँ जो एक पहाड़ से टकराकर समाप्त हो जाना चाहता है। मैं तो ऐसा कण बनना चाहता हूँ जो आपसे टकराए और पूर्णता को प्राप्त हो जाए। मैं आपको पाना चाहता हूँ, आप में लीन हो जाना चाहता हूँ और यदि ऐसा नहीं है तो यह जीवन व्यर्थ है। इस जीवन का कोई अर्थ ही नहीं है, मकसद ही नहीं है, मूल्य ही नहीं है, यह तो श्मशान की एक यात्रा है, एक लाश को मैं अपने कंधे पर ढोकर श्मशान की ओर बढ़ रहा हूँ। ऐसे जीवन का क्या मूल्य हो जाएगा। क्या मेरी आवाज का चीखों का आप पर कोई प्रभाव नहीं पड़ रहा है।

जरूर पड़ रहा होगा। जरूर कोई दुर्भाग्य होगा जो आप आगे बढ़कर मुझे अपना नहीं रहे हैं, जरूर मुझमें कोई न्यूनता होगी कि आपकी कृपा दृष्टि मुझ पर नहीं पड़ रही, जरूर मेरे पाप मेरे सामने खड़े हो जाते होंगे जो आपके और मेरे बीच पर्दा डाल रहे हैं। परन्तु इस पर्देको तो आप ही दूर करेंगे, मुझमें इतनी ताकत, इतनी क्षमता नहीं कि मैं इन पापों को ढकेल सकूं, मुझमें इतनी क्षमता नहीं कि मैं इस पर्दे के बीच के अंधकार को दूर कर सकूं।

मुझे कोई साधना और सिद्धि आती ही नहीं है मुझे किसी मंत्र का ज्ञान ही नहीं है, मुझे तो केवल एक शब्द, एक मंत्र ही आता है, जिसे गुरू कहा जाता है। मैनें तो केवल एक ही मंत्र सीखा है कि गुरूदेव मैं आपकी शरण में हूं।

अवतं मदेवं भवतं सदैवं
ज्ञानं सदेवं चित्यं सदैवं
पूर्णं सदैवं अवतं सदैवं
गुरूर्वै शरण्यं गुरूर्वै शरण्यं।

कई कई जन्मों से आपका और मेरा साथ रहा है। कई-कई जन्मों से आपने झकझोर कर मुझे इस रास्ते पर खडा. किया है, हर बार आपने मुझे समझाया है, हर बार आपने चेतना दी है, हर बार मेरे प्राणों को झंकृत किया है, हर बार मुझे बुद्धि दी है, हर बार आपने मुझे बताया है कि जीवन की पूर्णता क्या है? उसके बावजूद भी मैं अज्ञानी हूं, बुद्धि से ग्रस्त हूं, बुद्धि मुझ पर हावी है, आपको मैं समझ नहीं पा रहा हूं। इसलिए समझ नहीं पा रहा हूं कि आप हर क्षण बदल जाते हैं, हर क्षण एक नवीन स्वरूप में मेरे सामने खडे.हो जाते हैं। इतने-इतने स्वरूप आप मेरे सामने खडे.कर देते हैं, कि मैं एक स्वरूप को पकड़ता हूं तो दूसरा स्वरूप सामने आ जाता है, दूसरे को पकड़ता हूं तो तीसरा और चौथा और पांचवा..............स्वरूप सामने आ जाता है। मैं समझ नहीं पा रहा हूं कि कौन से स्वरूप को मैं समझूं।

मैं अज्ञानी हूं और ज्योंहि मैं समझने की कोशिश करता हूं त्योंहि आप माया का पर्दा आप अपने और मेरे बीच में डाल देते हैं। आप तो बहुत अजीब तरह का खेल खेलते रहते हैं और मैं फिर आपको सामान्य मानव समझ लेता हूं। फिर मैं आपको हाड़-मांस का व्यक्ति समझ लेता हूं। फिर मैं समझता हूं कि यह तो मेरे जैसा ही मनुष्य हैं। फिर उस माया के

आवरण में लिप्त होता हुआ मैं उसी जगह जाकर खड़ा हो जाता हूं, जहां से मैं चला था।

आप ऐसा मत करें, बार-बार मेरी परीक्षा न लें, बार-बार माया के आवरण में मुझे मत डालिए। बार-बार मुझे धकाकर पीछे मत हटाइए। मुझमें किसी प्रकार का बल, ताकत और क्षमता नहीं है। यदि आप मुझ पर कृपा करें तो मेरी बुद्धि को समाप्त करें। यदि आपकी कृपा कटाक्ष मुझ पर है तो आप मेरी भावना को जागृत करें, यदि आप मुझे कुछ समझते हैं तो मुझे बुलाकर अपने सीने से लगाएं, अपने वक्षस्थल से चिपकाएं, मैं आपकी धड़कन को अपने सीने में उतार सकूं, मैं अपने प्राणों को पूर्णता के साथ आपसे एकाकार कर सकूं। मैं आप में निमग्न हो सकूं अपने आप को आपमें लीन कर सकूं, आपका और मेरा अस्तित्व अलग न रहे, बूंद पूर्णत: समुद्र में समाहित हो जाएं। मैं तो उसी प्रकार आप में लीन हो जाना चाहता हूं, क्योंकि मेरा एकमात्र सहारा और अवलम्ब गुरूदेव आप है। मैं आपकी शरण में हूं, केवल मात्र आपकी शरण में हूं।

वस्तुत: दुर्लभोपनिषद जीवन का एक सौभाग्यदायक काव्य है, मैं आपको हृदय से आशीर्वाद देता हूं कि आप अपने जीवन में गुरूमय हो सकें, गुरू में निमग्न हो सकें, अपने जीवन का नवसृजन करते हुए पूर्णत्व को प्राप्त कर सकें और जीवन में वह सब प्राप्त कर सकें जो दुर्लभोपनिषद में स्पष्ट है, मैं आपको ऐसा ही आशीर्वाद दे रहा हूं।

पूज्यपाद सद्गुरुदेव डॉ. नारायणदत्त श्रीमालीजी
(परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानंदजी)

'नारायण मंत्र साधना विज्ञान' पत्रिका आपके परिवार का अभिन्न अंग है। इसके साधनात्मक सत्य को समाज के सभी स्तरों में समान रूप से स्वीकार किया गया है, क्योंकि इसमें प्रत्येक वर्ग की समस्याओं का हल सरल और सहज रूप में समाहित है।

इस भाग-दौड़ भरी जिंदगी में माता-पिता व्यस्तता के कारण बच्चों के लिये बहुत कम समय निकाल पाते हैं।

बच्चों का ध्यान पढ़ाई की ओर कम जा पाता है। बालकों को बचपन से ही अच्छे संस्कार मिलें तथा बुद्धि का विकास हो तो बालक जीवन में आगे चलकर विशेष सफलता प्राप्त करता है। उसकी स्मरण शक्ति का विकास होना आवश्यक है। इस प्रतिस्पर्धा के युग में जहाँ हर बालक पढ़ाई में आगे निकलने को तत्पर है।

इस हेतु पु. गुरुदेव ने बच्चों के लिए सरस्वती यंत्र निर्माण कराया है (जो कि उपहार स्वरूप है) इसे किसी भी सोमवार को नीचे लिखे विधान के अनुसार अपने बच्चों को धारण करायें।

विधि

किसी भी सोमवार को प्रात: भगवती सरस्वती को हाथ जोड़कर ध्यान करें सामने थाली में अष्टगंध या चंदन से 'ऐं' लिखें और उस पर सरस्वती यंत्र को स्थापित कर दें यंत्र पर अष्टगंध से तिलक करें। पीले पुष्प चढ़ायें। दीपक लगाकर १० मिनट तक निम्न सरस्वती मंत्र का जप पूर्व या उत्तर दिशा की ओर मुंह करके करें।

।। ॐ ऐं सरस्वत्यै ऐं नम:।।

फिर दूध से बने प्रसाद का भोग लगायें और बच्चों को उपरोक्त मंत्र का जप करते हुये यंत्र को धागे में पिरोकर गले में धारण करा दें और बच्चों को नित्य 5 से 10 मिनट तक उपरोक्त मंत्र जप करवायें। इससे उनकी ज्ञान चेतना, स्मरण-शक्ति में वृद्धि होती ही है।

नारायण मंत्र साधना विज्ञान जोधपुर

डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-342001

8890543002 0291 2432209, 0291 2432010, 0291 2433623, 0291 7960039

• 28.05.22 से 01.06.22 •

तिब्बती लामा साधना

एक अलौकिक

लक्ष्मी प्राप्ति मंत्र

जो

ब्रह्माण्ड

की

ध्वनियों से निर्मित हुआ

वह तिब्बती पद्धति की साधना अमावस्या पर ही सम्पन्न की जा सकती है। इस साधना का तात्पर्य दरिद्रता पर विजय, कष्टों पर विजय, अभावों, परेशानियों और पीड़ाओं, दुःख, दैन्य और दरिद्रता पर विजय है। अफ्रीका के कुछ कबीलों में इस दिन दरिद्रता को आटे की मूर्ति बनाकर विशेष मंत्रों से काटकर नदी में प्रवाहित करने की परम्परा है। चीन में अमावस्या के दिन घास-फूस का पुतला बनाया जाता है, जो कि भूख और दुःख का प्रतीक होता है और फिर उस पर कुछ मंत्र पढ़कर आग लगा देते हैं, जिसका तात्पर्य है कि हम मंत्रों से अपने जीवन की भूख और दरिद्रता को मिटा रहे हैं। तिब्बत के बौद्ध मठ तो तांत्रिक क्षेत्र में विश्व विख्यात हैं, वे पांच दिनों तक यह विशिष्ट साधना सम्पन्न करते हैं, और अपने मठों को अद्वितीय धन सम्पन्न बना देते हैं।

तिब्बती तंत्र साधना

मंत्र-तंत्र साधना भारतवर्ष की जितनी प्राचीन है, तिब्बत में भी उतनी ही प्राचीन है। तिब्बत के अधिकतर लामा तो इस क्षेत्र में आज भी अद्वितीय है। उन्होंने योगबल से और तंत्र के माध्यम से जो कुछ प्राप्त किया है, वह अपने-आप में अद्वितीय है। उसकी तुलना तो हो ही नहीं सकती।

तिब्बत किसी समय भले ही छोटा सा देश रहा हो, परन्तु वहां बौद्ध मठ अपने-आप में पवित्र, दिव्य और उच्च स्तरीय रहे हैं। लक्ष्मी को पूर्णता से प्राप्त करें और घर में स्थायी रूप से निवास कराएं, इसके लिए उन्होंने तंत्र की विशेष साधना पद्धति ढूंढ निकाली, जो अभी तक अपने आप में गोपनीय और दुर्लभ रही है। यह एक ऐसी साधना है, जिसके माध्यम से हमेशा के लिए दु:ख, दैन्य और कष्ट समाप्त हो जाता है। यह एक ऐसी साधना है, जिसके द्वारा लक्ष्मी से संबंधित पूर्वजन्म के दोष नष्ट हो जाते हैं और यह एकमात्र ऐसी साधना है, जिससे घर में निरन्तर धन-धान्य, सुख-सौभाग्य तथा ऐश्वर्य की वृद्धि होती रहती है।

राहुल सांकृत्यायन का नाम तो विख्यात है।
उन्होंने तिब्बत के दुर्लभ मठों की यात्रा की और
उनका एकमात्र उद्देश्य लक्ष्मी सिद्ध करने की उस विशिष्ट विधि को ढूंढ निकालना था, जिसके द्वारा घर में लक्ष्मी को स्थायित्व दिया जा सके, निरन्तर व्यापार वृद्धि हो सके, घर में सुख सौभाग्य बढ़ सके, जिसके द्वारा वह चंचल लक्ष्मी सदा के लिए घर में बनी रह सके।

यद्यपि मैंने तंत्र साधानाएं सिद्ध कर रखी थीं और मुझे अपने जीवन में यह गर्व रहा है कि मैं स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी का प्रिय शिष्य रहा हूँ। उनके सानिध्य में ही मैंने तंत्र की कुछ ऐसी विशेष साधनाएं सिद्ध की थीं, जो मेरे जीवन की धरोहर है। उन्होंने ही एक बार चर्चा के दौरान बताया था कि तिब्बत के बौद्ध मठों में 'अखण्डलक्ष्मी सिद्धि प्रयोग' से संबंधित कोई प्रयोग था, उन्होंने पांच-सात बौद्ध मठों का जिक्र किया था, जिसमें ल्हून बौद्ध मठ का नाम भी था।

मुझे ल्यून बौद्ध मठ के प्रधान लामा से मिलने का सौभाग्य मिलने पर यह दुर्लभ साधना पद्धति प्राप्त हुई, जो कि मेरे सद्‌गुरुदेव की असीम कृपा प्रसाद ही है एवं उन आदरणीय लामाजी का मेरे ऊपर स्नेह था, जो उन्होंने इस पद्धति का ज्ञान मुझे प्रदान किया। मैं उनके प्रति कृतज्ञ हूँ और वही साधना मैं साधकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत कर रहा हूँ।

साधना समय

यह साधना मात्र अमावस्या पर ही सम्पन्न की जा सकती है, और यह पांच दिनों की साधना है।

साधना मुहूर्त

यह पांच दिन की साधना है, जो अमावस्या के दो दिन पहले से प्रारम्भ होती है और अमावस्या के दो दिन बाद तक चलती है। इसके अलावा यह प्रत्येक वर्ष कार्तिक कृष्ण पक्ष त्रयोदशी से कार्तिक शुक्ल पक्ष तृतीया तक भी हो सकती है। इस अवधि में यह साधना सम्पन्न की जा सकती है।

साधना कौन करे

यह साधना पुरुष या स्त्री कोई भी अपने घर में सम्पन्न कर सकता है। इस साधना में नित्य केवल तीन घंटे देने होते हैं।

साधना विधि

प्रात:काल उठकर स्नान कर सफेद आसन पर बैठकर पूर्व की ओर मुंह कर साधना संपन्न करना चाहिए। इस साधना में सफेद हकीक माला का प्रयोग किया जाता है, इस माला की विशेषता यह होनी चाहिए कि इस माला का प्रयोग किसी अन्य साधना में नहीं किया हुआ हो। इस माला से केवल इसी साधना को संपन्न किया जा सकता है।

इसमें घी का दीपक और तेल का दीपक जलता रहना चाहिए। साधक स्वयं सफेद धोती और सफेद वस्त्र धारण करके बैठे और नित्य 11 माला मंत्र जाप आवश्यक है। यह साधना प्रात:काल या रात्रि को सम्पन्न की जा सकती है।

साधना काल में साधक के लिए यह जरूरी नहीं है कि एक

समय भोजन करें, ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करे, जमीन पर सोवे, वह जिस प्रकार से भी चाहे, अपनी दिनचर्या व्यतीत कर सकता है।

साधना समग्री

इस साधना में पांच महत्वपूर्ण वस्तुओं की जरूरत होती है, जो सभी पवित्र, दिव्य और अखंड लक्ष्मी मंत्र से सिद्ध हों। मैं एक बार फिर दोहरा रहा हूँ कि प्रत्येक सामग्री अखण्ड लक्ष्मी प्रयोग से सिद्ध हो, तभी इस साधना में सिद्धि प्राप्त हो सकती है।

1. सहस्र सिद्धि अखण्ड लक्ष्मी यंत्र (जो ताबीज से वेष्ठित हो)।
2. लघु नारियल–जो विशिष्ट कुबेर मंत्र से सिद्ध हो।
3. तीन हकीक पत्थर, 1. महालक्ष्मी, 2. अखण्ड लक्ष्मी, 3. सौभाग्य लक्ष्मी मंत्रों से पूर्ण चैतन्य हो।
4. गोमती चक्र, जो रावणकृत कुबेर साधना से सिद्ध हो।
5. हकीक माला, जिसका प्रत्येक मनका लक्ष्मी मंत्र से चैतन्य हो।

अन्य सामग्री

इसके अलावा कुछ अन्य सामग्री पहले से ही व्यवस्थाा करके रख लेनी चाहिए–1. आसन, 2. जलपात्र, 3. कुंकुम, 4. चावल, 5. पुष्प, 6. घी का तथा तेल का दीपक, 7. दूध का बना हुआ प्रसाद (नैवेद्य)।

साधना प्रयोग

प्रात:काल स्वयं या अपनी पत्नी के साथ शुद्ध शांत चित्त से आसन पर बैठ जाएं और सामने सारी सामग्री रख दें। भगवती महालक्ष्मी के चित्र को पहले से ही कांच के फ्रेम में मढ़वाकर रखें। इसके अलावा सारी सामग्री किसी स्टील के पात्र में रख दें, फिर 'महालक्ष्म्यै नम:' शब्द का उच्चारण करते हुए इस सारी सामग्री को जल से स्नान कराएं, फिर कच्चे दूध से धोएं और पुन: जल से या गंगाजल से धोएं, फिर सबको पोंछ कर चांदी, स्टील या तांबे के पात्र में स्थापित कर दें और सब पर कुंकुम या केसर का तिलक करें, फिर इत्र छिड़कें, पुष्प चढ़ाएं और अगरबत्ती जलाएं, कपूर से लक्ष्मी की आरती करें, इसके बाद सफेद हकीक माला से मंत्र जप संपन्न करें। यह 11 माला मंत्र जप आवश्यक है। पांचों दिन के लिए अलग-अलग मंत्र हैं।

तिब्बती मंत्र

प्रथम दिन– ॐ ह्रीं मणिभद्रे हुं।
दूसरे दिन– ॐ ऐं विराट् देव्यै हुं।
तीसरे दिन– ॐ श्रीं तैवांग भद्रे हुं।
चौथे दिन– ॐ ऐं श्रीं तनत्वयै फट्।
पांचवे दिन– ॐ ऐं ह्रीं सवसेव्यै हुं।

सामग्री–उपयोग

साधना सम्पन्न करने के बाद यहां से जो भी सामग्री भेजी जायेगी, उसका प्रयोग इस प्रकार से करना चाहिए – 1. भगवती महालक्ष्मी के प्रामाणिक चित्र को पूजा स्थान में ही रहने दें। 2. सहस्र सिद्धि अखण्ड लक्ष्मी यंत्र पीले धागे में डालकर एक महीने तक अपने गले में धारण किये रहें, 3. कभी-कभी साधना के समय हकीक माला को धारण कर लें, 4. इसके अलावा बाकी सारी सामग्री एक सप्ताह तक पूजा स्थान में ही रहने दें, और इसके दूसरे दिन किसी नदी या तालाब में विसर्जित कर दें या किसी मंदिर में रख दें।

साधना सामग्री- 660/-

ध्यान

ॐ सौवर्णासन संस्थितां त्रिनयनां पीतांशुकोल्लासिनीं,
हेमामाङ्गरुचिं शशाकंमुकुटां सचम्पकस्रग्युताम्।
हस्तैर्मुद्‌गर पाशवज्ररसनां संविभ्रतीम्भूषणैः,
व्याप्ताङ्गींबगलामुखीं त्रिजगतां संस्तंभिनीं चिन्तये।
ॐ ह्रीं ऐं श्रीं क्लीं श्रीबगलानने मम रिपून् नाशय नाशय,
ममैश्वर्याणि देहि देहि, शीघ्रं मनोवांछितं कार्यं साधय साधय, ह्रीं स्वाहा।

साधक उत्तर की मुँह करके सामने पीले चावल की ढेरी पर बगलामुखी यंत्र स्थापित कर नित्य इस बगलामुखी कवच के पाँच पाठ ग्यारह दिनों तक करें तो किसी भी प्रकार के संकट या शत्रु बाधा से मुक्त हो जाता है। यह पाठ 09.05.2022 से या किसी भी शुक्रवार से प्रारंभ करें इससे साधक की शत्रु बाधा से रक्षा होती है। और जो भी मनोवांछित कामना हो वह पूर्ण होती है। यदि नित्य 1 बार पाठ करके घर से जाएं तो शत्रु हमेशा-हमेशा शांत रहते है।

बगलामुखी कवचम्

शिरो मे पातु ॐ ह्रीं ऐं श्रीं क्लीं पातु ललाटकम्।
सम्बोधनपदं पातु नेत्रे श्रीबगलानने।।1।।
श्रुतौ मम रिपुं पातु नासिकां नाशयद्वयम्।
पातु गण्डौ सदा मामैश्वर्याण्यन्तं तु मस्तकम्।।2।।
देहिद्वन्दं सदा जिह्वां पातु शीघ्रं वचो मम।
कण्ठदेशं मनः पातु वाञ्छितं बाहुमूलकम्।।3।।
कार्यं साधयद्वन्दं तु करौ पातु सदा मम।
मायायुक्ता तथा स्वाहा हृदयं पातु सर्वदा।।4।।
अष्टाधिकचत्वारिंशदण्डाढया बगलामुखी।
रक्षां करोतु सर्वत्र गृहेऽरण्ये सदा मम।।5।।
ब्रह्मास्त्राख्यो मनुः पातु सर्वाङ्गे सर्वसन्धिषु।
मंत्रराजः सदा रक्षां करोतु मम सर्वदा।।6।।
ॐ ह्रीं पातु नाभिदेशं कटिं मे बगलाऽबतु।
मुखिवर्णद्वयं पातु लिङ्गं मे मुष्कयुग्मकम्।।7।।
जानुनी सर्वदुष्टानां पातु में वर्णपञ्चकम्।
वाचं मुखं तथा पादं षड्वर्णः परमेश्वरी।।8।।

जंघायुग्मे सदा पातु बगला रिपुमोहिनी।
स्तम्भयेति पदं पृष्ठं पातु वर्णत्रयं मम॥9॥

जिह्वावर्णद्वयं पातु गुल्फौ मे कीलयेति च।
पादोर्ध्वं सर्वदा पातु बुद्धिं पादतले मम॥10॥

विनाशयपदं पातु पादांगुल्योर्नखानि मे।
ह्रीं बीजं सर्वदा पातु बुद्धीन्द्रियवचांसि मे॥11॥

सर्वांग प्रणव: पातु स्वाहा रोमाणि मेऽवतु।
ब्राह्मी पूर्वदले पातु चाग्नेय्यां विष्णुवल्लभा॥12॥

माहेशी दक्षिणे पातु चामुण्डा राक्षसेऽवतु।
कौमारी पश्चिमे पातु वायव्ये चापराजिता॥13॥

वाराही चोत्तरे पातु नारसिंही शिवेऽवतु।
ऊर्ध्वं पातु महालक्ष्मी: पातले शारदाऽवतु॥14॥

इत्यष्टौ शक्तय: पान्तु सायुधाश्च सवाहना:।
राजद्वारे महादुर्गे पातु मां गणनायक:॥15॥

श्मशाने जलमध्ये च भैरवश्च सदाऽवतु।
द्विभुजा रक्तवसना: सर्वाभरणभूषिता:॥16॥

योगिन्य: सर्वदा पान्तु महारण्ये सदा मम।
इति ते कथितं देवि कवचं परमाद्भुतम्॥17॥

श्रीविश्वविजयं नाम कीर्तिश्रीविजयप्रदम्।
अपुत्रो लभते पुत्रं धीरं शूरं शतायुषम्॥18॥

निर्धनो धनमाप्नोति कवचस्यास्य पाठत:।
जपित्वा मन्त्रराजं तु ध्यात्वा श्रीबगलामुखीम्॥19॥

पठेदिदं हि कवचं निशायां नियमात् तु य:।
यद् यत् कामयते कामं साध्यासाध्ये महीतले॥20॥

तत् तत् काममवाप्नोति सप्तरात्रेण शंकरि।
गुरुं ध्यात्वा सुरां पीत्वा रात्रौ शक्तिसमन्वित:॥21॥

कवचं य: पठेद् देवि तस्यासाध्यं न किञ्चन।
यं ध्यात्वा प्रजपेन् मन्त्रं सहस्रं कवचं पठेत्॥22॥

त्रिरात्रेण वशं याति मृत्यो: तन्नात्र संशय:।
लिखित्वा प्रतिमां शत्रो: सतालेन हरिद्रया॥23॥

लिखित्वा हृदि तन्नाम तं ध्यात्वा प्रजपेन् मनुम्।
एकविंशदिनं यावत् प्रत्यहं च सहस्रकम्॥24॥

जप्त्वा पटेत् तु कवचं चतुर्विंशंतिवारकम्।
संस्तम्भं जायते शत्रोर्नात्र कार्या विचारणा॥25॥

विवादे विजयं तस्य संग्रामे जयमाप्नुयात्।
श्मशाने च भयं नास्ति कवचस्य प्रभावत:॥26॥

नवनीतं चाभिमन्त्र्य स्त्रीणां दद्यान् महेश्वरि।
वन्ध्यायां जायते पुत्रौ विद्यावलसमन्वित:॥27॥

श्मशानांगरमादाय भौमे रात्रौ शनावथ।
पादोदकेन स्पृष्ट्वा च लिखेत् लोहशलाकया॥28॥

भूमौ शत्रो: स्वरूपं च हृदि नाम समालिखेत्।
हस्तं तद्धृदये दत्वा कवचं तिथिवारकम्॥29॥

ध्यात्वा जपेन् मन्त्रराजं नवरात्रं प्रयत्नत:।
म्रियते ज्वरदाहेन दशमेऽह्नि न संशय:॥30॥

भूर्जपत्रेष्विदं स्तोत्रमष्टगन्धेन संलिखेत्।
धारयेद् दक्षिणे बाहौ नारी वामभुजे तथा॥31॥

संग्रामे जयमाप्नोति नारी पुत्रवती भवेत्।
ब्रह्मास्त्रादीनि शस्त्राणि नैव कृन्तन्ति तं जनम्॥32॥

सम्पूज्य कवचं नित्यं पूजाया: फलमालभेत्।
वृहस्पतिसमो वापि विभवै धनदोपम:॥33॥

कामतुल्यश्च नारीणां शत्रूणां च यमोपम:।
कवितालहरी तस्य भवेद् गंगाप्रवाहवत्॥34॥

गद्यपद्यमयी वाणी भवेत् देवीप्रसादत:।
एकादशशतं यावत् पुरश्चरणमुच्यते॥35॥

पुरश्चर्याविहीनं तु न चेदं फलदायकम्।
न देयं परशिष्येभ्यो दुष्टेभ्यश्च विशेषत:॥36॥

देयं शिष्याय भक्ताय पञ्चत्वं चान्यथाऽऽप्नुयात्।
इदं कवचमज्ञात्वा भजेद् यो बगलामुखीम्।
शतकोटि जपित्वा तु तस्य सिद्धिर्न जायते॥37॥

दाराढयो मनुजोऽस्य लक्षजपत: प्राप्नोति सिद्धिं परां
विद्यां श्रीविजयं तथा सुनियतं धीरं च वीरं वरम्।
ब्रह्मास्त्राख्यमनुं विलिख्य नितरां भूर्जेऽषटगन्धेन वै
धृत्वा राजपुरं ब्रजन्ति खलु ये दासोऽस्ति तेषां नृप:॥38॥

इति विश्वसारोद्धारतन्त्रे पार्वतीश्वरसंवादे बगलामुखीकवचम् (1) सम्पूर्णम्

साधना सामग्री – 240

छिन्नमस्ता साधना

यह साधना अत्यन्त दुष्कर मानी गई है।

साधारणतः कोई भी गुरु शीघ्रता से इसे करने की आज्ञा प्रदान नहीं करते।

परन्तु सद्‌गुरुदेव ने अपने शिष्यों को प्रत्येक साधना करने की आज्ञा प्रदान की।

कष्ट बाधा, पीड़ा, तंत्र निवारण एवं मनोकामनापूर्ति हेतु

कुछ लघु प्रयोग यहाँ दिये जा रहे हैं, जिन्हें आप सम्पन्न कर लाभ उठा सकते हैं।

यदि पूर्णरुपेण इस साधना को करना चाहे तो
पूर्ण विधि-विधान से सवा लाख मंत्र जप अनुष्ठान करना चाहिए।

ध्यान

छिन्नमस्तां महाविद्यामक्षरात्म स्वरूपिणीं
विद्युदग्निसमुदभूतां प्रसुप्तभुजगीतनुम।
कुण्डलीरूप संयुक्तां नानातत्त्वमन्वितां
त्रिवलीवलयोपेतां नाना स्थानकृतां शुभाम।।

मंत्र

।। श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं वज्रवैरोचनीये हुं हुं फट् स्वाहा।।

1. किसी भी प्रकार की साधना में सफलता प्राप्त करने के लिए छिन्नमस्ता देवी का यह प्रयोग सम्पन्न करें। छिन्नमस्ता का ध्यान कर 'छिन्नमस्ता यंत्र' के समक्ष 51 बार उपरोक्त मंत्र जप करें। फिर 21 बिल्व पत्र तथा हवन सामग्री से उपरोक्त मंत्र की 21 आहुतियां अग्नि में डालें। साधनाओं में सफलता प्राप्त होगी।
2. धन के निरन्तर, आगमन के स्रोत के लिए 'छिन्नतस्ता यंत्र' को स्थापित करें, यंत्र का पूजन कर ध्यान करें। ध्यान के पश्चात् शहद तथा सफेद पुष्प से 51 आहुतियां अग्नि में दें। ऐसा करने से धन के आगमन का स्रोत खुलता है। यंत्र को सात दिन बाद नदी में प्रवाहित कर दें।
3. विद्या की कामना रखने वाले साधक 'छिन्नमस्ता यंत्र' का पूजन कर ध्यान करें, फिर उपरोक्त मंत्र का 51 बार जप करें। नित्य यंत्र को अपने आज्ञा चक्र से लगाकर उपरोक्त मंत्र का 51 बार जप करें। यह प्रयोग ग्यारह दिन तक करें। ग्यारह दिन पश्चात् यंत्र को नदी में प्रवाहित कर दें। फिर साधक विद्याभ्यास करें, उसे सफलता अवश्य मिलेगी।
4. समस्त बाधाओं को समाप्त करने के लिए साधक 'छिन्नमस्ता यंत्र' को मिट्टी के पात्र में रखें, उसमें पांच काली मिर्च के दाने तथा पांच लौंग रखें, उस पर सिन्दूर डालें। फिर छिन्नमस्ता का ध्यान कर उपरोक्त मंत्र का तीन दिन तक 51 बार जप करें। प्रयोग काल में धरती पर ही सोयें। प्रयोग समाप्ति के पश्चात् पात्र को लाल रंग के वस्त्र में बांध कर नदी में प्रवाहित कर दें।
5. गृहस्थ व्यक्ति की अनेक कामनाएं ऐसी होती हैं, जिनकी पूर्ति करना उसके लिए सहज नहीं हो पाता है और उसे अपूर्ण इच्छाओं के साथ ही जीवन व्यतीत करना पड़ता है। ऐसी इच्छाओं की पूर्ति के लिए निम्न प्रयोग करें–

   'छिन्नमस्ता यंत्र' को शहद लगा कर रख दें। फिर भगवती छिन्नमस्ता का ध्यान करते हुए उपरोक्त मंत्र का पांच दिन तक नित्य 61 बार जप करें। मंत्र जप समाप्ति के पश्चात् यंत्र को शुद्ध जल से साफ करें, उस जल को तुलसी के पौधे में डाल दें, ऐसा नित्य करें। प्रयोग समाप्त होने के पश्चात् यंत्र को जल में प्रवाहित कर दें।
6. यदि व्यवसाय रुका हुआ हो, घर में कलह हो तो इसका कारण तंत्र प्रयोग हो सकता है। इसके लिए साधक 16.05.22 को या किसी भी शनिवार को सामने 'छिन्नमस्ता यंत्र' स्थापित कर उपरोक्त ध्यान करने के पश्चात् काली हकीक माला से 5 माला मंत्र जप तीन दिनों तक करें और सामने रखा हुआ जल व्यवसाय स्थल में छिड़क दें तो प्रभाव समाप्त हो जाता है। सामग्री प्रवाहित कर दें।

न्यौछावर- 240/-

आयुर्वेद सुधा

केला

केले का वृक्ष सब जगह प्रसिद्ध है इसलिए इसके विशेष विवेचन की आवश्यकता नही है। इसकी कई जातियां होती हैं, जिसमें हरी छाल वाली जाति, लाल छालवाली जाति, पीली छाल वाली जाति, त्रिकोनी जाति, चम्पा चीनी इत्यादि जातियाँ विशेष प्रसिद्ध हैं।

गुण दोष और प्रभाव – आयुर्वेदिक मत से इसकी जड़ तीखी, कृमिनाशक, पौष्टिक और क्षुधावर्धक होती है। कफ, पित्त, कान का दर्द, मासिक धर्म की अनियमितता, रक्तविकार, मधुमेह, अग्निमांद्य और कुष्ठ की बीमारी में यह बड़ा लाभदायक है। मूत्रमेह रोग में भी यह बहुत मुफीद है। इसके पिंड का रस शीतल और आँतों के लिये संकोचक होता है। यह पेचिश में तथा प्यास, पथरी, बहुमूत्र, कर्णरोग, रक्त विकार और गर्भाशय के रोगों पर भी लाभदायक है। इसके फूल मीठे, कसैले और शीतल होते हैं। ये कृमि नाशक और आँतों को सिकोड़ने वाले होते हैं। वात, पित्त, क्षय और बच्चों की खाँसी में यह लाभदायक है। इसका कच्चा फल कसैला, शीतल, पौष्टिक और संकोचक होता हैं यह वात व कफ पैदा करता है। इसका पका फल मीठा, ठण्डा, पौष्टिक, कोमोद्दीपक और क्षुधावर्धक है। यह शारीरिक सौन्दर्य को बढ़ाने वाला है।

भारत केले की खेती में अग्रणी है। महाराष्ट्र में सर्वाधिक केला पैदा होता है। केला सभी खिलाड़ियों का प्रिय भोजन रहा है।

केले में आयरन की मात्रा अच्छी होती है। रोजना एक केला खाने से एनीमिया का खतरा कम होता है। केले में पर्याप्त मात्रा में मैग्नीशियम पाया जाता है जो अच्छी नींद के लिए फायदेमंद है।

केला में भरपूर मात्रा में फाइबर मौजूद होते हैं जो पाचन क्रिया को बेहतर बनाते हैं।

हमारे शरीर को पर्याप्त मात्रा में विटामिन बी-6 की आवश्यकता होती है ताकि हिमोग्लोबिन और इंसुलिन का निर्माण हो सके। केले में ये पोषक तत्व होने से शरीर की इस आवश्यकता की पूर्ति हो जाती है।

केले में पोटेशियम भरपूर पाया जाता है जोकि रक्त संचार ठीक रखता है और ब्लड प्रेशर कंट्रोल करता है।

भूखे पेट केला नहीं खाना चाहिए। भोजन के बाद केला खाने से ताकत देता है। माँस-पेशियां मजबूत होती हैं एक समय में तीन से अधिक केले नहीं खाने चाहिए। रात को केला खाने से गैस पैदा होती है। त्रिदोष शांति के लिए केला और शक्कर खायें। केले से अजीर्ण होने पर इलायची खायें।

पौष्टिक पदार्थ : केला वीर्यवर्धक, शुक्रवर्धक, नेत्र रोगों में लाभदायक है। केला शक्तिदायक खाद्य है। केले में स्टार्च और शर्करा अधिक होती है। छोटे बच्चों को इसे दूध में मिलाकर दे सकते हैं। केला कफ व रक्तपित्त नाशक है। जहां तक सम्भव हो ताजा पका केला ही खाना सर्वोत्तम है।

आंत्रज्वर : आंत्रज्वर के रोगियों के लिए केला आदर्श भोजन है। यह भूख, प्यास कम करता है।

बालकों की मिट्टी खाने की आदत पका हुआ केला और शहद मिलाकर खिलाने से छूट जाती है।

दाद, खाज, गंज हो तो केले के गुदे को नीम्बू के रस में पीस लें और लगायें, इससे लाभ होता है। लगाने के बाद दाद फूला हुआ लगेगा, लेकिन डरें नहीं, बाँधते रहें। दाद ठीक हो जायेगा।

चोट या रगड़ लगने पर (1) केले के छिलके को बाँध देने से सूजन नहीं बढ़ती। (2) पका हुआ केला और गेहूँ का आटा पानी में गौंद कर गर्म करके लेप करें।

पेट के रोग : विभिन्न प्रकार के जठरान्त्र रोगों में भोजन के रूप में केला खाना रोग निवारण में सहायक है। यह बच्चों और दुर्बल लोगों के लिए पोषक आहार है। बच्चों और बड़ों के हर प्रकार के

व्यर्थ

निर्गुणस्य हतं रूपं दु:शीलस्य हतंकुलम्।
असिद्धस्य हता विद्या अभोगेन हतं धनम्।।

गुणहीन हो तो मनुष्य की सुन्दरता भी व्यर्थ हो जाती है, जो व्यक्ति शील रहित होता है उसके कुल की निन्दा होती है, सिद्धि और शक्ति प्राप्त न हो तो बद्धि व्यर्थ हो जाती है और बुद्धि के बिना विद्या व्यर्थ हो जाती है तथा जिस धन को उपयोग में न लिया जाए वह धन भी व्यर्थ हो जाता है।।

दस्त, जठर शोथ (Gastrirtus), वृहदान्त्र शोथ (Colitis) और आमाशय व्रण (Gastric Ulcer) में भोजन के रूप में केला आरोग्यदायक है। यह अंतड़ियों की सूजन मिटाता है।

जी मिचलाना, अम्लपित्त (पेट से कण्ठों तक जलन) होने पर (1) दो केलों को मथ कर चीनी और इलायची मिला कर खाने से लाभ होता है। (2) पके हुए केले पर घी डाल कर खाने से पित्त की अधिकता शांत होती है।

श्वेत प्रदर : (1) दो केले खाकर ऊपर से दूध में शहद मिलाकर पीने से श्वेत प्रदर में लाभ होता है। (2) एक केला आठ ग्राम घी के साथ सुबह-शाम, दो बार दस दिन तक खायें। केले की दूध में खीर बनाकर खाने से भी लाभ होता है।

हृदशूल : दो केले 15 ग्राम शहद में मिलाकर खाने से हृदय के दर्द में लाभ होता है।

गेस्ट्रिक अल्सर में दूध और केला एक साथ खाने से बहुत लाभ होता है। केला खाते हुए दूध पीयें।

एल्ब्यूमिन तत्व कम हो जाये तो केला खाकर इसकी पूर्ति करें।

दस्त : केला कब्ज करता है। दो केले आधा पाव दही के साथ कुछ दिन खाने से दस्त, पेचिश, संग्रहणी ठीक होती है।

छाले : जीभ पर छाले होने पर एक केला गाय के दूध से बने दही के साथ प्रात:काल सेवन करें।

आग से जलने पर पके हुये केले का पुल्टिस बांधने से जले हुए स्थान पर लाभ पहुंचता है।

मोटा होना : केला स्वप्नदोष और प्रमेह में लाभदायक है। यह शरीर मोटा करता है। दो केले खाकर ऊपर से एक गिलास गर्म दूध तीन महीने नित्य सेवन करने से मोटे हो जाओगे।

पेशाब रुकना : केले के तने का रस चार चम्मच, घी दो चम्मच मिला कर पिलाने से बन्द हुआ पेशाब खुल कर आता है। यह मूत्राघात पर उत्तम नुस्खा है। इस रस में मिला हुआ घी पेट में नहीं ठहर सकता और पेशाब शीघ्र आ जाता है।

क्षय : केले के पेड़ का ताजा रस या सब्जी बनाने वाला कच्चा केला क्षय रोग को दूर कने के लिए रामबाण है। जिसे क्षय रोग हो चुका हो, कष्टदायक खाँसी होती हो, जिसमें अधिक मात्रा में बलगम निकलता हो। उनको केले के मोटे तने के टुकड़े का रस निकाल और छानकर एक-दो कप ताजा रस हर दो घण्टे बाद घूँट-घूँट करके पिलाया जाये। तीन दिन रस बराबर पिलाने से रोगी को बहुत लाभ होगा। दो माह तक इस चिकित्सा से क्षय रोग से छुटकारा मिल सकता है। केले के पेड़ का रस हर 24 घण्टे के बाद ताजा ही निकालना चाहिए। 8-10 ग्राम केले के पत्ते 200 मिलीलीटर पानी में डालकर पड़ा रहने दें। इस पानी को छानकर एक बड़ा चम्मच दिन में तीन बार पिलाते रहने से फेफड़ों में जमी गाढ़ी बलगम पतली होकर निकल जाती है। केले के पत्तों का रस मधु में मिलाकर क्षय के रोगी को पिलाते रहने से भी फेफड़ों के घाव भर जाते हैं। बलगम कम हो जाती है और फेफड़ों से खून आना रुक जाता है।

उच्च रक्त चाप : केले में सोडियम कम होता है, पोटेशियम पर्याप्त होता है जो उच्च रक्त चाप नियंत्रण के लिए आवश्यक है।

शिशु आहार : दूध पीले वाले शिशु के लिए नित्य विटामिन 'सी', नियासीन, राइबोफ्लेविन और थायेमीन की जितनी मात्रा चाहिए, उसका चौथाई भाग एक केले में मिल जाता है।

दमा : दमा के रोगियों को केला कम खाना चाहिए और यह ध्यान रखना चाहिए कि केला खाने से दमा बढ़ता तो नहीं है। दमा यदि बढ़ता हुआ पाया जाये तो केला नहीं खाना चाहिए। दमें में केले से एलर्जी पाई जाती है।

सावधानी : पाचन शक्ति क्षीण, गठिया और मधुमेह के रोगी को केला नहीं देना चाहिए। केला खाने से अजीर्ण हो तो इलायची खायें।

(उपयोग से पूर्व अपने वैद्य की सलाह अवश्य लें)

।। भगवान श्रीलक्ष्मीनृसिंह ।।

स्तवन

श्रीमत्पयोनिधिनिकेतन चक्रपाणे भोगीन्द्रभोगमणिरंजितपुण्यमूर्ते।
योगीश शाश्वत शरण्य भवाब्धिपोत लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम्।।
ब्रह्मेन्द्ररुद्रमरुदर्ककिरीटकोटिसंघट्टिताङ्घ्रिकमलामलकान्तिकान्त ।
लक्ष्मीलसत्कुचसरोरुहराजहंस लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम्।।
संसारघोरगहने चरतो मुरारे मारोग्रभीकरमृगप्रवरार्दितस्य ।
आर्तस्य मत्सरनिदाघनिपीडितस्य लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम्।।
संसारकूपमतिघोरमगाधमूलं सम्प्राप्य दु:खशतसर्पसमाकुलस्व।
दीनस्य देव कृपणापदमागतस्य लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम्।।
संसारसागरविशालकरालकालनक्रग्रहग्रसननिग्रहविग्रहस्य ।
व्यग्रस्य रागरसनोर्मिनिपीडितस्य लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम्।।
संसारवृक्षमघबीजमनन्तकर्मशाखाशतं करणपत्रमनंगपुष्पम् ।
आरुह्य दु:खफलितं पततो दयालो लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम्।।
संसारसर्पघनवक्त्रभयोग्रतीव्रद्रंष्ट्राकरालविषदग्धविनष्टमूर्ते: ।
नागारिवाहन सुधाब्धिनिवास शौरे लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम्।।

'क्षीरसमुद्र में भगवती लक्ष्मी के साथ निवास करने वाले, हाथ में चक्र धारण करने वाले, नागनाथ (शेषजी) के फणों की मणियों से देदीप्यमान मनोहर मूर्तिवाले सनातन योगीश शरणागतवत्सल! संसार सागर के लिये नौकास्वरूप श्रीलक्ष्मीनृसिंह! आप मुझे अपने करकमल का सहारा दीजिये। आपके चरण कमल सुनिर्मल हैं। वे ब्रह्मा, इन्द्र, रुद्र, मरुत् और सूर्य आदि के किरीटों के अग्रभाग के द्वारा घर्षित होते रहते हैं। हे श्री लक्ष्मीजी के हृदय कमल के राजहंस श्रीलक्ष्मीनृसिंह! मुझे अपने करकमल का सहारा दीजिये। हे मुरारे! संसाररूप गहन वन में विचरते हुए कामदेवरूप अति उग्र और भयानक मृगराज से पीड़ित तथा मत्सररूप ग्रीष्म से संतप्त मुझ अति आर्त्तको हे लक्ष्मीनृसिंह! अपने करकमल का सहारा दीजिये। संसाररूप अति भयानक और अगाध कूप के मूल में पहुँचकर जो सैकड़ों प्रकार के दु:ख रूप सर्पों से व्याकुल और अत्यंत दीन हो रहा है, उस अति कृपण और आपत्ति ग्रस्त मुझको हे लक्ष्मीनृसिंह देव। आप अपने करकमल का सहारा दीजिये। हे दयालो! पाप जिसका बीज है, अनन्त कर्म सैकड़ों शाखाएं हैं, इन्द्रियाँ पत्तें हैं, कामदेव पुष्प है तथा दु:ख ही जिसका फल है, ऐसे संसाररूप वृक्ष पर चढ़कर मुझ नीचे गिरते हुए को हे लक्ष्मीनृसिंह! अपने करकमल का सहारा दीजिये। इस संसार सर्प के विकट मुख की भयरूप उग्र दाढ़ों के कराल विष से दग्ध होकर नष्ट हुए मुझको हे गरुड़ वाहन, क्षीरसागरशायी, विष्णुकृष्ण! श्रीलक्ष्मीनृसिंह! आप अपने करकमल का सहारा दीजिये।

संसारदावदहनातुरभीकरोरुज्वालावलीभिरतिदग्धतनूरुहस्य ।
त्वत्पादपद्मसरसी शरणागतस्य लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम्।।
संसारजालपतितस्य जगन्निवास सर्वेन्द्रियार्तवडिशार्थझषोपमस्य।
प्रोत्खण्डितप्रचुरतालुकमस्तकस्य लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम्।।
संसारभीकरकरीन्द्रकराभिघातनिष्पिष्टमर्मवपुषः सकलार्तिनाश!
प्राणप्रयाणभवभीतिसमाकुलस्य लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम्।।
अन्धस्य मे हतविवेकमहाधनस्य चौरैः प्रभो वलिभिरिन्द्रियनामधेयैः।
मोहान्धकूपकुहरे विनिपातितस्य लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम्।।
लक्ष्मीपते कमलनाभ सुरेश विष्णो वैकुण्ठ कृष्ण मधुसूदन पुष्कराक्ष!
ब्रह्मण्य केशव जनार्दन वासुदेव देवेश देहि कृपणस्य करावलम्बम्।।
यन्मcraftsman

संसाररूप दावानलके दाह से अति आतुर और उसकी भयंकर तथा विशाल ज्वालमालाओं जिसके रोग दग्ध हो रहे हैं तथा जिसने आपके युग्मचरणकमलरूप सरोवरों की शरण ली है, ऐसे मुझको हे लक्ष्मीनृसिंह! अपने करकमल का सहारा दीजिये। जगनिवास! सकल इन्द्रियों के विषयरूप बंसी (में फँसने) के लिये मत्स्य के अमान संसारपाश में पड़कर जिसके तालु और मस्तक खण्डित हो गये हैं, ऐसे मुझको हे लक्ष्मीनृसिंह! अपने करकमल का सहारा दीजिये। हे सकलातिनाशन! संसाररूप भयानक गजराज को सूँड के आधात से जिसके मर्मस्थान कुचले गये हैं तथा जो प्राण-प्रयाण के सदृश संसार (जन्म-मरण) के भय से अति व्याकुल है, ऐसे मुझको हे लक्ष्मी-नृसिंह! अपने करकमल का सहारा दीजिये। प्रभो! इन्द्रियनामक प्रबल चोरों ने जिसके विवेकरूप परमधन को हर लिया है तथा मोहरूप अन्धकूप के गड्ढे में जो गिरा दिया गया है, ऐसे मुझ अंधे को हे लक्ष्मीनृसिंह! आप अपने करकमल का सहारा दीजिये। हे लक्ष्मीपते! कमलनाभ! देवेश्वर! विष्णो! बैकुण्ठ! कृष्ण! मधुसूदन! कमलनयन ब्रह्मण्य! केशव! जनार्दन! वासुदेव! देवेश! आप मुझ दीन को अपने करकमल का सहारा दीजिये। जिसका स्वरूप विश्वास से ही प्रकट हुआ है, उस प्रचुर संसार प्रवाह में डूबे हुए पुरुषों के लिये जो इस लोक में अति बलवान परावलम्बरूप है, ऐसा यह सुखप्रद स्तोत्र इस पृथ्वी तल पर लक्ष्मीनृसिंह के चरणकमल के लिये मधुकररूप शंकर (शंकराचार्य जी) ने रचा है।'

(आचार्यशंकरकृत लक्ष्मीनृसिंहस्तोत्र)

इस प्रकृति में व्यर्थ कुछ घटित होता ही नहीं। पूर्ण ललक, चैतन्यता व आत्मविश्वास का आश्रय लेकर साधना क्षेत्र में उतरने वालों को भी अनेक विसंगतियों का सामना करना ही पड़ता है, पर अन्ततः उनके एकनिष्ठ भाव के समक्ष प्रकृति के रहस्य भी अपनी गोपनीयता प्रकट कर ही देते हैं.....

....और तब फिर एक ही राह शेष रह जाती है....

....एक साधक के जीवन की सत्य अनुभूति....

साधना सिद्धि दीक्षा

काशी का महिमामण्डित गंगा तीर! साधक वेशधारी वह श्यामवर्णीय युवक निर्निमेष दृष्टि से आते-जाते साधु-संन्यासियों के झुण्ड को देख रहा था। घाटों पर कुछ ज्यादा ही भीड़ थी, श्रावणी पर्व जो था। उपलक्ष्य में आबाल, वृद्ध, नर, नारी सभी उमड़ पड़े रहे थे, मानो एक ही दिन में संचित कर्मराशि को भस्मीभूत कर लोकोत्तर जीवन-यात्रा का मार्ग प्रशस्त करने को आतुर हो उठे हों। गंगा-स्नान तो एक निमित्त मात्र ही बना हुआ था। कुछ ही देर में नागा साधुओं के 'हर हर महादेव' के उद्घोष से वातावरण गुंजायमान हो उठा।

क्षुब्ध हृदय साधक उठा और श्मशान घाट की ओर बढ़ चला। असीम शांति के लिये व्याकुल आज उसके मन में खगविहागों के कलरव भी व्याघात उत्पन्न करते लग रहे थे। सब कुछ वही था। इन्हीं खग वृन्दों को नित्य वह घंटों निहारा करता, उन्मुक्त गगन में विहार करते वे पक्षी उसे साक्षात् देवदूत प्रतीत होते, जो उसे साधना जगत में नित्य नवीन ऊंचाइयों को स्पर्श करने की प्रेरणा दे कर ओझल हो जाते। इसी गंगा तट पर कितनी तन्मयता से बैठ कर वह असंख्यों का हित साधन करने की कल्पना संजोया करता।

''क्या हो गया है आज मुझे?''-युवक स्वयं पर ही अचम्भित था, पिछले पांच वर्षों के गहन साधना काल में इतना विक्षुब्ध तो वह कभी नहीं हुआ था-''क्या हुआ जो कल रात्रि में सफलता नहीं मिली, अभी तो साधना का शैशव काल ही है। पता नहीं गुरुदेव की क्या इच्छा है? उन सर्वज्ञ, असीम करुणागार मेरे आराध्य की दिव्य दृष्टि से तो कुछ भी छिपा नहीं, फिर उनकी कृपा-कटाक्ष से मैं किस प्रकार वंचित रह गया? स्मरण मात्र से सिद्धि प्रदान करने वाले मेरे ईश्वर तुल्य गुरुदेव की दृष्टि अभी तक मुझ पर क्यों नहीं पड़ी?''

-यह तरंग उठते ही युवक का मुखमण्डल अश्रु प्रवाह से भींग उठा और आंसुओं की धारा में उसे अपना विगत घूमता हुआ दिखाई देने लगा-

''तुम निश्चय ही स्वर्ण खण्ड हो, पर मिट्टी और कीचड़ से लथपथ, उबड़-खाबड़, कान्तिहीन। तुम्हें तो आवश्यकता है स्वर्णकार की, तराशने की और मैं यही कर रहा हूं, परीक्षा की अग्नि में झोंक रहा है, कि तप पर तुम कुन्दन बन सको। पर ध्यान रहे, घबरा मत जाना, दृढ़ता पूर्वक जमे रहना।''-गुरु की पारखी नजरों ने क्षण भर में ही शिष्य की आन्तरिक तपः ऊर्जा को भांप लिया था।

इन्हीं शब्दों ने उसे बींध कर रख दिया था, इन्हीं शब्दों के साथ वे उसके अन्तर्मन में प्रवेश कर गये थे। अब उसके जीवन का एकमात्र लक्ष्य था साधना समुद्र में पूर्णरूपेण स्वयं को निमग्न कर देना, ज्ञान के अथाह मानसरोवर में अवगाहन कर कुछ दुर्लभ मोती प्राप्त कर लेना और अनन्तर परमार्थ के लिए स्वयं को लुटा कर एक आदर्श स्थापित करना। इसके लिए अपना समग्र जीवन वह गुरु चरणों में प्रस्तुत करने को तत्पर था।

गुरु दीक्षा के उपरान्त घर लौट कर सर्वप्रथम एकांत स्थान का चयन किया और रात्रिकालीन समय एकमात्र साधना के लिए ही समर्पित करने का निश्चय कर लिया। उसने गुरु मंत्र का एक पुरश्चरण सम्पन्न कर अपने अन्तर-बाह्य को पवित्र व दिव्य बनाने का प्रयास किया। इसके उपरान्त अन्य कई लघु साधनाएं भी सम्पन्न कीं और उनमें सफलीभूत भी हुआ, पर मन में जरा भी तृप्ति न थी।
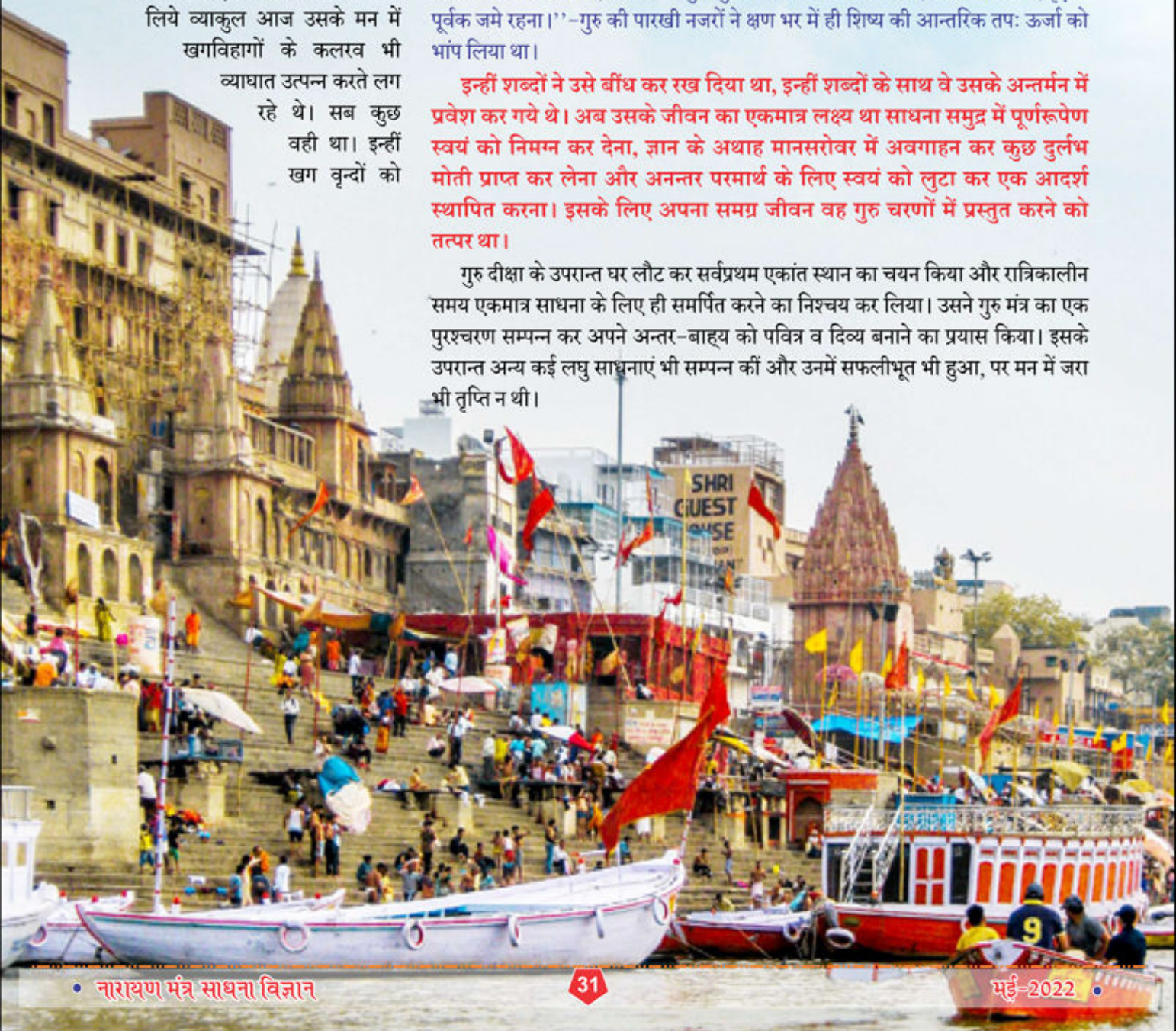
पिछले पांच जीवन के प्रत्येक दृश्य वह चलचित्र की भांति स्पष्ट देख रहा था; निष्कपटता के मीठे, गुदगुदे छद्म आवरण को अपने ऊपर ओढ़े वह भूल गया था, कि पिछले जन्मों में वह इतना पतित रहा होगा। आत्मग्लानि से भरा साधक का अन्तर्मन रो पड़ा, उसकी आत्मा स्वयं को धिक्कारने लगी।

''इन छोटी-छोटी अप्सराओं, यक्षिणियों या भैरव की साधनाओं में जीवन खपाने की अपेक्षा एकनिष्ठ भाव से किसी महाविद्या को सिद्ध करने का प्रयत्न करना चाहिए। तभी मैं प्रकृति के उन सूक्ष्म गोपनीय रहस्यों को भेद पाऊंगा, तभी मेरा इस क्षेत्र में आना सार्थक हो सकेगा।''

अशरीरी देवदूत का आगमन

इसी मनःसंकल्प के साथ एक दिन एकांत साधना कक्ष में प्रातःकालीन गुरु वंदना, स्तुति सम्पन्न कर रहा था, एकाएक पूजा कक्ष की खिड़की से एक छायाकृति को प्रविष्ट होते देखा। वह छायामूर्ति उससे लगभग छः फीट की दूरी पर आ कर उसके समक्ष खड़ी हो गई। द्वार भीतर से बंद था और कक्ष की खिड़कियों पर लोहे की छड़ें लगी हुई थीं, अतः सामने खड़ी मानव-मूर्ति के स्थूल देहधारी होने की सम्भावना समाप्त हो गई। मन में आया-''अवश्य ही ये कोई दिव्य देहधारी महापुरुष हैं और किसी विशिष्ट प्रयोजन से ही यहां उपस्थित हुए हैं।'

मन में यह विचार उठते ही उस छायामूर्ति ने स्निग्ध मुस्कुराहट बिखेर दी, स्वीकृति में सिर हिलाया और कहा-''तुम्हारी उपासना और अकुलाहट साधना जगत के लिए अत्यन्त श्रेष्ठ है। मेरा परिचय मात्र इतना ही समझ लो, कि मैं एक सूक्ष्म देहधारी तुम्हारा ही वरिष्ठ संन्यस्त गुरुभ्राता हूं और परम पूज्य गुरुदेव की आज्ञा से तुम्हारे समक्ष उपस्थित हुआहूं। गुरुदेव ने तुम्हें काशीधाम जा कर भगवती त्रिपुर सुन्दरी की आराधना करने की अनुमति दे दी है, इसी संदेश का प्रेषण मेरे द्वारा होना था'-इतना कहकर वह छायामूर्ति अन्तर्धान हो गई।

दिव्य अशरीरी सूक्ष्म सत्ता से युवा साधक का वह प्रथम संस्पर्श सम्भाषण था, प्रसन्नता के आवेग से उसके पांव धरा पर पड़ ही नहीं रहे थे। मन ही मन गुरु चरणों में प्रणिपात कर वह वाराणसी नगरी को प्रस्थान कर गया। संयोग से यहीं त्रिपुरा भैरवी मुहल्ले में उसके अग्रज भ्राता निवास कर रहे थे। स्वयं आध्यात्मिक प्रकृति का होने के कारण उन्होंने अपने अनुज को सहर्ष ही अपने पास रख लिया और उसकी एकांत साधना की व्यवस्था भी कर दी।

नित्य प्रति ब्रह्म मुहूर्त में गुरु उपासना कर गंगा सेवन करने जाना और महानिशा काल में अत्यन्त गुप्त भाव से भगवती की साधना में तल्लीन हो जाना-यही उसकी नियमित दिनचर्या थी। अनेक स्थानों में सूक्ष्म शरीर से अद्भुत घटनाएं भी उसने देखीं, नाना प्रकार के देवगण, सिद्ध पुरुष, दिव्य वन-उपवन, ज्योर्तिमय धाम, बहुत कुछ उसके दृश्य पटल के सामने से गुजरता। यदि साधारण व्यक्ति इनमें से किसी एक स्थान को भी देखता, तो मुग्ध हो उठता, मगर युवा साधक जिस वस्तु को व्याकुल भाव से खोज रहा था, उसको समग्र विश्व में कोने-कोने में खोजने पर भी कहीं भी न पाने से वह जरा भी तृप्त नहीं हो पा रहा था।

साधना का पुरश्चरण छः माह की अवधि का था। प्रथम पुरश्चरण यों ही बिना किसी अनुभूति के व्यतीत हो गया। साधक पुनः अपनी साधना में दत्त-चित्त हो गया। उसका लक्ष्य उसकी आंखों के सामने स्पष्ट था और मन में दृढ़ निश्चय था, कि मुझे इसी जीवन में भगवती के साक्षात् दर्शन कर उन्हें सम्पूर्ण करुणा व सोलह श्रृंगार के साथ अपने भीतर समाहित कर लेना है। इसी प्रकार क्रमशः दूसरा, तीसरा व चौथा पुरश्चरण भी समाप्त हो गया, परन्तु इतनी कठिन तपस्या के बाद भी साधक के चेहरे पर न तो कोई झुंझलाहट थी, न बेचैनी, न पीड़ा, बस एक ही भाव, कि मुझे भगवती के प्रत्यक्ष दर्शन कर उनको अपने जीवन में उतार ही लेना है।

और कल रात्रि को उसका पांचवां पुरश्चरण भी बिना इष्ट प्रत्यक्षीकरण के समाप्त हो गया, इसी से मन बार-बार उद्वेलित हो रहा था जो हठ, आग्रह तेजस्विता और धैर्य उसका अवलम्बन थे, वे समाप्त हो चुके थे। बुद्धि बार-बार उसे साधना पथ से विमुख करने की चेष्टा कर रही थी-'क्या मिला यौवन के कीमती चार वर्ष गंवा कर? क्या मैं इतना अधम हूं, कि पूर्ण निष्ठा व विधि-विधान के साथ मंत्र जप करने के बाद भी सफलता का कोई चिह्न दिखाई नहीं देता? आखिर मुझसे कहां त्रुटि रह गई?'

'पर अब तो पीछे लौटना भी सम्भव नहीं। इस प्रकार असफल हो कर तो मैं संसार के समक्ष नहीं जा पाऊंगा। घर के द्वार मैंने स्वयं बंद किये थे और प्रारब्ध ने सिद्धि के द्वार बन्द कर रखे हैं। अवश्य ही विधाता प्रतिकूल है। कुछ भी हो, अमूल्य जीवन को इस प्रकार व्यर्थ में नष्ट करने का कोई प्रयोजन नहीं।'

क्या मेरे भाग्य में सिद्धि का वरदान नहीं।
इस दारुण वेदना की अवस्था में एकमात्र आप
ही तो मेरा सम्बल हैं, मेरे गुरु, मेरे पथ प्रदर्शक हैं,
फिर आपकी कृपा दृष्टि आखिर
कब मुझ पर पड़ेगी।'
अशांत हृदय से रोते-रोते
तपस्वी अपने आसन पर गिर पड़ा।

विगत जीवन का दृश्यावलोकन

अशांत मन से बुदबुदाते हुए, क्लान्त अवस्था में युवा तपस्वी वापस पूजा कक्ष में प्रविष्ट हो गया और उसने द्वार बंद कर लिया। मन में सोचने -विचारने की क्षमता समाप्त हो चुकी थी। पथराई आंखों से सामने स्थापित गुरु चित्र को देखा और अन्तर में घनीभूत सारी वेदना अश्रुओं के रूप में बाहर निकल पड़ी। अत्यन्त दीन भाव से वह अपना सिर गुरु चरणों में टिकाये फूट-फूट कर रोने लगा। आंखों में अबोध शिशु के समान आग्रह और कातरता उतर आयी, जो बार-बार मानो पूछ रही थी-''क्या जीवन पर्यन्त इसी प्रकार इष्ट दर्शन को तरसता ही रहूंगा? क्या मेरे भाग्य में सिद्धि का वरदान नहीं। इस दारुण वेदना की अवस्था में एकमात्र आप ही तो मेरा सम्बल हैं, मेरे गुरु, मेरे पथ प्रदर्शक हैं, फिर आपकी कृपा दृष्टि आखिर कब मुझ पर पड़ेगी।' अशांत हृदय से रोते-रोते तपस्वी अपने आसन पर गिर पड़ा।

एकांत कक्ष में सर्वत्र पद्मगंध की दिव्यता आप्लावित हो चुकी थी। साधक का अस्तित्व उस विराट् सूक्ष्म सत्ता से जुड़ कर एक के बाद एक दृश्यों का अवलोकन कर उठा। अतीत की रहस्यमय परतें उखड़ती जा रही थीं। कब, कैसे, कहां उसने जन्म लिये, किन दुष्कर्मों के फलस्वरूप बारम्बार जन्म-मृत्यु के चक्रों से गुजरता रहा और अन्ततः इस बार सद्गुरु चरणों का आश्रय मिल सका। पिछले पांच जीवन के प्रत्येक दृश्य वह चलचित्र की भांति स्पष्ट देख रहा था, हर जीवन में पाप कृत्यों का समावेश था, निष्कपटता के मीठे, गुदगुदे छद्म आवरण को अपने ऊपर ओढ़े वह भूल गया था, कि पिछले जन्मों में वह इतना पतित रहा होगा। अत्मग्लानि से भरा साधक का अन्तर्मन रो पड़ा, उसकी आत्मा स्वयं को धिक्कारने लगी, अपराध बोध से भरा वह स्वयं को क्षमा करने के योग्य भी नहीं पा रहा था, देव दर्शन तो कल्पना से भी परे था।

पुनः उसी दिव्य देहधारी महापुरुष की मूर्ति सामने प्रत्यक्ष हुई, वाणी में वही निश्छल प्रेम, वही स्निग्धता –**''तपस्वी! उठो, तुमने स्वयं देख लिया। तुम्हारे एक-एक पुरश्चरण से पिछले पांच जन्मों के पाप कर्मों का परिशोधन हुआ है। पांच जन्मों के संचित पाप प्रारब्धों के दुष्परिणाम पिछले तीन वर्षों की साधना से नष्ट हुए हैं, तुम्हारा एक भी मंत्र जप व्यर्थ कभी नहीं गया, अपितु तुम्हारे ही परिष्कार में व्यय होता रहा है।'**

'इसीलिए विवेकशील साधक किसी भी साधना में प्रवृत्त होने से पूर्व गुरुदेव को प्रसन्न कर उनसे आग्रहपूर्वक **'पापमोचनी दीक्षा'** प्राप्त कर लेते हैं, इसके अनन्तर **'साधना सिद्धि दीक्षा'** रूपी वरदान ले कर ही मंत्र जप का प्रारम्भ करते हैं, ताकि सिद्धि फलीभूत होने में तनिक भी संदेह या विलम्ब न हो। तुम अपने आत्माभिमान व दर्प के कारण ही इस तथ्य को समझ नहीं सके और बार-बार असफलता का सामना करना पड़ा...''

''....पर अब नैराश्य को स्थान मत दो, गुरुदेव निरन्तर तुम्हें अपनी कृपा दृष्टि से सिंचित कर रहे हैं, तुम्हारे एक-एक पल का हिसाब उनके पास है, नये सिरे से पुनः साधना प्रारम्भ करो, सिंचित प्रारब्ध की निवृत्ति हो चुकने के कारण इस बार तुम्हें देवी का साक्षात्कार होना ही है।''

''महाविद्या साधना इतनी हल्की नहीं है, कि उसे जब चाहें, तब सिद्ध कर लें, षोडशी साधना के लिए स्वयं देवतामय बनना पड़ता है, साधक को प्रारम्भ में ही काम, क्रोध, ईर्ष्या, अहंकार इत्यादि पाशों से स्वयं को सर्वथा मुक्त कर लेना पड़ता है, तभी साधना की प्रारम्भिक भाव-भूमि स्पष्ट होती है। आज गुरु चरणों में अश्रुपात के रूप में तुम्हारा अहंकार ही विगलित हुआ है, इसी श्रेष्ठ स्तर तक लाने के लिए तुमसे इतनी तपस्या करवानी पड़ी। अब पूर्ण मनोयोग पूर्वक भगवती के ही चिन्तन, उन्हीं के स्तवन, मंत्र जप में लीन हो जाओ, सिद्धि जयमाल लिये सम्मुख खड़ी मिलेगी। गुरुदेव का यही आशीर्वाद मैं तुम्हारे लिये लेकर आया हूँ।''

युवा तपस्वी के मन का मालिन्य दूर हो चुका था, साष्टांग गुरु चरणों में प्रणिपात करते हुए वह पुनः अश्रुप्रवाह में डूब गया... पर वे अश्रु अब विषाद के नहीं, अनन्त प्रसन्नता व उल्लास के परिचायक थे।

शिष्य के जीवन में गुरु ही सर्वस्व होता है। इसलिए देवी-देवताओं की साधना करने के साथ गुरु साधना को ही जीवन में प्राथमिकता देनी चाहिए।

शिष्य धर्म

शिष्य के जीवन में गुरु ही सर्वस्व होता है। इसलिए देवी देवताओं की साधना करने की अपेक्षा, गुरु साधना को ही सभी सफलताओं की कुंजी समझता है। किसी भी व्यक्ति के लिए जन्म लेना महान घटना नहीं है, ऐसा सद्गुरुदेव ने कई बार कहा है। जब हम दीक्षा लेते हैं तो एक घटना अवश्य घटती है क्योंकि पूर्व जन्म से छूटा हुआ सम्बन्ध सद्गुरु से पुन: स्थापित होता है। उस क्षण के साथ सद्गुरुदेव कहते हैं–'त्वं देह मम देह, त्वं प्राण मम प्राण त्वं चित्ते मम चित्ते।' इसके बाद शिष्य सद्गुरु चेतना से युक्त होकर उनके ज्ञान का प्रकाश जगत में फैलाता है और वही सच्चा शिष्य है।

- क्या प्रत्येक शिष्य ने गुरुदेव की प्राणश्चेतना स्वरूप 'नारायण मंत्र साधना विज्ञान' पत्रिका के प्रचार-प्रसार हेतु दस, बीस, पचास नए सदस्य जोड़े हैं?
- संगठन में ही शक्ति होती है, अत: क्या आपने अपने स्थान पर गुरु भाइयों के साथ एकत्र होकर एक संगठन बनाकर गुरु कार्य को आगे बढ़ा रहे हैं?
- क्या प्रत्येक सप्ताह विधि-विधान से गुरु-पूजन किया है एवं प्रत्येक माह की 21 तारीख को सभी गुरु भाई इकट्ठे होकर हवन पूजन एवं प्रसाद वितरण का कार्यक्रम करते हैं?
- क्या शिष्य संगठन ने अपने-अपने स्थान पर साधनात्मक शिविर आयोजन करने का निश्चय किया है?
- शिविर के माध्यम से शिष्य अपने गुरु को विवश कर देता है, कि गुरु उसके स्थान पर पधारें, इसीलिए तो सद्गुरुदेव का प्रिय भजन था–'गुरुवर। तुमसे मिलने का शिविर बहाना है।'
- क्या शिष्य कर्त्तव्य की पूर्ति में गुरु साहित्य मंगवाकर धर्म प्रेमी बंधु-मित्रों इत्यादि को देने का प्रयास किया है।
- क्या आप गुरु सान्निध्य प्राप्त करने हेतु एवं गुरुधाम शक्ति पीठ के दर्शन हेतु कम से कम वर्ष में एक बार गुरुधाम जोधपुर आते हैं?

ये सारे प्रश्न हैं, जिनका उत्तर अपना मस्तक झुकाकर हृदय में स्वयं झांकिए, तो हृदय से ही इसका उत्तर प्राप्त होगा। शिष्य जब योग्य हो जाता है, तो बार-बार गुरु को उसका कान पकड़कर सिखाने की आवश्यकता नहीं रहती है। विचार कीजिए, मनन कीजिए, अपने आपको कभी भी अकेला अनुभव नहीं करें, क्योंकि सद्गुरु तो सदैव हृदय में विराजमान हैं।

जो शिष्य अपने अहम, छल, कपट आदि को छोड़कर भौतिक श्रेष्ठताओं को भुलाकर गुरुचरणों में झुक जाता है वही सफल होता है।

गुरु वाणी

- सद्‌गुरु एक सूर्य के समान, एक दीपक के समान शिष्य के जीवन में प्रवेश करता है जिससे शिष्य का मोह, अज्ञान, वासना रूपी अंधकार समाप्त हो सके तथा वह आध्यात्मिक उच्चता एवं श्रेष्ठता के मार्ग पर अग्रसर हो सके।
- परंतु केवल सद्‌गुरुदेव से मिलने या उनकी जय जयकार करने या उनके चरण स्पर्श करने से यह रूपांतरण संभव नहीं है। इसके लिए तो आवश्यक है कि गुरु के हृदय से जुड़ने की क्रिया हो। शिष्य सद्‌गुरु को अपने हृदय में स्थापित कर ले और ऐसा स्थापित कर ले कि फिर सद्‌गुरु के अलावा किसी और चीज के लिए स्थान ही न हो।
- अगर आपके हृदय में पहले से ही बहुत कुछ स्थापित हैं, देवी-देवता या कोई भी अन्य तो सद्‌गुरु वहां स्थापित नहीं हो सकता।
- प्रेम गलि अति सांकरी तामे दोऊ न समाए।
- जब हृदय स्वच्छ होगा, उसमें छल, झूठ, व्याभिचार, द्वेष कुछ नहीं होगा तभी सद्‌गुरु का प्रवेश संभव है।

  फिर शिष्य हर क्षण सद्‌गुरु का स्मरण करता रहें। हर क्षण केवल उनका ही ध्यान रहे, चाहे फिर वह कोई भी कार्य करने में संलग्न क्यों न हो। जिस प्रकार एक पहिया घूमता रहता है परंतु उसकी धुरी स्थिर रहती है उसी प्रकार शिष्य संसार के समस्त क्रियाओं में संलग्न रहता हुआ निरंतर क्रियाशील बना रहता है परंतु उसका मन सदा सद्‌गुरु में स्थिर रहता है।
- जब ऐसी स्थिति जीवन में उपस्थित होती है तो सद्‌गुरु दूर रहते हुए भी शिष्य का मार्गदर्शन करते रहते हैं। तब शिष्य स्वयं अनुभव करता है कि उसके हर कार्य में सद्‌गुरु सहायक हो रहे हैं तथा उसकी हर क्षण विपदाओं से रक्षा कर रहे हैं।

ऐसे प्रमुख गुणों से युक्त ग्रह है रवि पुत्र

जिनकी साधना, आराधना और अनुकूलता से व्यक्ति पूर्णत: भयमुक्त होकर अपने जीवन में उत्तरोत्तर प्रगति करता ही रहता है। शनि से डरने की आवश्यकता नहीं है, उसे अपने अनुकूल बनाकर शनि को अपने जीवन में उतार कर तीव्रता और तेजस्विता लायें। इसी दृष्टि से प्रस्तुत है शनि के विभिन्न स्थितियों पर विवेचना करता हुआ यह आलेख

चराचर माया ने जब सूर्य नारायण की छाया से गर्भ धारण किया, तब शनि देव उत्पन्न हुए, अत: मां माया और पिता सूर्य होने के कारण उन्हें 'सूर्य पुत्र' कहा गया

शनि को ज्योतिष में 'विच्छेदात्मक ग्रह' माना गया है। जहां एक ओर शनि मृत्यु प्रधान ग्रह माना गया है, वहीं शनि दूसरी ओर शुभ होने पर भौतिक जीवन में श्रेष्ठता भी देता है।

भारतीय समाज में कुछ कहावतें शनि को लेकर प्रचलित हैं, जैसे - व्यापार चौपट हो तो शनि का प्रभाव है, आज कल तो शनि का चक्कर है या किसी व्यक्ति को सम्बोधित करते हुए कह देते हैं कि यह तो शनि की तरह मेरे पीछे पड़ गया है। दो चार ढोंगी ज्योतिषी भी ऐसे होते हैं, जो लोगों को शनि की दशा बताकर भयभीत कर देते हैं, जैसे आपके भाग्य पर शनि की क्रूर दृष्टि है, लाभ स्थान पर नीच का शनि है, कर्म भाव पर शनि वक्री है तथा शनि की साढ़े साती को सुनकर ही जातक का हृदय कांप उठता है।

शनि सर्वाधिक मैलाफाइड, अकस्मात, कुप्रभाव देने वाला ग्रह माना जाता है, अत: भय तो सहज स्वाभाविक है। यह समय मृत्यु, अकाल मृत्यु, रोग, भिन्न-भिन्न कष्ट, व्यवसाय हानि, अपमान, धोखा, द्वेष, ईर्ष्या का कारण माना जाता है, पर वास्तविकता यह नहीं है, सूर्य पुत्र शनि हानिकारक न होकर लाभदायक भी सिद्ध होता है, क्योंकि

1. शनि तुरंत एवं निश्चित फल देता है।
2. शनि सन्तुलन तथा न्यायप्रिय है।
3. शनि शुभ होकर मनुष्य को अत्यन्त व्यवस्थित व्यवहारिक, घोर परिश्रमी, गम्भीर एवं स्पष्ट वक्ता बना देता है।
4. संकुचित व्यक्ति, भरपूर आत्मविश्वास, प्रबल इच्छा, शक्ति युक्त महत्वाकांक्षी, मितव्ययिता पूर्ण आचरण करने वाला, हर कार्य में सावधान रहने वाला व्यक्ति ही व्यवसाय में चतुर तथा कार्यपटु होता है।
5. मनुष्य का भेद लेने में शनि प्रधान व्यक्ति दक्ष होता है।
6. शनि प्रधान व्यक्ति, सामाजिक व आर्थिक क्रांति के प्रयत्नपूर्ण, त्यागमयी जीवन व्यतीत करने वाले, पूर्ण सामाजिक व मिलनसार, परोपकार व कार्यों में समय व्यतीत करने वाले, लोक-कल्याण के सतत कार्य संलग्न, विद्वान, मंत्री, उदारमना तथा पवित्रतापूर्ण जीवन व्यतीत करते हैं।
7. आध्यात्मवाद की ओर विशेष झुकाव होता है।

शनि सर्वदा प्रभु भक्तों को अभय दान देते हैं और उनकी हर प्रकार से रक्षा करते हैं। शनि समस्त सिद्धियों के दाता हैं। उपासना द्वारा सहज ही प्रसन्न होते हैं और अपने भक्तों की समस्त कामनाओं को पूरा करते हैं।

शनि दुष्प्रभाव

शनि का दुष्प्रभाव निश्चय ही भीषण होता है, और कुछ दुष्प्रभाव विशेष रूप से इस प्रकार हैं-

- अच्छे खासे चलते हुए व्यापार में अचानक भयंकर घाटा हो जाना।
- कर सम्बन्धी कोई गम्भीर प्रभाव आ जाना अर्थात् किसी सरकारी कर विभाग द्वारा गम्भीर जांच और उसके कारण से बड़ी परेशानी।
- घर या व्यापार स्थल पर आग अथवा ऐसा कोई दुष्प्रभाव होना, जिससे कार्य पूरी तरह नष्ट हो जाए। प्रतिष्ठा को पूरी तरह से कलंक लग जाना।
- परिवार के किसी प्रमुख सदस्य की आकस्मिक दुर्घटना अथवा अचानक किसी गम्भीर बीमारी का शिकार हो जाना।
- अचानक मुकदमेबाजी हो जाना।
  ऐसा कोई निर्णय ले लेना, जो कि जीवन को गलत दिशा में मोड़ दे।
- किसी मित्र अथवा नौकर द्वारा विश्वासघात।

....

प्रत्येक व्यक्ति जो इस ग्रह-दोष से पीड़ित एवं दु:खी हो, उसे दिनोक 30.05.22 'शनि जयंती' के दिन या फिर किसी भी शनिवार के दिन इस प्रयोग को अवश्य ही सम्पन्न करना

शनि सर्वदा प्रभु भक्तों को अभय दान देते हैं
और उनकी हर प्रकार से रक्षा करते हैं।
शनि समस्त सिद्धियों के दाता हैं। उपासना द्वारा सहज ही
प्रसन्न होते हैं और अपने
भक्तों की समस्त कामनाओं को पूरा करते हैं।

चाहिए, क्योंकि इसे सम्पन्न करने पर शनि का उस पर अशुभ प्रभाव नहीं पड़ता।

यह प्रयोग शनि के कुप्रभाव को दूर करने वाला एक अत्यन्त ही गोपनीय प्रयोग है। इस प्रयोग को सम्पन्न करने पर शनि की समस्त महादशा व अन्तर्दशाएं शांत होने लग जाती हैं, जिससे उसका कोई अहित नहीं होता।

साधना विधान

1. यह प्रयोग आप 30.05.22 को या उसके बाद किसी भी शनिवार से प्रारम्भ करें। साधना प्रातः ब्रह्म मुहूर्त में अर्थात् पांच बजे प्रारम्भ करें।
2. स्नान कर काले या गहरे नीले वस्त्र धारण करें। गुरु पीताम्बर ओढ़ लें और पूर्व दिशा की ओर मुख कर बैठ जाएं।
3. अपने सामने भूमि पर काजल से त्रिभुज बनाएं। उस पर एक ताम्र पात्र रखें। ताम्र पात्र में काजल से अष्टकमल दल बनाएं और उस पर '**शनि यंत्र**' स्थापित करें।
4. यंत्र पर काजल से रंगे हुए चावल चढ़ाते हुए 'ॐ शं ॐ' मंत्र का उच्चारण करते रहें, इसके पश्चात् निम्न करन्यास तथा हृदयादिन्यास सम्पन्न करें-

कर न्यास-

शनैश्चराय अंगुष्ठाभ्यां नमः।
मन्दगतये तर्जनीभ्यां नमः।
अधोक्षजाय मध्यमाभ्यां नमः।
कृष्णांगाय अनामिकाभ्यां नमः।
शुष्कोदराय कनिष्ठिकाभ्यां नमः।
छायात्मजाय करतल कर पृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यास-

शनैश्चराय हृदयाय नमः।
मन्दगतये शिरसे स्वाहा।
अधोक्षजाय शिखायै वषट्।
शुष्कोदराय नेत्रत्रयाय वोषट्।
छायात्मकजाय अस्त्राय फट्।।

5. '**शनि साफल्य माला**' से निम्न मंत्र की 24 माला मंत्र जप करें-

मंत्र

।। ॐ शं शनैश्चराय सशक्तिकाय सूर्यात्मजाय नमः।।

6. मंत्र जप पूर्ण होने के बाद यंत्र पर तीन काले अथवा नीले रंग के फूल चढ़ाएं, यदि काले रंग के फूल न मिल सके तो सफेद फूल को काजल को तिल के तेल में घोल कर रंग लें।
7. साधना के पश्चात् शनि की प्रार्थना इन दस नामों से करनी चाहिए-

कोणस्थः पिंगलो वभ्रुः कृष्णो रौद्रान्तको यमः
सौरिः शनिश्चरो मन्दः पिप्पलादेन संस्तुतः।
एतानि दश नामानि प्रातरुत्थाय यः पठेत्।
शनिश्चर कृता पीड़ा न कदाचित भविष्यति।।

हिन्दी में इस शनि स्तोत्र का पाठ किया जा सकता है-

कोणस्थ, पिंगल, वभ्रु, कृष्ण, रौद्र, अन्तक, यमः, सौरि, शनिश्चर, मन्द इन दस नामों का उच्चारण जो व्यक्ति प्रातःकाल करता है, उसे शनिदेव पीड़ा नहीं देते। इस का ग्यारह बार पाठ करना चाहिए।

8. हाथ-जोड़ कर श्रद्धापूर्वक निम्न वन्दना करें-

नीलद्युतिं शूलधरं किरीटिनं, गृध्रस्थितं त्रासकरं धनुर्द्धरम।
चतुर्भुजं सूर्यसूतं प्रशान्तं, वन्दे सदाऽभीष्टकरं वरेण्यम्।।

9. साधना समाप्ति के बाद यंत्र तथा माला को उसी स्थान पर रहने दें तथा अगले दिन प्रातः या सायं काल यंत्र के सम्मुख हाथ जोड़कर पुनः उपरोक्त श्लोक का उच्चारण करें तथा 'ॐ शं ॐ' मंत्र बोलते हुए यंत्र व माला को किसी काले वस्त्र में लपेट कर पूजा स्थान रख दें। अगले शनिवार को वस्त्र सहित यंत्र व माला को जल में प्रवाहित कर दें या किसी शनि मन्दिर में चढ़ा दें।

साधना सामग्री- 500/-

वट सावित्री दिवस
12.06.22

सर्व सौभाग्य वृद्धि प्रयोग

यदि किसी स्त्री का पति बीमार हो, दुर्बल हो।

शत्रुओं से परेशान हो, समस्याओं से घिर गया हो।

परिवार में आंतरिक क्लेशों के कारण आपस में ही एक दूसरे के शत्रु बन गये हो।

परिवार में तनाव का वातावरण हो। परिवार विखंडित हो रहा हो।

तो यह प्रयोग सम्पन्न करना चाहिए

सामग्री

सर्वसौभाग्य यंत्र (ताबीज रूप में), सफेद हकीक की माला, एक डिब्बी सिंदूर, घी का दीपक एवं धूप बत्ती

विधान

यह तीन दिन की साधना है। इसे आप 12.06.22 से या किसी सोमवार से प्रारम्भ कर सकती है। इस दिन पूर्व दिशा की ओर मुंह कर बैठें। अपने सामने बाजोट पर पीला वस्त्र बिछायें और एक ताम्रपात्र में सिन्दूर की डिब्बी रख कर, सिन्दूर के ऊपर सर्वसौभाग्य यंत्र रखें फिर उस पर केसर या अष्टगंध से तिलक करें। दीपक लगायें, धूपबत्ती जलायें। गुरु मंत्र की चार माला करके, फिर सफेद हकीक माला से ग्यारह या पांच माला निम्न मंत्र का जप करें।

मंत्र

।। ॐ ह्रीं महादेवताय महायक्षिण्यै मम अखण्ड सौभाग्यं देहि देहि नमः।।

जब तीन दिन का मंत्र जप पूर्ण हो जाए तो सिन्दूर सहित वह यंत्र अपनी संदूक में रख दें। ऐसा करने से उपरोक्त संकट दूर हो जाते हैं।

वस्तुतः प्रत्येक स्त्री को यह प्रयोग सम्पन्न करना चाहिए।

साधना सामग्री-550/-

या कुन्देन्दुतुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता, या वीणावरदण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना।
या ब्रह्माच्युत शंकरप्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता सा, मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा ॥

सरस्वती स्तोत्र

शिक्षा का तात्पर्य है अध्ययन और अध्ययन कर उसका मनन और इस मनन को अपने जीवन में उपयोग लाना ही शिक्षा है, शिक्षा से व्यक्तित्व में एक आत्मविश्वास आता है। प्रत्येक कार्य को सोचने-समझने की क्षमता प्राप्त होती है, मस्तिष्क में ज्ञान की तीव्रता का विकास होता है और जो अपने आप में एक ज्ञान की प्रक्रिया प्रारम्भ कर लेता है, वही गुण कहलाता है, मनुष्य और मनुष्य के बीच में बुद्धि और ज्ञान की रेखा ही उसे साधारण और असाधारण बनाती है।

वाणी में ऐसा ओर और प्रभाव होना चाहिए कि आप अपने सहयोगियों से , अपने अनुयायियों से अथवा अपने अफसर को जो बात कहें वह बात अवश्य माने ही और जो बात आपके ज्ञान में आ जाए वह चिरकाल तक याद रहे, यही तो सरस्वती की कृपा है।

बालको में सीखने-समझने की क्षमता विशेष रूप से होती है इसलिए बालकों को सरस्वती साधना अवश्य करनी चाहिए।

विधि

इस दिन प्रातः ध्यान कर, पूजा स्थान पर अपने सामने पीला वस्त्र बिछाकर पीले चावल की ढेरी पर सरस्वती यंत्र (धारण) स्थापित करें फिर उस पर अष्ट गंध का तिलक लगाकर पूजन करें और निम्न सरस्वती स्तोत्र का 3 पाठ करें। तत्पश्चात् यह सरस्वती यंत्र बालक को धारण करायें, जिससे आपके बालक की बुद्धि का विकास तीव्र गति से हो सके।

सरस्वती स्तोत्र

या कुन्देन्दुतुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता
या वीणावरदण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना ।
या ब्रह्माच्युतशङ्करप्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा।।1।।

आशासु राशीभवदङ्गवल्लीभासैव दासीकृतदुग्धसिन्धुम् ।
मन्दस्मितैर्निन्दितशारदेन्दुं वन्देऽरविन्दासनसुन्दरि त्वाम् ।।2।।

शारदा शारदाम्भोजवदना वदनाम्बुजे ।
सर्वदा सर्वदास्माकं सन्निधिं सन्निधिं क्रियात् ।।3।।

सरस्वतीं च तां नौमि वागधिष्ठातृदेवताम् ।
देवत्वं प्रतिपद्यन्ते यदनुग्रहतो जनाः।।4।।

पातु नो निकषग्रावा मतिहेम्नः सरस्वती ।
प्राज्ञेतरपरिच्छेदं वचसैव करोति या।।5।।

शुक्लां ब्रह्मविचारसारपरमामाद्यां जगद्व्यापिनीं
वीणापुस्तकधारिणीमभयदां जाड्यान्धकारापहाम् ।
हस्ते स्फाटिकमालिकां च दधतीं पद्मासने संस्थितां
वन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं बुद्धिप्रदां शारदाम्।।6।।

वीणाधरे विपुलमङ्गलदानशीले
भक्तार्तिनाशिनि विरिचिंहरीशवन्द्ये ।
कीर्तिप्रदेऽखिलमनोरथदे महार्हे
विद्याप्रदायिनि सरस्वति नौमि नित्यम्।।7।।

श्वेताब्जपूर्णविमलासनसंस्थिते हे श्वेताम्बरावृतमनोहरमंजुगात्रे ।
उद्यन्मनोज्ञसितपङ्कजमंजुलास्ये विद्याप्रदायिनि सरस्वति नौमि नित्यम् ।।8।।

मातस्त्वदीयपदपङ्कजभक्तियुक्ता ये त्वां भजन्ति निखिलानपरान्विहाय।
ते निर्जरत्वमिह यान्ति कलेवरेण भूवह्निवायुगगनाम्बुविनिर्मितेन।।9।।

मोहान्धकारभरिते हृदये मदीये मातः सदैव कुरू वासमुदारभावे ।
स्वीयाखिलावयवनिर्मलसुप्रभाभिः, शीघ्रं विनाशय मनोगतमन्धकारम्।।10।।

ब्रह्मा जगत् सृजति पालयतीन्दिरेशः शम्भुर्विनाशयति देवि तव प्रभावैः ।
न स्यात्कृपा यदि तव प्रकटप्रभावे न स्युः कथञ्चिदपि ते निजकार्यदक्षाः।।11।।

लक्ष्मीर्मेधा धरा पुष्टिर्गौरी तुष्टिः प्रभा धृतिः ।
एताभिः पाहि तनुभिरष्टाभिर्मां सरस्वति।।12।।

सरस्वत्यै नमो नित्यं भद्रकाल्यै नमो नमः ।
वेदवेदान्तवेदाङ्गविद्यास्थानेभ्य एव च।।13।।

सरस्वति महाभागे विद्ये कमललोचने ।
विद्यारुपे विशालाक्षि विद्यां देहि नमोऽस्तु ते।।14।।

यदक्षरं पदं भ्रष्टं मात्राहीनं च यद्भवेत् ।
तत्सर्वं क्षम्यतां देवि प्रसीद परमेश्वरि।।15।।

।। इति श्री सरस्वती स्तोत्रम सम्पूर्णम्।।

भावार्थ

अर्थ-जो कुन्द के फूल, चन्द्रमा और बर्फ के समान श्वेत हैं। जो शुभ्र वस्त्र धारण करती हैं। जिनके हाथ उत्तम वीणा से सुशोभित हैं। जो श्वेत कमल के आसन पर विराजमान रहती हैं। ब्रह्मा, विष्णु, महेश आदि जिनकी सदा स्तुति करते हैं और जो सब प्रकार की जड़ता हर लेती हैं, वे भगवती सरस्वती मेरा पालन करें।।1।।

अर्थ-हे कमल के आसन पर बैठने वाली सुन्दरी सरस्वति ! आप सब दिशाओं में फैली हुई अपनी देहलता की आभा से ही क्षीर सागर को दास बनाने वाली और मंद मुस्कान से शरद ऋतु के चन्द्रमा को तिरस्कृत करने वाली हैं, मैं आपको प्रणाम करता हूँ।।2।।

अर्थ-शरद ऋतु में उत्पन्न कमल के समान मुखवाली और सब मनोरथों को पूर्ण करने वाली शारदा सब सम्पत्तियों के साथ मेरे मुख में सदा निवास करें।।3।।

अर्थ-वाणी की अधिष्ठात्री उन देवी सरस्वती को मैं प्रणाम करता हूँ, जिनकी कृपा से मनुष्य देवता बन जाता है।।4।।

अर्थ-बुद्धि रूपी सोने के लिए कसौटी के समान सरस्वती जी, जो केवल वचन से ही विद्वान और मूर्खों की परीक्षा कर देती हैं, हमलोगों का पालन करें।।5।।

अर्थ-जिनका रूप श्वेत है, जो ब्रह्म विचार की परम तत्व हैं, जो सारे संसार में व्याप्त हैं, जो हाथों में वीणा और पुस्तक धारण किये रहती हैं, अभय देती हैं, जड़ता रूपी अंधकार को दूर करती हैं, हाथ में स्फटिक की माला लिए रहती हैं, कमल के आसन पर विराजमान होती हैं और बुद्धि देने वाली हैं, उन आद्या परमेश्वरि भगवती सरस्वती की मैं वंदना करता हूँ।।6।।

अर्थ-हे वीणा धारण करने वाली, अपार मंगल देने वाली, भक्तों के दु:ख छुड़ाने वाली, ब्रह्मा, विष्णु और शिव से वन्दित होने वाली, कीर्ति तथा मनोरथ देने वाली और विद्या देने वाली पूजनीया सरस्वती ! मैं आपको नित्य प्रणाम करता हूँ।।7।।

अर्थ-हे श्वेत कमलों से भरे हुए निर्मल आसन पर विराजने वाली, श्वेत वस्त्रों से ढके सुन्दर शरीर वाली, खिले हुए सुन्दर श्वेत कमल के समान मंजुल मुख वाली और विद्या देने वाली सरस्वती ! मैं आपको नित्य प्रणाम करता हूँ।।8।।

अर्थ-हे माता ! जो मनुष्य आपके चरण कमलों में भक्ति रखकर और सब देवताओं को छोड़ कर आपका भजन करते हैं, वे पृथ्वी, अग्नि, वायु, आकाश और जल इन पाँच तत्वों के बने शरीर से ही देवता बन जाते हैं।।9।।

अर्थ-हे उदार बुद्धि वाली माँ ! मोह रूपी अंधकार से भरे मेरे हृदय में सदा निवास करें और अपने सब अंगों की निर्मल कान्ति से मेरे मन के अंधकार का शीघ्र नाश कीजिये।।10।।

अर्थ-हे देवि ! आपके ही प्रभाव से ब्रह्मा जगत को बनाते हैं, विष्णु पालते हैं और शिव विनाश करते हैं। हे प्रकट प्रभाव वाली माँ ! यदि इन तीनों पर आपकी कृपा न हो, तो वे किसी प्रकार अपना काम नहीं कर सकते।।11।।

अर्थ-हे सरस्वती ! लक्ष्मी, मेधा, धरा, पुष्टि, गौरी, तुष्टि, प्रभा, धृति इन आठ मूर्तियों से मेरी रक्षा करें।।12।।

अर्थ-सरस्वती को नित्य नमस्कार है, भद्रकाली को नमस्कार है और वेद, वेदान्त, वेदांग तथा विद्याओं के स्थानों को नमस्कार है।।13।।

अर्थ-हे महाभाग्यवती ज्ञानस्वरूपा कमल के समान विशाल नेत्र वाली, ज्ञानदात्री सरस्वती ! मुझे विद्या प्रदान करें, मैं आपको प्रणाम करता हूँ।।14।।

अर्थ-हे देवि ! जो अक्षर, पद अथवा मात्रा छूट गयी हो, उसके लिए क्षमा करें और हे परमेश्वरि ! मुझ पर सदा प्रसन्न रहें।।15।।

।। इति श्री सरस्वती स्तोत्रम सम्पूर्णम्।।

सरस्वती यंत्र- 210/-

शरीर स्वस्थ रखना हम सभी का कर्त्तव्य है

स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन का निवास होता है

योगासन अंदर के शरीर को स्वस्थ रखने की क्रियाएं हैं। जो शरीर बाहर से दिखाई देता है, वह केवल अस्थिपिंजर है और उसे रूप देने के लिए ऊपर मांस है। जब तक हमारा अंदर का शरीर स्वस्थ न होगा, उसका कार्य ठीक न होगा, हम स्वस्थ नहीं रह सकते। हम देखते हैं कि हृदय को 24 घंटे काम करना पड़ता है, एक क्षण का भी आराम नहीं। हृदय को आराम तभी मिल सकता है, जब रक्त को ले जाने और विकार सहित वापस लाने वाले मार्ग बिल्कुल साफ हों। थोड़ी सी रुकावट भी रोग का कारण बन सकती है। हमारे फेफड़े पूरी तरह काम करें और अधिक से अधिक ओषजन वायु ग्रहण कर रक्त को शुद्ध कर सकें। भोजन को पचाने के लिए आमाशय, यकृत, क्लोम तथा अन्य ग्रंथियां अपने पूरे रस दें, ताकि पाचन क्रिया सुचारू रूप से हों, अँतड़ियां भोजन में से पूरे तत्व निकालें। रस, रक्त, मांस, मज्जा, हड्डी, वीर्य इत्यादि शरीर की आवश्यकतानुसार बने।

हमारा नाड़ी संस्थान पुष्ट हो ताकि शरीर के हर कार्य का संचालन सुचारू रूप से हो। विकार अंदर रुकने नहीं पाए, हमारी पकड़ बढ़ जाए। शरीर के अंदर होने वाले हर कार्य की सूचना हमें तुरंत मिले। शरीर सब कुछ बताता है, हमें भूख लगती है, खाना खाते हैं, प्यास लगती है, पानी पीते हैं, थकते हैं तो आराम करते हैं, नींद आती है। शरीर जब भोजन ग्रहण नहीं करना चाहता तो वमन होता है। शरीर किसी विकार को सहन नहीं करता। केवल उसकी ओर ध्यान देने की आवश्यकता है, उसकी आवाज को सुनना है, उसे क्रियाशील करना है।

और

भगाइये शारीरिक मानसिक रोग

दवाई रोग की सूचना देने वाले नाड़ी सूत्रों को सुला देती है, जिससे रोग का प्रभाव दब जाता है और हम मान लेते हैं कि हम स्वस्थ हो गए। योगासनों का विशेष प्रभाव स्नायुमण्डल पर पड़ता है। स्नायुमण्डल, जिसका कंट्रोल मस्तिष्क द्वारा होता है, जितना शिथिल व शक्तिशाली होगा, उतना मन आपका स्वस्थ होगा।

जब हम उसकी ओर ध्यान नहीं देते, तब विकार रोग का रूप धारण करता है और हम भागते हैं दवाइयों की ओर। दवाई क्या करती है? दवाई रोग की सूचना देने वाले नाड़ी सूत्रों को सुला देती है, जिससे रोग का प्रभाव दब जाता है और हम मान लेते हैं कि हम स्वस्थ हो गए। योगासनों का विशेष प्रभाव स्नायुमण्डल पर पड़ता है। स्नायुमण्डल, जिसका कंट्रोल मस्तिष्क द्वारा होता है, जितना शिथिल व शक्तिशाली होगा, उतना मन आपका स्वस्थ होगा। आपकी कार्यक्षमता बढ़ जाएगी और आपका हर कार्य पूरी एकाग्रता से होगा। मानसिक शक्ति के बढ़ जाने से आप अपने कार्य को सुचारू रूप से करने लग जाएंगे। आपके सोचने-विचारने का ढंग ही बदल जाएगा। नकारात्मक की जगह सकारात्मक सोचने की प्रवृत्ति पैदा होगी, जिससे आपका हर कार्य कुशलतापूर्वक सम्पन्न होगा। आप उचित व ठीक निर्णय करने की स्थिति में आ जाएंगे।

गृहस्थी का जीवन समस्याओं से भरा है। जीवन ही एक चुनौती है और चुनौती का सामना करना हमारा धर्म व कर्तव्य है। हर पल समस्याएं हमारे सामने खड़ी हैं, कभी अर्थ की समस्या, कभी बच्चों की समस्या, कभी राशन की समस्या, कभी काम की समस्या और कभी रोगों की समस्या आदि। इन समस्याओं का हल मन व स्वस्थ शरीर से ही निकल सकता है। जब हमारा शरीर स्वस्थ होगा, मन शांत होगा तो हम अपनी समस्याओं का हल स्वयं निकाल लेंगे, हममें निडरता आएगी, भय नहीं सताएगा। क्योंकि आप देखते हैं कि जब आप का कोई काम ठीक हो जाता है, आपकी समस्या हल हो जाती है, तो आप अपने आपको हल्का प्रसन्न अनुभव करते हैं। जब आपके कार्य ठीक ढंग से होने लग जाएंगे तो आपकी प्रसन्नता बनी रहेगी।

जब कभी कोई काम बिगड़ जाएगा, किसी काम का परिणाम ठीक नहीं निकलेगा, तो भी आप शांत रहेंगे और आपको संतोष रहेगा कि मैंने पूरा प्रयास किया था। अपने पर आत्मविश्वास रहेगा। जब आत्मविश्वास, संतोष और प्रसन्नता बनी रहेगी तब वह आनंद का रूप ले लेगी, यही आनंद परमात्मा है और यही योग है।

स्वास्थ्य विशेषज्ञों का कहना है कि व्यायाम न करने से शरीर की मांसपेशियां, नसों तथा अन्य भागों में एक प्रकार की मैल, खड़िया मिट्टी सी जम जाती है, जिसमें लाइमफास्फेट, मैग्नेशिया आदि पदार्थ होते हैं। मनुष्य शरीर के लिए यह मैल विष तुल्य होता है। आयु के अनुपात में यह मैल बढ़ती है और शरीर के यंत्रों को बिगाड़ देती है। इस मैल के जमने से नसें व रक्त नलिकाएं मोटी होकर सिकुड़ जाती हैं, मस्तिष्क का रक्त संचार धीमा हो जाता है, स्मरण शक्ति क्षीण हो जाती है और भ्रम, चिंता, चिड़चिड़ापन आदि विकार उत्पन्न हो जाते हैं। व्यायाम द्वारा इस मल को साफ रखकर ही हम शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य तथा लम्बी आयु प्राप्त कर सकते हैं।

शरीर में इन विजातीय द्रव्यों की मात्रा बढ़ने से निर्जीवता और निर्बलता बढ़ने लगती है। योगासन करने से ये विकार दूर हो जाते हैं, शरीर स्वस्थ होता है, अंतड़ियों पर गहरा प्रभाव पड़ता है, जिससे पेट की अपच, गैस, कब्ज, सड़न आदि रोग नष्ट हो जाते हैं। योगासन करने से चेहरे पर कांति, शरीर में बल, मन में उत्साह और बुद्धि में शक्ति का विकास होता है। यौगिक क्रियाओं द्वारा चित्तवृत्तियों का निरोध होकर समाधि की प्राप्ति होती है। यह स्थिति मानव जीवन की अनोखी सिद्धि है। समस्याओं से घिरा मानव इस स्थिति को प्राप्त कर सुख व शांति का अनुभव करता है। उसके सभी दुःख सदा के लिए दूर हो जाते हैं।

(शेष अगले अंक में)

कालीदास बोले - माते पानी पिला दीजिए बड़ा पुण्य होगा।

स्त्री बोली - बेटा मैं तुम्हें जानती नहीं, अपना परिचय दो। मैं अवश्य पानी पिला दूंगी।

कालीदास ने कहा - मैं पथिक हूँ, कृपया पानी पिला दें।

स्त्री बोली - तुम पथिक कैसे हो सकते हो, पथिक तो केवल दो ही हैं सूर्य व चन्द्रमा, जो कभी रुकते नहीं हमेशा चलते रहते हैं। तुम इनमें से कौन हो, सत्य बताओ ?

कालिदास ने कहा - मैं मेहमान हूँ, कृपया पानी पिला दें।

स्त्री बोली - तुम मेहमान कैसे हो सकते हो ? संसार में दो ही मेहमान हैं। पहला धन और दूसरा यौवन। इन्हें जाने में समय नहीं लगता, सत्य बताओ कौन हो तुम ?

(अब तक के सारे तर्क से पराजित हताश तो हो ही चुके थे।)

कालिदास बोले - मैं सहनशील हूँ। अब आप पानी पिला दें।

स्त्री ने कहा - नहीं, सहनशील तो दो ही हैं। पहली, धरती जो पापी-पुण्यात्मा सबका बोझ सहती है। उसकी छाती चीरकर बीज बो देने से भी अनाज के भंडार देती है, दूसरे पेड़ जिनको पत्थर मारो फिर भी मीठे फल देते हैं। तुम सहनशील नहीं। सच बताओ तुम कौन हो ?

(कालिदास लगभग मूर्छा की स्थिति में आ गए और तर्क-वितर्क से झल्लाकर बोले।)

कालिदास बोले - मैं हठी हूँ।

स्त्री बोले - फिर असत्य, हठी तो दो ही हैं - पहला नख और दूसरे केश, कितना भी काटो बार-बार निकल आते हैं। सत्य कहें ब्राह्मण कौन हैं आप ?

(पूरी तरह अपमानित और पराजित हो चके थे।)

कालिदास ने कहा - फिर तो मैं मूर्ख ही हूँ।

स्त्री ने कहा - नहीं , तुम मूर्ख कैसे हो सकते हो ? मूर्ख दो ही हैं। पहला राजा जो बिना योग्यता के भी सब पर शासन करता है और दूसरा दरबारी पंडित जो राजा को प्रसन्न करने के लिए गलत बात पर भी तर्क करके उसको सही सिद्ध करने की चेष्टा करता है।

(कुछ बोल न सकने की स्थिति में कालिदास वृद्धा के पैर पर गिर पड़े और पानी की याचना में गिड़गिड़ाने लगे)

वृद्धा ने कहा - उठो वत्स ! (आवाज़ सुनकर कालिदास ने ऊपर देखा तो साक्षात् माता सरस्वती वहाँ खड़ी थी, कालिदास पुनः नतमसतक हो गए।)

माता ने कहा - शिक्षा से ज्ञान आता है न कि अहंकार। तूने शिक्षा के बल पर प्राप्त मान और प्रतिष्ठा को ही अपनी उपलब्धि मान लिया और अहंकार कर बैठे इसलिए मुझे तुम्हारे चक्षु खोलने के लिए ये स्वांग करना पड़ा।

कालिदास को अपनी गलती समझ में आ गई और भरपेट पानी पीकर वे आगे चल पड़े।

शिक्षा – विद्वत्ता पर कभी घमण्ड न करें, यही घमण्ड विद्वता को नष्ट कर देता है। दो चीजों को कभी व्यर्थ नहीं जाने देना चाहिए.....

अन्न के कण को और आनन्द के क्षण को।

मेष - सप्ताह प्रारम्भ लाभदायक रहेगा। व्यापार या नौकरी में सफलता मिलेगी। वरिष्ठों का सहयोग मिलेगा। समय संतोषप्रद है। विद्यार्थियों के ज्ञान में वृद्धि होगी। दूसरे सप्ताह में थोड़ा प्रतिकूल समय रहेगा। परेशानियों से शांति भंग हो सकती है। सही निर्णय ले सकेंगे। बनाई गई प्लानिंग कामयाब होगी। स्वास्थ्य अच्छा रहेगा, कार्य के सिलसिले में यात्रा का प्रोग्राम बनेगा, दोस्तों का साथ मिलेगा। माह के मध्य में उतार-चढ़ाव रहेगा। पुत्र अच्छे नम्बरों से सफल होगा। मुकदमेबाजी से बचें। उच्चाधिकारियों के सहयोग से समस्याओं को सुलझा सकेंगे। गलतफहमी के शिकार हो सकते हैं। यात्रा से लाभ होगा, परिवार में सभी का सहयोग मिलेगा। आप मातंगी महाविद्या दीक्षा प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ - 2,3,4, 12, 13, 20, 21, 22, 29, 30

वृष -प्रारम्भ असंतोषकारी रहेगा। पारिवारिक समस्यायें परेशान करेंगी। राजनीतिक क्षेत्र में सफलता मिलेगी। सलाह मशविरा करके कदम उठायें, सफल होंगे। दूसरे सप्ताह में किसी समस्या से घिर जायेंगे। फिर भी गलत कदम न उठायें। आर्थिक स्थिति भी डावांडोल रहेगी। शत्रुओं को परास्त करने में सफल होंगे। गरीबों की सहायता करेंगे। आय के स्रोत बढ़ेंगे। माह के मध्य में कहीं से आकस्मिक धन प्राप्ति सम्भव है, रुके रुपये प्राप्त होंगे। किसी का स्वास्थ्य गड़बड़ हो सकता है। अचानक आई जिम्मेदारी से रुपये उधार भी लेने पड़ सकते हैं। स्वास्थ्य में सुधार होगा परन्तु माह के आखिर में बीमारी बढ़ सकती है। कारोबार में नुकसान के भय से आत्मविश्वास डगमगायेगा। माह की आखिरी तारीख में सुधार होगा, निर्णय फलदायी होंगे। आप रोग निवारण दीक्षा प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ - 4, 5, 6, 14, 15, 16, 22, 23, 24

मिथुन - माह के प्रारम्भ के दिन अनुकूल रहेंगे। धार्मिक कार्यों में समय बीतेगा। मधुर व्यवहार से बिगड़े काम भी बना लेंगे। अनैतिक कार्यों से इकट्ठा धन आपके पास रुकेगा नहीं। किसी विशिष्ट व्यक्ति से मुलाकात होगी। उत्साहपूर्ण समाचार मिलेगा। पारिवारिक समस्यायें हल होंगी। स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। काम में आ रही अड़चनें दूर होंगी। आमदनी बढ़ेगी। आप सभी को सहयोग करेंगे। तीसरे सप्ताह का प्रारम्भ अनुकूल नहीं है, परेशानी के साथ ही आर्थिक नुकसान भी हो सकता है। विद्यार्थी वर्ग के लिए समय ज्ञानवर्द्धक रहेगा। किसी धार्मिक स्थान पर जाने का प्रोग्राम बन सकता है, प्रतिकूल परिस्थितियाँ धीरे-धीरे ठीक होंगी, उलझनों से परेशान न हो। सर्व बाधा निवारण दीक्षा प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ - 7, 8, 9, 16, 17, 18, 24, 25, 26

कर्क - प्रारम्भ के 2-3 दिन शुभ घटना लेकर आयेंगे। कार्य क्षेत्र में सहकर्मियों का सहयोग मिलेगा। लाभकारी समय है। इसके बाद सोच विचार कर निर्णय लें। किसी अपने का स्वास्थ्य खराब रहेगा। पुराने मित्रों से मुलाकात होगी। समय अनुकूल होगा। जीवनचर्या में बदलाव आयेगा। कोई ऑर्डर या टेण्डर आदि मिल सकता है। दाम्पत्य जीवन सुखमय रहेगा। विदेश यात्रा हो सकती है। माह के मध्य में फालतू समय व्यतीत न करें। किसी विवाद या झगड़े से दूर रहें। नशे आदि को सेवन न करें। सतर्क रहें, वाहन धीमी गति से चलायें। ज्यादा लालच में न पड़ें। दूसरों की भलाई में भी बुराई मिल सकती है। किसी साजिश का शिकार हो सकते हैं। साधुओं के दर्शन का लाभ मिलेगा, आकस्मिक धन प्राप्ति हो सकती है। इस समय निर्णय लाभकारी होगा। अचानक ऊँचे मुकाम तक पहुँच सकते हैं। आप सर्व मनोकामना दीक्षा प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ - 1, 9, 10, 11, 18, 19, 20, 27, 28, 29

सिंह - समय के साथ-साथ परिस्थितियाँ बदलने का समय है। कोई अच्छा सौदा खुशी देगा। आय वृद्धि होगी। रुपयों की बचत होगी। मित्रों के साथ से दिक्कतों को दूर कर सकेंगे। किसी के दबाव में कहीं हस्ताक्षर न करें। परिवार की समस्याओं में उलझेंगे। इस बीच आर्थिक स्थिति थोड़ा डावांडोल होगी। संतान अपने कार्यों से आपको गर्व महसूस करायेगी। इस समय आपके द्वारा पूर्व में की गई मेहनत सफलता देगी। शत्रुओं को आप परास्त कर सकेंगे, धार्मिक यात्रा हो सकती है। नौकरीपेशा से उच्चाधिकारी सन्तुष्ट नहीं रहेंगे। अन्तिम सप्ताह अशुभ परिणाम ला सकता है, सतर्क रहें। प्यार में सफलता मिलेगी। आप परिणामों को अपने पक्ष में कर सकने की हिम्मत रखते हैं। आप हनुमान दीक्षा प्राप्त करें।।

शुभ तिथियाँ - 2, 3, 4, 12, 13, 20, 21, 22, 29, 30, 31

कन्या - माह का प्रारम्भ अशुभ परिणाम देगा। सावधान रहें, भ्रमित न हों। काम-काज को लेकर परेशान रहेंगे। दाम्पत्य जीवन सुखमय रहेगा। लम्बी यात्रा से लाभ होगा। महत्वपूर्ण लोगों से सम्पर्क बनेगा। शत्रु पक्ष छवि बिगाड़ने का प्रयास करेंगे। स्वास्थ्य के कारण मानसिक रूप से परेशान रहेंगे। नौकरीपेशा लोग मानसिक रूप से अशांत रहेंगे। कोई भी कार्य हड़बड़ी में न करें। वाहन चालन में सावधानी बरतें।

प्रॉपर्टी के कार्य में लाभ होगा, मित्रों के साथ पिकनिक का माहौल बनेगा। शत्रु पक्ष से विशेष सावधान रहें, बिना पढ़े हस्ताक्षर न करें। अन्तिम सप्ताह में परिस्थितियाँ बदलेगी, आपको यश-सम्मान मिलेगा। मित्रों के कारण कोई समस्या आ सकती है। कोई अनहोनी की दशा में जल्दबाजी में कोई निर्णय न लें। शांति से लिये निर्णय लाभ देंगे। आप बगलामुखी दीक्षा प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ - 4, 5, 6, 14, 15, 16, 22, 23, 24

तुला - प्रारम्भ नकारात्मक प्रभाव लायेगा अत: अभी कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें। नौकरी/व्यापार के सिलसिले में यात्रा हो सकती है, उच्चाधिकारी वर्ग का सहयोग मिलेगा। आपका विनम्र व्यवहार सफलता दिलवायेगा। परिवार में सभी का सहयोग मिलेगा। विद्यार्थियों के ज्ञान में वृद्धि होगी। प्रतियोगी परीक्षा में सफलता मिलेगी। शत्रुओं से सावधान रहें। स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दें। अनावश्यक खर्च न करें। तीसरे सप्ताह में परिणाम आपके पक्ष में होंगे, सोचे गये कार्य पूर्ण होंगे। आर्थिक परेशानी आ सकती है। कोई धोखा दे सकता है। आखिरी सप्ताह में व्यापारिक यात्रा हो सकती है। संजोये सपने पूर्ण हो सकते हैं। कोई जोखिमपूर्ण कार्य न करें, अन्यथा घाटा हो सकता है। आपकी कोई छुपी बात सार्वजनिक हो सकती है। आप नवग्रह मुद्रिका धारण करें।

शुभ तिथियाँ - 7, 8, 9, 16, 17, 18, 24, 25, 26

वृश्चिक - माह प्रारम्भ सकारात्मक है। विद्यार्थियों को सफलता मिलेगी। दूसरों की परेशानी से परेशान रहेंगे। विरोधी मजाक उड़ायेंगे, क्रोध पर संयम रखें। आय के नये मार्ग खुलेंगे। संतान व्यापार में सहयोगी करेगी। बनाई प्लानिंग सफल होगी। मित्र या कोई अपना धोखा दे सकता है। गलत कार्यों से दूर रहें, स्वास्थ्य के प्रति विशेष सचेत रहें। निर्णय सोच-समझकर लें। माह के मध्य का समय थोड़ा अशुभ है। मानसिक चिंताओं में घिरेंगे, शत्रु आर्थिक हानि पहुंचायेंगे। किसी अनजान से मुलाकात लाभदायक होगी। किसी पर्यटक स्थल की यात्रा सम्भव है। आपका कोई कार्य शक के दायरे में आ सकता है। अन्तिम सप्ताह में भी सावधान रहें। आवेश में न आयें, कोई साथ नहीं देगा। शुभचिंतकों से सलाह लें। आर्थिक परेशानी दूर होगी। आप अष्ट लक्ष्मी दीक्षा प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ - 1, 9, 10, 11, 18, 19, 20, 27, 28, 29

धनु - प्रथम सप्ताह सफलतादायक रहेगा। रुके हुये रुपये प्राप्त होंगे। प्रॉपर्टी के कार्य में लाभ होगा। आकस्मिक धनप्राप्ति सम्भव है। पारिवारिक समस्यायें सुलझेंगी। संतान कहने में नहीं रहेगी। आर्थिक तंगी हो सकती है। व्यापारी वर्ग को कोई ऑर्डर मिलेगा। आर्थिक परेशानियाँ कम होंगी। आय के स्रोत बढ़ेंगे। वाद-विवाद में न पड़ें, शत्रुओं से सावधान रहें। परिवार में मनमुटाव का वातावरण रहेगा। विरोधियों को जबाव दे सकेंगे। दाम्पत्य जीवन सुखमय रहेगा। कृषक वर्ग खुश रहेगा। रुपयों की बचत होगी। आखिरी सप्ताह अनुकूल नहीं है, पुरानी बीमारी परेशान कर सकती है। आय से खर्च अधिक रहेगा। दूसरों के कार्य में हस्तक्षेप न करें। स्वास्थ्य में सुधार होगा। आप भैरव दीक्षा प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ - 2, 3, 4, 12, 13, 20, 21, 22, 29, 30

मकर - माह का प्रारम्भ थोड़ा नकारात्मक रहेगा। मन अशांत रहेगा। अपने सहयोग नहीं करेंगे। आत्मबल बढ़ेगा। मनचाहा कार्य होगा। कोर्ट केस में अनुकूलता रहेगी। दूसरे सप्ताह की यात्रा लाभ देगी। कठिनाई पार करके मंजिल प्राप्त कर सकेंगे। जमीन-जायदाद के मामले उलझ सकते हैं, थोड़ा टेंशन रहेगा। आप सबके साथ एकरूपता का व्यवहार

सर्वार्थ सिद्धि योग	- मई-5, 6, 8, 26, 30
रवि योग	- मई-4, 6, 7, 10, 11, 12, 15
रवि पुष्य योग	- मई-8 (सूर्योदय से 2.58 शाम तक)

करेंगे। गरीबों की सहायता करेंगे, माह के मध्य की तारीख पक्ष में है। विद्यार्थी वर्ग अच्छा रिजल्ट पाकर खुश रहेगा। परिवार में सभी प्रसन्न रहेंगे। बिना पढ़े किसी कागज पर साइन नहीं करें, स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। नये मकान में प्रवेश हो सकता है। आकस्मिक तरीके से धन प्राप्ति हो सकती है। आर्थिक स्थिति अच्छी होगी। नया कैरियर चुन सकते हैं। वाहन धीमी गति से चलायें। लापरवाही से नुकसान हो सकता है। रुके रुपये वसूल हो सकते हैं। गुरु हृदय धारण दीक्षा प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ - 4, 5, 6, 14, 15, 16, 22, 23, 24

कुम्भ - माह का प्रारम्भ शुभ है। किसी अनजान व्यक्ति से मुलाकात लाभदायक होगी। काम-धंधे में उन्नति होगी। विद्यार्थी वर्ग के लिए अच्छा समय है। नया व्यापार भी प्रारम्भ हो सकता है। सतर्क रहें, किसी और के कारनामे आप पर थोपे जा सकते हैं। वाद-विवाद में नहीं पड़ें। किसी को उधार न दें। धार्मिक कार्यों में रुचि रहेगी। नौकरीपेशा को उच्चाधिकारी वर्ग और जिम्मेदारी दे देगा। कुछ खुशखबरी भी मिल सकती हे। मित्रों के सहयोग से कार्य पूरे होंगे। स्वास्थ्य ठीक न होने से उदास रहेंगे। इस समय सोच-समझकर कार्य करें। आखिरी सप्ताह में आय के स्रोतों में वृद्धि होगी। नौकरीपेशा का स्थानान्तरण मनचाही जगह पर हो सकता है। आखिरी तारीख में आपकी कोई बात उजागर होने से प्रतिष्ठा में ठेस लग सकती है। आप कायाकल्प दीक्षा प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ - 7, 8, 9, 16, 17, 18, 24, 25, 26

मीन - माह का प्रारम्भ उत्तम है। आप उत्साह से कार्यों में लगेंगे। विद्यार्थियों को सफलता मिलने से चेहरे पर खुशी रहेगी। नौकरीपेशा मनचाहा ट्रांसफर पाकर खुश रहेंगे। कुछ मानसिक चिंताएं परेशान करेंगी। उच्च अधिकारियों का सहयोग मिलेगा। पुराने मित्रों से मुलाकात होगी। स्वयं पर विश्वास करें। किसी के बहकावे में न आवें। जीवनसाथी का सहयोग मिलेगा। गलत कार्यों को छोड़ अच्छी संगत होने से परिवार प्रसन्न रहेगा, आखिरी सप्ताह में प्रतिकूलताएं रहेंगी, स्वास्थ्य के प्रति सावधान रहें। आर्थिक परेशानियां भी आ सकती हैं। शत्रुओं को परास्त कर सकेंगे, परिवार में खुशहाली का माहोल रहेगा। काम बनने शुरू होंगे। समाज में मान-प्रतिष्ठा बढ़ेगी। आप इस माह गुरु रक्त कण-कण स्थापन दीक्षा प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ - 1, 9, 10, 11, 18, 19, 20, 27, 28, 29

इस मास व्रत, पर्व एवं त्यौहार

03.05.22	मंगलवार	मातंगी जयंती
03.05.22	मंगलवार	अक्षय तृतीया
06.05.22	शुक्रवार	शंकराचार्य जयंती
08.05.22	रविवार	श्री गंगा जयंती
09.05.22	सोमवार	बगलामुखी जयंती
12.05.22	गुरुवार	मोहिनी एकादशी
14.05.22	शनिवार	नृसिंह जयंती
16.05.22	सोमवार	छिन्नमस्ता जयंती
17.05.22	मंगलवार	ज्ञान जयंती
22.05.22	सोमवार	सर्वकार्य सिद्धि दिवस
30.05.22	सोमवार	शनि जयंती

मैं समय हूं

साधक, पाठक तथा सर्वजन सामान्य के लिए समय का वह रूप यहां प्रस्तुत है; जो किसी भी व्यक्ति के जीवन में उन्नति का कारण होता है तथा जिसे जान कर आप स्वयं अपने लिए उन्नति का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं।

नीचे दी गई सारिणी में समय को श्रेष्ठ रूप में प्रस्तुत किया गया है - जीवन के लिए आवश्यक किसी भी कार्य के लिये, चाहे वह व्यापार से सम्बन्धित हो, नौकरी से सम्बन्धित हो, घर में शुभ उत्सव से सम्बन्धित हो अथवा अन्य किसी भी कार्य से सम्बन्धित हो, आप इस श्रेष्ठतम समय का उपयोग कर सकते हैं और सफलता का प्रतिशत **99.9%** आपके भाग्य में अंकित हो जायेगा।

ब्रह्म मुहूर्त का समय प्रातः 4.24 से 6.00 बजे तक ही रहता है

वार/दिनांक	श्रेष्ठ समय
रविवार (मई-1, 8, 15)	दिन 06:00 से 10:00 तक रात 06:48 से 07:36 तक 08:24 से 10:00 तक 03:36 से 06:00 तक
सोमवार (मई-2, 9, 16)	दिन 06:00 से 07:30 तक 10:48 से 01:12 तक 03:36 से 05:12 तक रात 07:36 से 10:00 तक 01:12 से 02:48 तक
मंगलवार (मई-3, 10)	दिन 06:00 से 08:24 तक 10:00 से 12:24 तक 04:30 से 05:12 तक रात 07:36 से 10:00 तक 12:24 से 02:00 तक 03:36 से 06:00 तक
बुधवार (मई-4, 11)	दिन 07:36 से 09:12 तक 11:36 से 12:00 तक 03:36 से 06:00 तक रात 06:48 से 10:48 तक 02:00 से 06:00 तक
गुरूवार (मई-5, 12)	दिन 06:00 से 08:24 तक 10:48 से 01:12 तक 04:24 से 06:00 तक रात 07:36 से 10:00 तक 01:12 से 02:48 तक 04:24 से 06:00 तक
शुक्रवार (मई-6, 13)	दिन 06:48 से 10:30 तक 12:00 से 01:12 तक 04:24 से 05:12 तक रात 08:24 से 10:48 तक 01:12 से 03:36 तक 04:24 से 06:00 तक
शनिवार (मई-7, 14)	दिन 10:30 से 12:24 तक 03:36 से 05:12 तक रात 08:24 से 10:48 तक 02:00 से 03:36 तक 04:24 से 06:00 तक

वार/दिनांक	श्रेष्ठ समय
रविवार (मई-22, 29)	दिन 06.00 से 08.24 तक 11.36 से 02.48 तक 03.36 से 04.24 तक रात 06.48 से 10.00 तक 12.24 से 02.48 तक 04.24 से 06.00 तक
सोमवार (मई-23, 30)	दिन 06.00 से 07.36 तक 09.12 से 11.36 तक रात 08.24 से 11.36 तक 02.48 से 03.36 तक
मंगलवार (मई-17, 14, 31)	दिन 10.00 से 11.36 तक 04.30 से 06.00 तक रात 06.48 से 10.00 तक 12.24 से 02.48 तक 05.12 से 06.00 तक
बुधवार (मई-18, 25)	दिन 06.48 से 10.00 तक 02.48 से 05.12 तक रात 07.36 से 09.12 तक 12.24 से 02.48 तक
गुरूवार (मई-19, 26)	दिन 06.00 से 07.36 तक 10.00 से 11.36 तक 04.24 से 06.00 तक रात 09.12 से 11.36 तक 02.00 से 04.24 तक
शुक्रवार (मई-20, 27)	दिन 06.00 से 06.48 तक 07.36 से 10.00 तक 12.24 से 03.36 तक रात 07.36 से 09.12 तक 10.48 से 11.36 तक 01.12 से 02.48 तक
शनिवार (मई-21, 28)	दिन 06.00 से 06.48 तक 10.30 से 12.24 तक रात 08.24 से 10.48 तक 02.48 से 03.36 तक 05.12 से 06.00 तक

यह हमने नहीं वराहमिहिर ने कहा है

किसी भी कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व प्रत्येक व्यक्ति के मन में संशय-असंशय की भावना रहती है कि यह कार्य सफल होगा या नहीं, सफलता प्राप्त होगी या नहीं, बाधाएं तो उपस्थित नहीं हो जायेंगी, पता नहीं दिन का प्रारम्भ किस प्रकार से होगा, दिन की समाप्ति पर वह स्वयं को तनावरहित कर पायेगा या नहीं? प्रत्येक व्यक्ति कुछ ऐसे उपाय अपने जीवन में अपनाना चाहता है, जिनसे उसका प्रत्येक दिन उसके अनुकूल एवं आनन्दयुक्त बन जाय। कुछ ऐसे ही उपाय आपके समक्ष प्रस्तुत हैं, जो वराहमिहिर के विविध प्रकाशित-अप्रकाशित ग्रंथों से संकलित हैं, जिन्हें यहां प्रत्येक दिवस के अनुसार प्रस्तुत किया गया है तथा जिन्हें सम्पन्न करने पर आपका पूरा दिन पूर्ण सफलतादायक बन सकेगा।

मई-22

11. प्रातः किसी देवी मन्दिर में घी का दीपक जलायें।
12. आज पीपल के वृक्ष में एक लोटा जल अर्पण कर एक प्रदक्षिणा करें।
13. पूजन के उपरांत ॐ ह्रीं ॐ का 101 बार उच्चारण करके कार्य पर जाएं।
14. ॐ नमो भगवते वासुदेवाय का 11 बार उच्चारण करके जाएं।
15. आज प्रातः भगवान सूर्य को अर्घ्य दें।
16. आज पत्रिका में प्रकाशित कोई भी देवी की साधना सम्पन्न करें।
17. आज ज्ञान जयंती है, प्रातः बच्चों के साथ बैठ कर निम्न मंत्र का पांच मिनट जप करें - ॐ ऐं ॐ।
18. निम्न मंत्र का 51 बार उच्चारण पूजन के उपरांत करें- ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ।
19. आज के दिन वस्त्रों में पीले रंग को प्रधानता दें।
20. आज माँ दुर्गा के मन्दिर में तीन लाल पुष्प अर्पित करें।
21. आज सद्गुरुदेव जन्मदिवस पर गुरु गीता का एक पाठ करें।
22. जल में पीले पुष्प डालकर सूर्य को अर्घ्य करें।
23. आज मनोकामना गुटिका (न्यौ. 150/-) हाथ में लेकर किसी मनोकामना के साथ भगवान शिव के मन्दिर में चढ़ा दें। मनोकामना पूर्ण होगी।
24. आज हनुमान चालीसा का एक पाठ करके जाएं।
25. प्रातः पूजन के बाद निम्न मंत्र का 21 बार उच्चारण करें-ॐ अन्नपूर्णायै नमः।
26. आज षोडषोपचार गुरु पूजन करें।
27. किसी असहाय को भोजन करायें।
28. सरसों का तेल कुछ दक्षिणा के साथ दान करें।
29. बरगद के पेड़ में एक लोटा जल अर्पित करें।
30. आज शनि जयंती है। शनि मुद्रिका धारण करें।
31. आज दक्षिणा के साथ किसी गरीब को अन्नदान करें।

जून-22

1. आज पत्रिका में प्रकाशित लक्ष्मी साधना करें।
2. आज सर्व सौभाग्य प्राप्ति हेतु माँ गौरी के मन्दिर में प्रसाद चढ़ा कर बांटें।
3. गाय माता को रोटी खिलायें।
4. आज भैरव मंत्र का 51 बार जप करके जाएं-ॐ भं भैरवाय नमः।
5. माँ दुर्गा के मन्दिर में दूध का बना प्रसाद चढ़ायें, मनोकामना पूर्ण होगी।
6. आज पूजन करके सर्व मनोकामना गुटिका (न्यौ. 150/-) धारण करें।
7. आज सर्व बाधा निवारण हेतु हनुमान बाहु (न्यौ. 90/-) धारण करके जाएं।
8. आज धूमावती जयंती है। माँ की आरती करके जाएं।
9. आज गंगा दशहरा पर्व पर यथाशक्ति दान करें।
10. पक्षियों को दाना चुगायें।

।। जयतु बटुकनाथः मंगलं संसनोतु ।।

बटूक भैरव जयंती
10.06.2022

आपके सामने शत्रु गिड़गिड़ावें
और
आप जीवन में पूर्णतः विजयी रहें

पूर्ण पौरुष युक्त श्रेष्ठतम साधना

केवल आपके लिये पहली बार... जो सरल है,

जिसे प्रत्येक गृहस्थ व्यक्ति निडर होकर कर सकता है....

शास्त्रों में भी बटुक भैरव की महिमा वर्णित है। शास्त्रानुसार भैरव को रुद्र, विष्णु व ब्रह्मा का स्वरूप माना गया है। इस प्रकार से भैरव के अनेक रूप वर्णित हैं–'ब्रह्म रूप', 'परब्रह्म रूप', 'पूर्ण रूप', 'निष्कल रूप' में वाङ्मनसागोचर, विश्वातीत,स्वप्रकाश, पूर्णाहंभाव एवं 'संकल रूप' में क्षोभण, मन्यु, तत्पुरुष आदि।

वर्तमान युग में पग-पग पर इतनी बाधाएं हैं, इतनी परेशानियाँ हैं, इतने शत्रु हैं कि ऐसी स्थिति में व्यक्ति के लिये एक ही मार्ग रह जाता है, जिसके द्वारा यह पूर्ण रूप से विजयी हो सकता है और अपने जीवन की प्रत्येक समस्या पर विजय प्राप्त कर सकता है, वह मार्ग है– 'साधना'।

दिनचर्या में आने वाले संकट और छोटी-मोटी परेशानियों के निदान में 'बटुक भैरव' की साधना श्रेष्ठतम साधना मानी गई है, जिसका फल तत्क्षण मिलता है।

भैरव की उत्पत्ति

रूद्र के भैरवावतार की विवेचना शिवपुराण में इस प्रकार वर्णित है–

'एक बार समस्त ऋषिगणों में परमतत्त्व को जानने की जिज्ञासा उत्पन्न हुई, वे परब्रह्म को जानकर उसकी तपस्या करना चाहते थे। यह जिज्ञासा लेकर वे समस्त ऋषिगण देवलोक पहुंचे, वहां उन्होंने ब्रह्मा से विनम्र स्वर से निवेदन किया, कि हम सब ऋषिगण उस परमतत्व को जानने की जिज्ञासा से आपके पास आये हैं, कृपा करके हमें बताइये, कि वह कौन है, जिसकी हम तपस्या कर सकें?'

इस पर ब्रह्मा ने स्वयं को ही इंगित करते हुए कहा–'मैं ही वह परमतत्त्व हूं।'

ऋषिगण उनके इस उत्तर से सन्तुष्ट न हो सके, तब यही प्रश्न लेकर वे क्षीरसागर में विष्णु के पास गये, परन्तु उन्होंने भी कहा, कि वे ही परमतत्त्व हैं, अत: उनकी आराधना करना श्रेष्ठ है, किन्तु उनके भी उत्तर से ऋषि समूह सन्तुष्ट न हो सका। अंत में उन्होंने वेदों के पास जाने का निश्चय किया। वेदों के समक्ष जा कर उन्होंने यही जिज्ञासा प्रकट की, कि हमें परमतत्त्व के बारे में ज्ञान दीजिये।

इस पर वेदों ने उत्तर दिया–'शिव ही परमतत्व हैं, वे ही सर्वश्रेष्ठ और पूजन के योग्य हैं।'

परन्तु यह उत्तर सुन कर ब्रह्मा और विष्णु ने वेदों की बात को अस्वीकार कर दिया। उसी समय वहां एक तेजपुञ्ज प्रकट हुआ और धीरे-धीरे एक पुरुषाकृति को धारण कर लिया। यह देख ब्रह्मा का पञ्चम सिर क्रोधोन्मत्त हो उठा और उस आकृति से बोला–'पूर्वकाल में मेरे भाल से ही तुम उत्पन्न हुए हो, मैंने ही तुम्हारा नाम 'रुद्र' रखा था, तुम मेरे पुत्र हो, मेरी शरण में आओ।'

ब्रह्मा की इस गर्वोक्ति से वह तेजपुञ्ज कुपित हो गया और उन्होंने एक अत्यन्त भीषण पुरुष को उत्पन्न कर उसे आशीर्वाद देते हुए कहा–'आप कालराज' हैं क्योंकि काल की भांति शोभित हैं। आप 'भैरव' हैं, क्योंकि आप अत्यन्त भीषण हैं, आप 'काल भैरव' हैं, क्योंकि काल भी आप से भयभीत होगा। आप 'आमर्दक' हैं, क्योंकि आप दुष्टात्माओं का नाश करेंगे।'

शिव से वर प्राप्त कर श्री भैरव ने अपने नखाग्र से ब्रह्मा के अपराधकर्ता पञ्चम सिर का विच्छेदन कर दिया। लोक मर्यादा रक्षक शिव ने ब्रह्म हत्या मुक्ति के लिए भैरव को कापालिक व्रत धारण कराया और काशी में निवास करने की आज्ञा दे दी।

बटुक भैरव–

भैरव का एक नाम बटुक भी है। बटुक शब्द का अभिप्राय है–

'वट्यते वेष्टयते सर्वं जगत् प्रलयेऽनेनेति वटुक:'

अर्थात् प्रलयकाल में सम्पूर्ण जगत को आवेष्टित करने के कारण अथवा सर्वव्यापी होने से भैरव 'बटुक' कहलाये।

'बटून् ब्रह्मचारिण: कार्यमुपदिशतीति बटुको गुरुरूप:'

अर्थात् ब्रह्मचारियों को उपदेश देने वाले गुरु रूप होने से भैरव 'बटुक' कहे गये।

'अनेकार्थग्विलास' में कहा गया है–

'वटुः वर्णी बटुः विष्णुः'

बटुक का एक अर्थ विष्णु भी होता है, जो 'वामनावतार' की ओर संकेत है।

इस प्रकार स्पष्ट है, कि सर्वव्यापी, गुरु रूप एवं विष्णु रूप इन तीनों के सम्मिलित स्वरूप होने से भैरव का 'बटुक' स्वरूप पूर्ण फलप्रद एवं विजयप्रद है।

बटुक भैरव की साधना सकाम्य साधना होती है, अतः साधक जिस कामना की पूर्ति हेतु, वह चाहे चुनाव से सम्बन्धित हो, मुकदमे में विजय प्राप्त करने से सम्बन्धित हो अथवा विरोधियों को शांत करना हो, जीवन के किसी भी पक्ष में कोई भी समस्या आ रही हो, उसके निराकरण का सहज उपाय यही साधना है।

भैरव-साधना के विषय में लोगों में अनेक प्रकार के भ्रम हैं, लेकिन भैरव साधना सरल एवं प्रत्येक गृहस्थ व्यक्ति के लिए आवश्यक है, यह साधना निडर होकर की जा सकती है, इसमें किसी प्रकार का कोई भय या गलतफहमी नहीं है। यह अत्यन्त फलदायक साधना है।

यह साधना सकाम्य साधना है, अतः साधक जिस कामना की पूर्ति के लिए यह साधना करताहै, वह कामना पूर्ण होती ही है—

- इस साधना को सम्पन्न करने से साधक के अन्दर तेजस्विता उत्पन्न होती है, जिसके कारण यदि उसके शत्रु हैं, तो वे उसके सामने आते ही कान्तिहीन हो जाते हैं और शक्तिहीन होकर साधक के सम्मुख खड़े नहीं रह पाते हैं।
- यदि वह चुनाव लड़ रहा है या मुकदमा कई वर्षों से चल रहा है, तो वह उसमें पूर्ण रूप से विजय प्राप्त कर सकता है।
- उसके विरोधी उसके सम्मुख शांत हो जाते हैं, विपक्षी प्रभावहीन होकर उसके सम्मुख हार स्वीकार कर लेते हैं। यदि उसके जीवन में अनेक प्रकार की समस्याएं आ रही हों और उनका समाधान नहीं मिल रहा हो, तो साधना को सम्पन्न करने से समाधान प्राप्त होता है।

साधक साधना सम्पन्न कर पूर्ण पौरुषवान होकर समस्त समस्याओं को अपने साधनात्मक पुरुषार्थ से हल कर लेता है।

साधना विधि

- इस साधना में आवश्यक सामग्री है—'बटुक भैरव यंत्र' तथा 'काली हकीक माला'।
- यह एक दिवसीय रात्रिकालीन साधना है।
- यह साधना 10.06.2022 या किसी भी 'मंगलवार' को सम्पन्न करें।
- साधक स्नान करके उत्तर दिशा की ओर मुंह करके बैठें।
- पीले वस्त्र धारण करें।
- बाजोट पर पीला वस्त्र बिछाकर यंत्र को स्थापित करें।
- यंत्र के सामने तेल का दीपक लगायें तथा सुगंधित धूप जलावें।
- भैरव पूजन प्रारम्भ करें।
- सर्वप्रथम बटुक भैरव ध्यान करें–

कर कलित कपालः कुण्डली दण्डपाणि
स्तरुणतिमिरवर्णो व्यालयज्ञोपवीती।
ऋतुसमयपर्याविघ्न-विच्छित्ति हेतुः,
र्जयति बटुकनाथः सिद्धिदः साधकानाम्।।

- भैरव ध्यान के पश्चात् काली हकीक माला को अपने बायें हाथ में लेकर दाहिने हाथ से उस पर अक्षत चढ़ाते हुए निम्न मंत्रोच्चार करें—

महामाले महामाये! सर्वशक्तिस्वरूपिणि।
चतुर्वर्गस्त्वपि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव।।
अविघ्नं कुरु माले! त्वं गृहणामि दक्षिणे करे।
जपकाले च सिद्ध्यर्थं प्रसीद मम सिद्धये।।

- तत्पश्चात् उसी हकीक माला से निम्न मंत्र का 51 माला मंत्र जप करें–

।। ॐ ह्रीं बटुकाय आपदुद्धारणाय
कुरु कुरु बटुकाय ह्रीं ॐ ।।

- भोग अर्पित करें, पर जो भी भोग अर्पण करें, उसे वहीं पर बैठकर स्वयं ग्रहण करें।

वस्तुतः बटुक भैरव प्रयोग अत्यन्त सरल और सौम्य है तथा कलियुग में शीघ्र सफलतादायक भी है।

साधना सामग्री- 500/-

धूमावती जयन्ती

08.06.2022
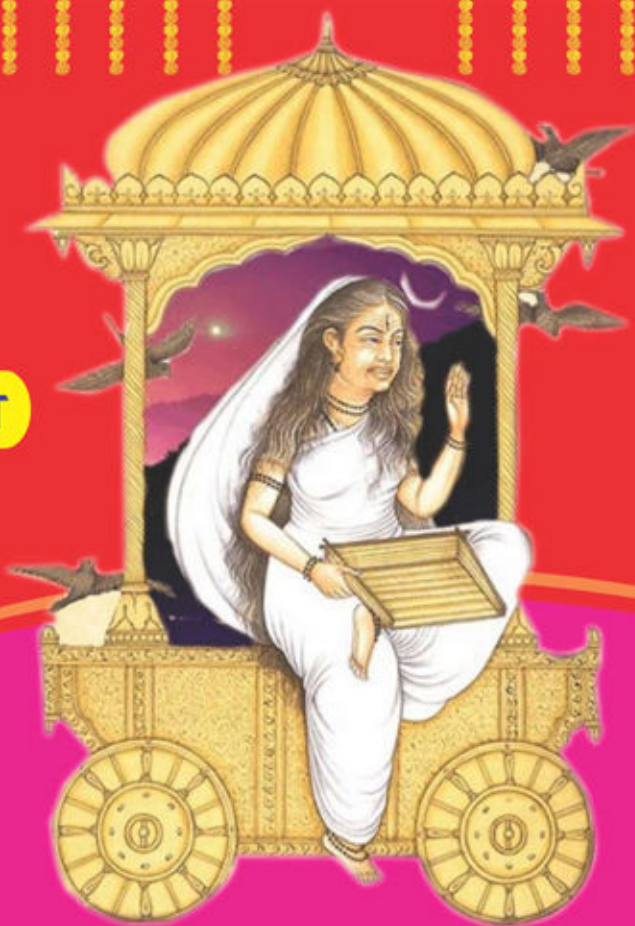
उपनिषदों में स्पष्ट रूप से कहा गया है, कि हर हालत में अपने शत्रुओं को समाप्त करना ही चाहिए, और शत्रुओं पर विजय प्राप्त करना ही जीवन की पूर्णता है, जो व्यक्ति जितना जल्दी अपने शत्रुओं का संहार कर सकता है, उसे उतना ही ज्यादा समय मिल जाता है, कि वह अपने जीवन में पूर्ण प्रगति करे।

शत्रुओं पर बिजली की तरह कड़किये

इस लेख के शीर्षक -

शत्रुओं पर बिजली की तरह कड़किये का तात्पर्य शत्रुओं को मटियामेट करना नहीं है, शत्रुओं को समाप्त करने का भाव नहीं है,

अपितु इस शीर्षक का तात्पर्य है कि आपका व्यक्तित्व सूर्य के समान प्रखर और तेजस्वी हो, जिससे शत्रु भयभीत रहे और आपके सामने खड़े न हो सके, जिससे रोग, ऋण और दरिद्रता समूल नष्ट हो सके, जिससे पत्नी और पुत्र सही मार्ग पर आकर आपके लिए सहायक हो सके, जिससे आपके विश्वासघाती मित्र और व्यापार के पार्टनर आपके अनुकूल बन सके और इस प्रकार से आपका जीवन ज्यादा सुखमय ज्यादा आनन्ददायक और ज्यादा श्रेष्ठ बन सके।

धूमावती साधना - एक मात्र उपाय

यों तो शत्रुओं को समाप्त करने के लिए तांत्रिक ग्रंथों में कई विधान बताये गये है, परंतु हमारा उद्देश्य शत्रुओं को अपने अनुकूल बनाना है, उनकी शत्रुता समाप्त करनी है और इसके लिए आज के युग में केवल धूमावती साधना ही सर्वश्रेष्ठ और तुरंत प्रभाव देने वाली है।

यों तो बगलामुखी, छिन्नमस्ता आदि साधनाएं भी शत्रुओं को समाप्त करने के लिए ही है परंतु उनका प्रभाव धीमे-धीमे होता है, इसकी अपेक्षा धूमावती प्रयोग तुरंत असर दिखाने वाला है, साधना समाप्त होते-होते ही अनुकूल परिणाम दिखाई देता है और इस साधना के माध्यम से हम पीछे बताये हुए सभी शत्रुओं पर पूर्ण रूप से विजय प्राप्त करने में सफल हो पाते हैं, इसीलिए तो उच्चकोटि के शास्त्रों में धूमावती को सर्वश्रेष्ठ साधना बताया है, उन्होंने स्पष्ट किया है कि यदि साधक किसी भी अमावस्या को या धूमावती जयंती के दिन इस एक दिवसीय प्रयोग को सम्पन्न कर लेता है, तो वह सभी प्रकार के रोगों से मुक्त हो जाता है और सभी प्रकार की समस्याओं से ठीक हो जाता है।

महापदि महाघोरे महारोगे महारणे।
शत्रुच्चाटे मारणादौ जन्तूनाम्मोहने तथा।।
पठेत्मंत्रमिदन्देवि सर्वत्र सिद्धिवाग्भवेत्।।

शाक्तप्रमोद, पृ. 284

अर्थात किसी भी प्रकार के रोग, ऋण, दुर्भाग्य और शत्रु बाधा से मुक्ति केवल धूमावती मंत्र ही दे सकता है।

हमारे जीवन में सिर्फ व्यक्ति ही शत्रु नहीं होता अपितु शास्त्रों में नौ प्रकार के शत्रु माने गए हैं, जिनकी वजह से हमारी प्रगति में बाधा आती है। ये नौ शत्रु हैं–

1. प्रत्यक्ष शत्रु, 2. अप्रत्यक्ष शत्रु, 3. विश्वासघाती, 4. ऋण, 5. दरिद्रता, 6. रोग, 7. कुभार्या, 8. कुपुत्र, 9. भाग्यहीनता।

उपरोक्त नौ प्रकार के शत्रुओं में से यदि एक भी शत्रु आपके जीवन में है तो आपके जीवन की प्रगति रुक जाती है और जो भी आप करना चाहते हैं, इन शत्रुओं की वजह से नहीं कर पाते।

धूमावती दिवस

ज्योतिष नियमों के अनुसार ज्येष्ठ शुक्ल 8 को धूमावती जयंती मनाई जाती है जो कि इस वर्ष 08.06.22 को आ रही है।

जो सही अर्थों में साधना करना चाहते है, जो सही अर्थों में धूमावती को प्रत्यक्ष करना चाहते हैं, जो हकीकत में अपने शत्रुओं का संहार कर धूमावती सिद्धि चाहते हैं, जो उपरोक्त नौ प्रकार के शत्रुओं को परास्त कर पूर्ण विजय प्राप्त करना चाहते हैं, उन साधकों के लिये धूमावती जयंती पूर्ण वरदान की तरह है।

पत्रिका के सभी पाठकों और साधकों को चाहिए कि इस वर्ष धूमावती दिवस 08.06.22 को है, अत: इस दिन निश्चय ही धूमावती प्रयोग सम्पन्न करें, जिससे कि उनके जीवन के सभी शत्रु समाप्त हो सके और जीवन में पूर्ण उन्नति प्राप्त कर सके।

इस प्रयोग को सामान्य पढ़ा लिखा साधक भी सम्पन्न कर सकता है, इसमें कोई जटिल क्रिया नहीं है और यदि साधना में किसी वजह से गलती भी हो जाए, तब भी किसी प्रकार का अहित नहीं हो सकता, यों यदि साधक इस साधना को सम्पन्न करता है, तो उसे अनुकूल परिणाम ही प्राप्त होते हैं और कई बार तो साधना समाप्त होते होते ही, अनुकूल परिणाम अनुभव होने लग जाते है।

इस साधना को पुरूष या स्त्री कोई भी सम्पन्न कर सकता है, साधकों को चाहिए कि वे इस दिवस का उपयोग करें, यदि किसी वजह से धूमावती दिवस का प्रयोग न कर सके तो किसी भी अमावस्या को धूमावती साधना सम्पन्न की जा सकती है।

साधना सामग्री

इसके लिए विशेष साधना सामग्री की आवश्यकता नहीं होती, केवल पिप्पलाद ऋषि द्वारा वर्णित 'धूमावती महायंत्र' की आवश्यकता होती है जो कि विशेष मंत्रों से सिद्ध और प्राण प्रतिष्ठा युक्त होता है, इसके साथ ही साथ तांत्रिक ग्रंथों में बताया है कि यह प्रयोग काले हकीक मनकों की माला से ही मंत्र जप होना चाहिए। इसके अलावा इस साधना में अन्य किसी भी पदार्थ की आवश्यकता नहीं होती।

साधना प्रयोग

साधक इस साधना को दिन या रात्रि में कभी भी सम्पन्न कर सकता है, वह स्नान कर लाल आसन पर बैठ जाए और लाल धोती धारण करें, अपने कंधों पर भी लाल धोती ओढ़ लें, फिर सामने एक तांबे के पात्र में श्रेष्ठ मंत्र सिद्ध धूमावती महायंत्र को स्थापित कर दें, जो कि पिप्पलाद ऋषि द्वारा वर्णित मंत्रों से सिद्ध और प्राणश्चेतना युक्त हो।

- इसके बाद सामने तेल का दीपक लगा दें और इसमें किसी भी प्रकार का तेल भर कर जला दें।
- इसके बाद काले मनकों की हकीक माला से मंत्र जप सम्पन्न करें, इसका प्रत्येक मनका विशेष मंत्रों से मंत्र सिद्ध होना चाहिए और यह ऐसी हकीक माला होनी चाहिए जिसका पहले कभी प्रयोग नहीं किया हो।
- साधक को चाहिए वह इस यंत्र के सामने हाथ में जल लेकर संकल्प करे, कि मैं समस्त प्रकार के शत्रुओं को समाप्त कर जीवन में सभी दृष्टियों से पूर्ण उन्नति चाहता हूँ।
- यदि कोई विशेष शत्रु हो जो आपको जरूरत से ज्यादा परेशान कर रहा हो तो उस शत्रु का नाम लेकर उच्चारण कर सकते हैं।
- इसके बाद दक्षिण दिशा की ओर मुँह कर निम्न धूमावती मंत्र की 21 माला मंत्र जप करें -

धूमावती मंत्र

॥ धूं धूं धूमावती ठः ठः॥

- यह मंत्र अपने आपमें छोटा सा दिखाई देते हुए भी अत्यंत तेजस्वी और महत्वपूर्ण है।
- जब मंत्र जप पूरा हो जाए तब धूमावती यंत्र और माला को किसी नदी तालाब या कुएं में विसर्जित कर दें अथवा किसी मंदिर में जाकर रख दें।
- बाद में प्रत्येक दिन 108 बार उपरोक्त मंत्र का जप 30 दिनों तक करना है। जो साधक इस साधना में पूर्ण सिद्धि चाहते हैं उन्हें इस मंत्र का सवा लाख जप अनुष्ठान रूप में करना चाहिए।
- इस प्रकार यह प्रयोग सम्पन्न होता है जो कि आगे के पूरे जीवन को संवारने, सुखमय बनाने और उन्नति युक्त बनाने में सहायक है।
- मुझे विश्वास है, कि मेरे पत्रिका पाठक और साधक जो विविध समस्याओं से ग्रस्त है, जो विविध शत्रुओं से परेशान हैं, इस प्रयोग के द्वारा उन शत्रुओं पर विजय प्राप्त करते हुए, श्रेष्ठ और अद्वितीय उन्नति प्राप्त कर सकेंगे।
- इस साधना को सम्पन्न करने के एक महीने बाद प्रत्येक साधक पत्रिका कार्यालय को पत्र लिखें कि इस साधना को सम्पन्न करने से उन्हें अपने जीवन में कितनी अनुकूलता प्राप्त हुई।

हमें विश्वास है कि निश्चय ही इस प्रकार के प्रयोग से साधक अपने जीवन में सभी दृष्टियों से शत्रुओं का शमन कर या शत्रुओं की शत्रुता समापन कर पूर्ण उन्नति प्राप्त कर सकेंगे।

साधना सामग्री 500/-

शरीर स्वस्थ रखना हम सभी का कर्त्तव्य है

स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन का निवास होता है

शरीर के प्रत्येक अंग को सुड़ौल बनाना आवश्यक है
मन को हर समय जवान रहना आवश्यक है तो

अपनाइये

सिद्धासन

आदिकाल से ही मनुष्य के अंदर स्वयं को जानने एवं समझने की तीव्र लालसा रही है। आत्म-ज्ञान की तीव्र लालसा ने ही मनुष्य को आध्यात्म की ओर जाने के लिए हमेशा प्रेरित किया है। प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन काल में कभी न कभी स्वयं को समझने की इच्छा के प्रति लालायित होता है।

गीता में कहा गया है कि जो कुछ इस ब्रह्माण्ड में है वही सब व्यक्ति के अंदर भी स्थित है और वह इस ब्रह्माण्ड का एक लघु रूप है। अत: इस परम सत्य को स्वयं अनुभूत करना एक अलग और विशिष्ट क्रिया है परंतु इस सत्य को किसी के मुख या पुस्तक इत्यादि में पढ़ना सर्वथा भिन्न स्थिति है। सिद्धि का तात्पर्य सहजता से है। सिद्धि एवं सहजता एक ही स्थिति है।

योग मार्ग में योगासनों के साथ सम रसता स्थापित हो जाने पर प्रत्येक आसन सहज लगने लगता है। शरीर के सभी अंगों में एक विशिष्ट लयात्मकता एवं संतुलन स्थापित हो जाता है। इस स्थिति में व्यक्ति सिद्ध हठयोगी कहलाने लग जाता है। सहजता से ही सौन्दर्य है। व्यक्ति हमेशा तनाव एवं द्वंद की स्थिति में रहता है जिसके कारण उससे प्रतिपल दूर होता जाता है।

सिद्धासन का तात्पर्य शरीर की उस विशिष्ट स्थिति से है जिसमें मनुष्य आत्म साक्षात्कार करने में सफल हो पाता है। आत्म साक्षात्कार परम सत्य को जानने की स्थिति है और परम सत्य ही कैवल्य ज्ञान कहलाता है। यही स्थिति व्यक्ति को ईश दर्शन करवाती है और इसके पश्चात् व्यक्ति के अंदर ब्रह्मत्व जागरण की स्थिति बनना प्रारंभ होती है।

संसार में विभिन्न धर्मों के योगियों ने समय-समय पर सिद्धासन या इससे मिलती-जुलती स्थिति में बैठकर ही आत्म-साक्षात्कार किया है। सिद्धासन एक अति महत्वपूर्ण दैहिक स्थिति है जिसमें शरीर में उपस्थित समस्त ऊर्जा एक जगह केन्द्रित होकर सुषुम्ना नाड़ी के द्वारा सहस्त्रार में विचरण करती है। जिसके कारण अनेक जन्मों के बंधन कटने लगते हैं।

योग मार्ग में वर्णित सिद्धासन सहजता का ही प्रतीक है और सहजता ही सत्य को प्राप्त करने का आसन एवं सुलभ तरीका है।

विधि : सर्वप्रथम पाँवों को सामने रखते हुए साधारण स्थिति में बैठें। उसके पश्चात् दायें पैर को घुटने से मोड़कर ऐड़ी

को गुदा और उपस्थेन्द्रिय के बीच सीवन स्थान पर इस प्रकार से स्थापित करें कि पैर का तालू जांघ को स्पर्श करे। फिर बायें पैर को भी घुटने से मोड़कर ऐड़ी जननेन्द्रिय के मूल पर रखकर सीधा बैठ जायें।

इस प्रकार कटि, ग्रीवा, मस्तक एवं छाती एक सीध में हो जायेंगे। इसके बाद दोनों हाथों को ज्ञान मुद्रा में घुटनों पर स्थापित कर लें। ध्यान रहे सिद्धासन में दोनों घुटने भूमि से सटे हुए होने चाहिए।

इस आसन से काम पर संयम प्राप्त होता है और ब्रह्मचर्य सिद्ध होने में सहायता मिलती है।

भौंहों के बीच में दृष्टि स्थिर रखने से मन की एकाग्रता हो जाती है और प्रकाश दर्शन होता है। नासिका के अग्रभाग पर दृष्टि स्थिर करने से भी उक्त सिद्धि थोड़ी देरी से हो जाती है। जो अपनी दृष्टि को भ्रूमध्य में अथवा नासिकाग्र पर स्थिर नहीं कर सकते, वे किसी बाह्य बिन्दु पर भी स्थिर कर सकते हैं।

सबसे प्रथम इस आसन पर केवल बैठने का अभ्यास करना उचित है। कोई शरीर का भाग बिल्कुल न हिलाते हुए जितनी देर बैठने का अभ्यास होगा उतना मन एकाग्र करने के लिये अधिक सहायता होगी।

अगर आप चाहें तो आधे घंटे सिद्धासन में बैठें या फिर अपनी इच्छानुसार जितनी देर बैठ सकते हैं बैठें, परंतु बैठें जरूर। श्वास-प्रश्वास के बारे में कोई भी निश्चित नियम नहीं है। कुछ लोग सामान्य तरीके से श्वास-प्रश्वास चलने देते हैं और अपना ध्यान श्वास-प्रश्वास की गति पर लगा देते हैं जिसके कारण कुछ ही समय में वह चैतन्य हो उठते हैं। साधक इस आसन में ॐ या अपने ईष्ट का जाप भी करते हैं।

कहने का तात्पर्य है कि ध्यान की किसी भी विशिष्ट प्रक्रिया को इस आसन में अपनाया जा सकता है। अनेक योगियों एवं संतों ने इस आसन में बैठकर तप, त्याग व तपस्या करते हुए वह सब कुछ पाया है जो जीवन का अभीष्ट है।

●●●

भारत में अदृश्य

खण्डग्रास सूर्य ग्रहण

(30 अप्रैल/1 मई 2022)

यह खण्डग्रास सूर्य ग्रहण वैशाख अमावस्या, शनिवार को भारतीय समय अनुसार रात्रि 12.16 से प्रातः 4.08 तक (30 अप्रैल तथा 1 मई की मध्य रात्रि) घटित होगा। यह भारत में दृश्य नहीं होगा। भारतीय समय अनुसार स्पर्शादिक काल इस प्रकार है–

ग्रहण प्रारम्भ	रात्रि	12.16
मध्य	रात्रि	02.11
समाप्त	रात्रि	04.08

खग्रास चन्द्र ग्रहण

(16 मई 2022 – सोमवार)

यह खग्रास चन्द्र ग्रहण वैशाख पूर्णिमा, सोमवार को भारतीय समय अनुसार प्रातः 07.58 से प्रातः 11.25 के मध्य घटित होगा। यह भारत में दृश्य नहीं होगा। भारतीय समय अनुसार स्पर्शादिक काल इस प्रकार है–

ग्रहण प्रारम्भ	प्रातः	07.58
मध्य	प्रातः	09.42
समाप्त	प्रातः	11.25

16.05.22 or
Any Saturday

For Overall Success in Life

Chhinmasta Sadhana

The Sadhanas of the ten Mahavidyas (very powerful forms of Goddess Shakti) are amazing as they hide within them wonderful possibilities which can simply baffle the mind. No task is impossible for a Sadhak who has successfully accomplished the Sadhana of any of the ten Mahavidyas. New avenues open up on their own after these Sadhanas are accomplished.

Sadhaks consider the Sadhana of Chhinmasta, one of the Mahavidyas, as one of the most powerful and wonderful of all rituals. Through this ritual a Sadhak can defeat all enemies and problems of life.

And not just this he can overcome his weaknesses and progress at an amazing pace in the field of Sadhanas. It is a ritual that makes the path of one's progress problem free. In fact such is the effect of the Goddess that no person dares to face him or stand up against him. Generally no Guru is ready to give this Sadhana because of the tremendous power instilled in it. So it is very difficult to obtain this particular ritual.

But another fact about this ritual is that it is very simple, easy and quick acting. This is why revered Sadgurudev very kindly revealed it for the benefit of the common man. For the family man the ritual comes as a boon because living in this world one has to face so many problems and adversaries. It is a very common thing for a successful person or one aspiring success to face unwanted enemies, problems and worries. Lot of one's energy gets wasted trying to fight and overcome the same.

But after trying this Sadhana one is bleassed by Goddess Chhinmasta who is an undefeatable form of Mother Shakti. Through her blessing one is able to succeed in any field be it politics, administration, business, a job or the spiritual field. The Goddess is capable of bestowing totality in life. She always protects the Sadhak from all perils of life.

This is a single day Sadhana that must be done on **16.05.22 or any Saturday.**

Try the Sadhana late at night after 10 p.m. Have a bath and wear fresh clothes.

Covder a wooden seat with a clean cloth and on it place the **Chhinmasta Yantra** over a mound of rice grains.

Light a mustard oil lamp. Then chant the following verse praying to Goddess Chhinmasta for success and meditating on her divine form.

Bhaasvanmandal Madhyagaam Nijshishchhinnaam Vikirnnaalak, Sfaraasyam Prapibadrigalaat-swarudhiram Vaame Kare Vibhateemri. Yaabhaasakt-rati-samaropagitaam Sakhyou Jine Gakinee, Vaarnninyou Paridrishyammod Kalitaam Shree Chhinmastaam Bhaje.

Make five marks of vermilion on the Yantra and then offer rice grains on the Yantra.

Next with a **black Hakeek rosary** chant 75 rounds of the following Mantra.

Om Hloum Gloum Sarva Daarannaayei Phat.

After this daily chant just one round for the next 21 days.

On the twenty second day drop the Yantra and rosary in a river or pond.

Sadhana articles- 500/-

BLISSFULL Married Life

Which parents would not like their children to get handsome, wealthy and good natured life partners?

All in fact try their level best to initiate their children into a happy married life.

Yet at timses various problems crop up, thus making life hell not just for the child but the parents as well.

Failure to get married at the right age is the most traumatic of hese problems followed closely by frequent quarrels among the married couple, being childless after years of marriage and chances of break up of marriage due to an extra-marital affair.

There was a time when a woman had great respect in the house of her in-laws and was worshipped as lakshmi but the imported culture from the West has shaken the Indian system of marriage to the roots and has left it fending off evils like the ever increasing extra-marital affairs, immortality and a so-called free and irresponsible way of life. No wonder there are so many divorces today.

Perusing carefully we find that the cause of most of these problems lies in the utter disregard of the astrological rules and conventions that once governed the marriage system in India. Planets can play havoc with the marrried life and reduce it to a virtual nightmare. Hence it is always advisable to ponder upon the following astrological tips before approving any tie.

1. The most important method adopted is Gunn Mellapak in which Raashi/Nakshatras of the would be husband and wife are matched. 36 is the highest grading in this method. 16-20 points matching means that the match is just fair. 21-28 points means the match is good while more than 28 points means that the match is perfect. If you know the Raashi Nakshatras of the boy and girl you can consult an almanac (Panchang) and do the matching yourself.
2. If the boy and girl have the same Rasshi (Moon Sign) that's best. But the Nakshatra Charann should be different.
3. If the Raashi of the boy is second or twelfth from the girl's this forms the Didhaardash Yog and such a match ought to be avoided. However this Yog is neautralised if the Raashis are Leo an Virgo.
4. If the Raashi of the girl is ninth or fifth from the boy's Panchanavam Yog is formed which leads to loss of children. Such an unfortunate match should be avoided.
5. If the Raashi of the girl is seventh from the boy's Sam Saptak Yog is formed. This is the best but it is inauspicious if the Raashis are Cancer-Capricorn and Leo-Aquarius.
6. If the boy and the girl have the same Naadi the match is inauspicious.
7. Mars in the twelfth, first, fourth, seventh and eighth from the Ascendant or the Moon means Mangalik Yog. A mangalik girl should marry only a Mangalik boy.

8. A strong Venus indicates beauty, handsomeness and also a happy married life.

It's always better to marry according to these rules propounded by our ancient sages. And just as they laid these rules they had also devised Sadhanas and special Dikshas which can neutralise all problems and afflications in a married life. For these, one mjust approach a Sadguru who can from the natal charts or lines on the palm or his clairvoyance know the cause of one's troubles and suggest an effective remedy. Some of these are being elucidated here.

Diksha for marriage

There are some who do not have the Yog for marriage in their natal charts. The best option for them is this Veivaahik Yog Diksha which is obtained in three stages all at one go or one at a time, as the Guru suggests.

Diksha for happy married life

Problems, quarrels, extra-marital affairs, childlessness reduce married life to a joyless, traumatic ordeal. The Married couple or any one of them can obtain Poornna Grihasth Sukh Diksha. In fact every maaried couple should get initiated in this Diksha to avoid any problems in the future.

Diksha for early marriage

Delay in marriage is the worst curse which can be neutralised with Sheeghra Vivaah Diksha. A must for all those who are well past the age of marriage and are troubled on this account.

A wonderful Sadhana

To end all problems in marriage and even neutralise a Mangalik Yog in your own or your spouse's natal chart you can try this amazing Sadhana. Even the parents of a child can accomplish it on behalf of their son or daughter.

For the Sadhana you need **Vivaah Baadhaa Nivaarann Mala** and **Vivaah Baadhaa Nivaaran Yantra.** Start on a Tuesday. Early in the morning haing had a bath, batthe the Yantra with milk and next water. Wipe it dry and apply a mark of Saffron. Place it in a steel plate. Pray mentally to the Guru. Take some water, unbroken rice grains and a flower in your right palm and speak out that you are accomplishing the Sadhana for a happy married life (your own or your child's)

Chant 11 rounds of the following Mantra with the Vivaah Baadha Nivaarann Mala. Do this for 21 days.

Mantra

Om Hloum Kaamdevaay Ratyei Sarva Dosh Nivaarannaay Siddhaay Phat.

On the 22nd day disperse all articles in a river or pond. Soon enough, you shall see a favourable change in your family atmosphere if you are already married. If not you won't have to wait long for your Prince Charming or Cindrella, as the case may be!

Sadhana packt - Rs. 500/-

उपहारस्वरुप प्राप्त करें

छिन्नमस्ता दीक्षा

भगवती छिन्नमस्ता के कटे सिर को देखकर यद्यपि मन में भय का संचार अवश्य होता है, परन्तु यह अत्यन्त उच्च कोटि की महाविद्या दीक्षा है। यदि शत्रु हावी हों, बने हुए कार्य बिगड़ जाते हों, या किसी प्रकार का आपके ऊपर कोई तंत्र प्रयोग हो तो यह दीक्षा अत्यंत प्रभावी है।

दीक्षा द्वारा कारोबार में सुदृढ़ता प्राप्त होती है, आर्थिक अभाव समाप्त हो जाते हैं, साथ ही व्यक्ति के शरीर का कायाकल्प भी होना प्रारम्भ हो जाता है,

उसके शरीर में एक विशेष ऊर्जा एवं स्फूर्ति का संचार हो जाता है।
इस साधना द्वारा उच्चकोटि की साधनाओं का मार्ग प्रशस्त हो जाता है,
उसे जीवन में उच्चता प्राप्त होने लगती है,
तन-मन-धन तीनों ही रूप में इसका प्रभाव होने लगता है।

मंत्र

।। श्रीं ह्लीं क्लीं ऐं वज्रवैरोचनीये हुं हुं फट् स्वाहा।।

योजना केवल 20-21-22 मई इन दिनों के लिए है

किन्हीं पांच व्यक्तियों को पत्रिका का वार्षिक सदस्य बनाकर उनका सदस्यता शुल्क 2250/- **'नारायण मंत्र साधना विज्ञान'**, जोधपुर के बैंक के खाते में जमा करवा कर आप यह दीक्षा उपहार स्वरूप निःशुल्क प्राप्त कर सकते हैं। दीक्षा के लिए फोटो आप हमें संस्था के वाट्स अप नम्बर 8890543002 पर भेज दें। इसी वाट्स अप नम्बर पर पांचों सदस्यों के नाम एवं पते भी भेज दे। संस्था के बैंक खाते का विवरण पेज संख्या 2 पर देखें।

केदारनाथ यात्रा का प्रोग्राम पिछले 2 साल से कोरोना के कारण सम्भव नहीं हो सका था। सद्गुरुदेव की कृपा से इस बार हम सभी को इस यात्रा में भाग लेने का अवसर प्राप्त हो रहा है अतः शीघ्रताशीघ्र जोधपुर या दिल्ली कार्यालय से सम्पर्क करके अपना रजिस्ट्रेशन करवा लें।

भारतवर्ष में हिमालय का नाम आते ही हमें स्वतः ही पवित्रता का बोध होने लगता है। हिमालय वह स्थान है, जहाँ ऋषि-मुनि, योगी आज भी तपस्यारत हैं। उसी हिमालय की पवित्रतम ऊँचाइयों पर बसे हैं–हमारे चार विशिष्ट तीर्थ स्थल यमुनोत्री, गंगोत्री, केदारनाथ एवं बद्रीनाथ, जिन्हें सामूहिक रूप से चार धाम के रूप में भी जाना जाता है। यह स्थल उत्तर भारत में धार्मिक यात्रा का महत्वपूर्ण केंद्र है।

सद्गुरुदेव की कृपा से हम गुरुदेव के सानिध्य में पूर्व में बद्रीनाथ एवं गंगोत्री की पुण्य यात्रा का लाभ प्राप्त कर चुके हैं। इसी क्रम में गुरुदेव ने फिर इस बार अपने शिष्यों को केदारनाथ यात्रा ले जाने का निश्चय किया है, जो कि भगवान शिव का स्थान है। यह स्थान शिव उपासकों के लिए सबसे पवित्र तीर्थों में से एक है। भगवान शिव, अर्थात् गुरु, क्योंकि शिव ही गुरु हैं और गुरु ही शिव हैं इसलिये इस स्थान की यात्रा अपने आप में ही शिष्यों के हृदय में एक विशिष्ट स्थान रखती है। यह स्थान बारह ज्योतिर्लिंगों में से एक है।

स्कन्द पुराण, केदारनाथ खण्ड 1, 40वें अध्याय के अनुसार महाभारत युद्ध के पश्चात युधिष्ठिर आदि पाण्डवों ने जब सगे-संबंधियों की हत्या के पाप का प्रायश्चित श्री व्यास जी से पूछा तब व्यास जी ने कहा कि बिना केदारखण्ड जाए इन पापों का प्रायश्चित नहीं हो सकता। तुम लोग वहां जाओ। पाण्डव केदारखण्ड आये, इस पर महादेव बैल का रूप लेकर पशुओं में शामिल हो गये और भूमि में अंतर्ध्यान होने लगे तभी पाण्डव को इस बात का भान हो गया और भीम उन पर झपट पड़े और पीठ को पकड़ लिया। पाण्डवों की इच्छाशक्ति एवं भक्ति देखकर भोलेनाथ प्रसन्न हो गये। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार, भूमि में अंतर्ध्यान होते वक्त बैल रूपी भगवान शिव के धड़ से आगे का हिस्सा काठमाण्डू में प्रकट हुआ जिससे वे पशुपतिनाथ कहलाए एवं बैल की पीठ की आकृति की पिंड के रूप में भगवान केदारनाथ में पूजा होती है। इस प्रकार तप करके पाण्डवों ने भगवान को प्रसन्न करके उनका आशीर्वाद प्राप्त किया।

कहा जाता है कि केदारनाथ जी का मन्दिर पांडवों का बनाया हुआ प्राचीन मन्दिर है। ये द्वादश ज्योतिर्लिंगों में से एक है। जहाँ पाण्डवों ने अपनी तपस्या से भगवान शिव को प्रसन्न किया था उसी मन्दिर को 8वीं शताब्दी में आदि शंकराचार्य द्वारा पुनः जीवित किया गया।

यहाँ श्राद्ध तथा तर्पण करने से पितर लोग परमपद को प्राप्त हो जाते हैं। मन्दिर के समीप ही हंसकुण्ड है जहां तर्पण किया जाता है।

कुर्म पुराण 36वां अध्याय के अनुसार हिमालय तीर्थ में स्नान करने एवं केदार के दर्शन करने से रुद्र लोक प्राप्त होता है। गरुढ़ पुराण (81वां अध्याय) के अनुसार केदारतीर्थ सम्पूर्ण पापों का नाश करने वाला है।

यह हमारा परम सौभाग्य है कि हमें गुरुदेव के सानिध्य में ऐसी विशेष तीर्थ यात्राओं में जाने का सौभाग्य प्राप्त हो रहा है।

ऐसे विशिष्ट तीर्थ केदारनाथ धाम जहाँ देवाधिदेव भगवान शिव स्वयं गुरु रूप में विराजमान है जहाँ हिमालय के उच्चतम शिखर पर जाकर पवित्र मंदाकिनी नदी के तट पर साधना प्राप्त करना, दीक्षा प्राप्त करना आपके कई जन्मों का पुण्य ही है। ऐसा उत्सव हमारे जीवन का एक स्वप्निल क्षण बन जायेगा जब हम भगवान केदार के प्रांगण में विशेष दीक्षा प्राप्त करेंगे और अपने गुरु के सानिध्य में सद्गुरुदेव के आशीर्वाद से भगवान शिव की आराधना साधना करेंगे।

शिविर का कार्यक्रम केदारनाथ के प्रांगण में ही रहेगा।

यात्रा - 27 मई से 1 जून 2022

27 मई - आपको शाम तक सीधा हरिद्वार पहुँचना है।

28 मई - प्रातः हम गुरुदेव के साथ हरिद्वार से केदारनाथ की ओर प्रस्थान करेंगे और शाम को रामपुर नामक स्थान पर होटल में विश्राम करेंगे।

29 मई - प्रातः 5 बजे रामपुर से गौरीकुण्ड पहुँचकर वहाँ से पैदल केदारनाथ की ओर प्रस्थान करेंगे (गौरीकुण्ड से केदारनाथ की दूरी लगभग 16 कि.मी. है, पैदल जाने में लगभग 6-7 घंटे लगते हैं)। आप वहाँ पहुँचने के बाद उसी दिन केदारनाथ ज्योतिर्लिंग के दर्शन कर लें एवं पास के अन्य महत्वपूर्ण स्थलों के दर्शन भी कर लें। मन्दिर से लगभग 600 मीटर की दूरी पर एक पहाड़ी पर भैरव मन्दिर है। आप चाहें तो केदारनाथ तक की 16 कि.मी. की दूरी घोड़ा, खच्चर, पोनी या डोली से भी तय कर सकते हैं। जो साधक हेलीकॉप्टर से जाने के इच्छुक हों, तो वह स्वयं इन्टरनेट पर हेलीकॉप्टर की बुकिंग ऑन लाइन कर सकते हैं। हेलीकॉप्टर से केदारनाथ जाने में सिर्फ 15 मिनट लगते हैं। यह सुविधा सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त है। आप इसका उपयोग शीघ्र पहुँचने हेतु कर सकते हैं।

दीक्षा एवं साधना कार्यक्रम वहाँ के मौसम के अनुसार 29 मई की शाम या 30 मई की सुबह ब्रह्म मुहूर्त में सम्पन्न होगा एवं हवन कुण्ड में गुरुदेव के सानिध्य में आप आहुति भी प्रदान कर सकेंगे।

30 मई - प्रातः 10 बजे सभी साधक नाश्ता करके वापस प्रस्थान करेंगे एवं वापस पहुंचकर रामपुर अपने होटल में विश्राम करेंगे।

31 मई - प्रातः रामपुर से प्रस्थान कर रात्रि में हरिद्वार में विश्राम करेंगे।

1 जून - प्रातः नास्ते के बाद अपने-अपने गंतव्य के लिए प्रस्थान करेंगे।

कृपया ध्यान दें

27 मई को हरिद्वार में आप निम्न स्थान पर पहुँचे

वासुदेव आश्रम, पावन धाम, भूपत वाला मार्ग, हरिद्वार

(ठहरने का यह वही स्थान है, जहाँ हम बद्रीनाथ यात्रा के समय ठहरे थे)

- 28 मई को सुबह हम उपरोक्त स्थान से चलकर शाम को रामपुर में होटल में विश्राम करेंगे।
- 29 मई को प्रातः हरिद्वार से जाने वाली वही बस आपको सोनप्रयाग तक छोड़ेगी। वहाँ आप अपना आधार कार्ड दिखा कर बायोमैट्रिक रजिस्ट्रेशन अवश्य करायें, फिर वहाँ से स्थानीय सवारी (जीप या टैक्सी) (किराया लगभग 30 रुपये) द्वारा गौरी कुण्ड पहुँचकर वहाँ से अपनी पैदल की यात्रा प्रारम्भ कर दें।
- फिर 30 मई को वापस शाम को इसी प्रकार जीप या टैक्सी से आकर सोनप्रयाग में अपनी उसी बस में बैठें, वो बस आपको वापस होटल में छोड़ेगी।

ध्यान रखें

1. होटल से ट्रेकिंग पर जाने के पूर्व अपना बैग होटल में छोड़ना है अतः अपने बैग पर अपना नाम एवं मोबाइल नम्बर लिखकर अवश्य चिपका दें।
2. जिस बस में जाए उस बस का नम्बर नोट कर लें, जिससे वापस आने के बाद बस ढूंढने में दिक्कत न हो।
3. Biomatric Registration आप चाहें तो online भी Badrinath-kedarnath.gov.in पर करा सकते हैं।

27 मई से 1 जून 2022 तक

ज्योतिर्लिंग केदारनाथ यात्रा

केदारनाथ धाम की समुद्र तल से ऊँचाई लगभग 3584 मीटर है

1. अपनी आवश्यक दवाइयाँ एवं यदि कोई दवा नित्य लेनी है तो दवा की पर्ची साथ रखें।
2. अपने साथ रेनकोट (अत्यावश्यक), छतरी, टॉर्च, कुछ ड्राई फ्रूट्स, कपूर (ऑक्सीजन की कमी होने पर सहायक), गर्म कपड़े, अदरक के सूखे टुकड़े (उल्टी में उपयोगी) आदि अपने साथ रखें।
3. होटल में तीन-चार या अधिक साधकों के मध्य शेयरिंग रूम की व्यवस्था होगी।
4. सभी यात्री ट्रेंकिंग शूज ही पहनें।
5. धूप का चश्मा, सन स्किन क्रीम, कोल्ड क्रीम, लिप बाम, योगा मेट/ एक मीटर प्लास्टिक (साधना के समय बिछाने हेतु) साथ लेकर आयें।
6. यात्रा में जाने हेतु सभी साधक शीघ्र अपना पंजीकरण गुरुधाम जोधपुर या सिद्धाश्रम दिल्ली में करायें।
7. महिलायें परिवार के किसी सदस्य के साथ ही पंजीकरण करायें।
   (विशेष ध्यान दें - अस्थमा, हृदय रोगी, गठिया रोग या अन्य किसी बड़ी बीमारी से पीड़ित व्यक्ति इस यात्रा में अपने डॉक्टर की सलाह से एवं स्वयं की जिम्मेदारी पर ही यात्रा करें।)
8. अपना ऑरिजनल आधार कार्ड एवं कोविड टीकाकरण सर्टिफिकेट अपने साथ लेकर आना अनिवार्य है।

प्रत्येक साधक के लिए पंजीयन शुल्क 20000 रुपये है।
साधना सामग्री एवं दो शक्तिपात दीक्षाएँ भी इसी शुल्क में प्रदान की जायेंगी

पंजीकरण शुल्क आप निम्न दिये गये किसी भी खाते में जमा करा कर फोन पर सूचना दें

खाताधारी	बैंक का नाम	खाता संख्या	IFSC CODE
REKHA KUMARI	STATE BANK OF INDIA, RANCHI	33578523122	SBIN0016616
REKHA KUMARI	BANK OF INDIA, RANCHI	589610110000122	BKID0005896
INDRAJIT RAY	BANK OF INDIA, RANCHI	589610110000121	BKID0005896

उपरोक्त में से किसी भी खाते में रजिस्ट्रेशन शुल्क जमा कराने से पहले फोन नं. 8210257911, 9199409003 पर अवश्य सम्पर्क कर लें।

अधिक जानकारी के लिए निम्न नम्बरों पर सम्पर्क करें

जोधपुर - 0291-2432209,7960039, 2432010, 2433623, दिल्ली - 011-79675768, 79675769, 27354368

यात्रा शुल्क में हरिद्वार से जाने एवं आने की बस व्यवस्था, नास्ते, खाने एवं ठहरने की व्यवस्था के साथ ही दो विशेष शक्तिपात दीक्षाएं एवं साधना सामग्री भी इसी शुल्क में शामिल है।

8 मई 2022

माँ भगवती नारायण साधना शिविर

शिविर स्थल : भारत कोकिंग कोल लिमिटेड (B.C.C.L.), सिजुआ स्टेडियम, सिजुआ, **सिजुआ (जिला-धनबाद)**

(नियर कटरास रेलवे स्टेशन)

सम्पर्क : जनेश्वर प्रसाद-7004283749, सत्येन्द्र भारती-9835121114, अनुज मिश्रा-9835369456, इन्द्रजीत राय-9199409003, सुदर्शन सिंह-9905553162, दिनेश नायडू-9431368784, मनु चौधरी-97714 53559, अरुण कुमार मुण्डा-8210176388, सत्येन्द्र सिंह- 79922 76836, सबर शक्ति सिंह-9155860482, सुधीर सुमन-9835571588, सेवक चौहान-9142415091, रामनाथ राउत, तरुण कुमार-99345 11078, पप्पू भारती-9905637473, रामाधीन ठाकुर-6206871591, संजय सिंह, संतोष रजवाए, दिलीप गुप्ता, हरिशचन्द्र कम्हार, दिनेश महतो, विजय डे, रणवीर सिंह, अरविन्द सिंह, राजेश राव, श्रीनाथ माली, जनार्दन चौबे, मनोज धारी, अजीत मंडल, अकलूराम महतो, बेदी गुप्ता, सकलदीप रवानी, विजय सिंह, अनिल विश्वकर्मा, विनोद सिंह, सिकन्दर राम, रंजित सिंह, शैलेन्द्र सिन्हा, विनय उपाध्याय, राजन हारिजन, संदीप सिंह, राजकुमार महतो, इनवल हरिजन, वी.के.मंडल, कृष्ण महतो, श्याम सुन्दर राजभर, दशरथ ठाकुर, अरुण कुमार, सन्दीप राम, रामानन्द दास, अपूर्वा कृष्ण खान, मनोज भुईया, राधानाथ महतो, उत्तम राय, सत्येन्द्र चौहान, शिव प्रसाद चौहान, शिव प्रसाद केवट, रविन्द्र प्रसाद सिह, लाखो भुईया, सियाराम कुमार, संजय पाण्डा, संजय पासवान, दिलीप पासवान, कंचन कुमारी, विजय बेलदार, रांधेय वाडरी, पुनीता सिंह, लक्यु महतो, शिवु सहिस, किस्त्रे ओरांग, श्री प्रकाश सिंह, हीरालाल दुसाद, बंगाली पासवान, हौसला पण्डित, विजय राम, रंजीत दसौंधी, भोला चौहान, धनेश्वर चौहान, अमित सोनी, रामाधार चौहान, अशोक चौहान, उदय नोमियान, दिनेश कुमार राम, ललन पासवान, बैजनाथ चौहान, दयाशंकर चौहान, बलराम चौहान, शशि भूषण सिंह, बीणा गुप्ता, अन्तर्राष्ट्रीय सिद्धाश्रम साधक परिवार, राँची एवं बुण्डू समस्त गुरु भाई-बहन, पाण्डेडीह-तेतुलमारी- राजेश्वर प्रसाद महतो, समरेश सिंह, मिथलेश झा, अखिलेश सिंह, विजय शंकर चौहान, राजेश प्रसाद गुप्ता, कामता सिंह, पारस रवानी, अवधेश झा, धनबाद-अरुण सिंह, कृष्ण मुरारी पाण्डे, राममनोज ठाकुर, सुभाष भदानी, मंजीत कुमार, ममता देवी, बलियापुर-सुजान महतो, शांतिलाल महतो (पहाड़पुर), बस्ताकोला-बिरजू साव, इन्द्रेव पासवान, गंगाप्रसाद वर्मा, सिन्दरी-पंकज कुमार, कतरास-प्रदीप भदानी, रंजीत प्रसाद गुप्ता, पूरन सिंह, सुखराम नोनिया, बाघमास (मधुबन)-श्याम किशोर सिंह, डॉ. भीमप्रसाद केवट, संजयसिंह, विक्रम पासवान, संजय यादव, अशोक रवानी, माधव बिहारी शर्मा, दुमका-नारायण केवट, मन्नत रजवार, शोभा कुमारी, चूनू केवट, अलकुशा-सुभाष महतो, लौहपिद्दी-महादेव राय, बोकारो-गोपाल नापित, चन्द्रपुरा-शत्रुधन प्रसाद, उमाशंकर, बुलू घोष, गीता देवी, धीरज रजक, मोनोश्वर ठाकुर, नारायण महतो, फुसरो-सोहराय लोहार, मनोज सवासी, रजरप्पा-के.डी. प्रसाद, प्रदीप अगड़ीया, हलधर महतो, केदला प्रेमनगर-कोलेश्वर मिस्त्री, डॉ. संजय जी, राजूजी, पवन चौहान, हजारीबाग-संजय श्याम, विकास मिश्रा, अर्जुन रजक, गीरीडीह-प्रमेश्वर ठाकुर, अशोक कुशवाहा, गोलिया-हरेन्द्र कुमार, रामेश्वर महतो, धनेश्वर निखिल, प्रमोद साव, दिलीप प्रसाद केशरी, गोमो-परोवीर जी, बबलू वर्णवाल, तोपचायी-संजय सिंहा, अशोक साव, विष्णुगढ-जगदीश प्रसाद बर्मन, निर्मल विश्वकर्मा, दिलीप साव, टेकलाल महतो, दामोदर महतो, कांति देवी, वासुदेव महतो, पूर्णिया (बिहार)- आदित्य आनंद, चासनाला- विजय जी एवं समस्त गुरुभाई।

14-15 मई 2022

सद्‌गुरुदेव निखिलेश्वरानन्द कृपायुक्त

शिवशक्ति महामृत्युंजय साधना शिविर

शिविर स्थल : रोटरी भवन, **पालमपुर-काँगड़ा** (हि.प्र.)

आयोजक सिद्धाश्रम साधक परिवार, हिमाचल प्रदेश-पालमपुर- आर.एस. मिन्हास-8894245685, संजय सूद-9816005757, शशी संगराय, देवगौतम-9894075015, वृन्दागौतम, सुनन्दा, सीमा चन्देल-94593 51566, बलवन्त ठाकुर, ओंकार राणा-9816578166, मिलाप चन्द, कुशला देवी, कुसुम, राजेन्द्र कटोच, जोगिन्द्र सिंह, कर्मचन्द, कल्याण चन्द, कामना ठाकुर, कृष्णा सुपहिय, अक्षय बर्मा, कुशला देवी, उर्मिल सुबहिया, अखिल-आंचल राणा, काँगड़ा-अशोक कुमार-9736296077, सुनील नाग-9736550347, राजू, रणजीत मूंगरा, धर्मशाला-संध्या-9805668100, केसर गुरंग-98825 12558, जुल्फीराम, अरविन्द डोगरा, नगरोटा सूरियाँ-ओमप्रकाश-9418256074, कुशल गुलेरिया, जगजीत पठानिया, सुभाष चन्द्र शर्मा, जीतलाल कालिया, नरेश शर्मा, मस्तराम, भोला, जनरैलसिंह, प्रकाश पठानिया, श्रेष्ठा गुलेरिया, जोगिन्दर सिंह, उर्मिला, प्रकाश सिंह, हरिओम, नूरपूर-पीताम्बर दत्त, नरेश शर्मा, दिनेश निखिल, आशीष, चौंतड़ा-संजीव कुमार-8894513703, विकास सूद, गोविन्दराम, हमीरपुर-निर्मला देवी, राजेन्द्र शर्मा, डॉ. गगन, प्रवीण धीमान, जाहू-सागरदत्त, चमन, प्रभदयाल, सपना शर्मा, सरकाघाट-अशोक कुमार-981620266, मोहनलाल शास्त्री, रोशनलाल, संसारचन्द, सुन्दरनगर -जयदेव शर्मा-9816314760, वंशीराम ठाकुर, नरेश वर्मा, तिलकराज, नीलम निखिल, निर्मला शर्मा (वलद्वाड़ा), श्याम सिंह, मानसिंह, कुल्लू-रतो राम, तपे राम, घुमारवीं-ज्ञानचन्द एडवोकेट, डॉ. सुमन, हेमलता कौण्डल, धर्मदत्त, सोहनलाल, स्नेहलता, सन्तोष कुमार, बरठीं-कृष्ण कुमार शाण्डिल, अश्वनी गौतम, सुशील भरोल, शिमला- चमनलाल कौण्डल, टी.एस. चौहान, सुरेन्द्र कंवर, तुलसीराम कौण्डल, दसुआ टांडा (पंजाब)- रघुवीरसिंह एवं पार्टी, होशियारपुर-दिलबागसिंह।

26 जून 2022

लक्ष्मीनारायण सर्वगृहस्थ सुख प्राप्ति साधना शिविर

शिविर स्थल :

कृषि उपज मंडी प्रांगण, **भटगांव,** नगर पंचायत,

भटगांव, जिला - बलोदाबाजार (36गढ)

आयोजक मण्डल छत्तीसगढ़ - जी.आर घाटगे-9669901379, महेश देवांगन-9424128098, लकेश्वर चन्द्रा-9827492838, सेवाराम वर्मा-9977928379, हितेश ध्रुव-9826541021, संजय शर्मा-9111342100, प्रताप सिंह प्रधान-7566555111, संतोष साहू- 79998

19021, पिताम्बर ध्रुव-9993242093, एन.के. कंवर- 9644334011, अजय साहू-9009579631, अशोक साहू-9753292562, जनक यादव-9630207072, बलौदा बाजार नगर पंचायत, भटगांव क्षेत्र-सहदेव प्रसाद साहू-9893637680, धरमलाल आदित्य-6260409093, भुनेश्वर प्रसाद पटेल-8817823424, रथराम साहू-9926114089, दामोदर प्रसाद तिवारी-7828515783, बोधी राम आदित्य-9424173240, जीवन लाल कुंभकार-9827743716, दयाराम ठाकुर-9098788993, चंद्रशेखर देवांगन-9827864575, बद्रीप्रसाद साहू-7000159397, बाबूलाल कुंभकार-7724935342, तीरथ राम साहू-7828453213, देवनारायण साहू-7770951230, उत्तर कुमार नाविक-9340251886, लखनलाल सिदार-7489912006, विजयलक्ष्मी नारायण सिदार-6261901999, राहूल साहू-9644432137, रामनाथ चौहान-9907936802, विष्णुप्रसाद जांगड़े-6264554646, दयाराम साहू-7000591212, घनश्याम पैकरा-9752386223, सरोज देवी यादव-8827747013, नंदकुमार पैकरा-6261202398, रमेश चौहान- 9753318409, गीताप्रसाद कश्यप-7509117792, द्वारिका साहू- 9098907502, मोती चन्द पटेल-7722938228, खिलावन साहू-8815870286, इंद्रजीत गुप्ता-9685611203, संतोष निषाद- 8839493290, मोतीदास वैष्णव-6261825764, प्रदीप साहू- 7000474604, नंदकिशोर कश्यप-88218 34052, लक्ष्मीप्रसाद मौर्य-9907912221, लोकेश कुमार साहू-6260042520, दुर्गेश साहू- 96913 33221, प्रेमसिंग-62675 77086, ननकी साहू, बरेली- 6268810416, टीकाराम श्रीवास-9340 563128, बलौदा बाजार- लेखराम सेन- 9826957606, लेखराम चन्द्राकर-9926114722, देवचरण केवट- 8435112361, अग्रहित धीवर-97546 64556, भाटापारा-पुरुषोत्तम कर्ष- 97542 51788, लक्ष्मीप्रसाद वर्मा-90095 77151, रायपुर-दिनेश फुटान-8959140004, बृजमोहन साहू-79740 12769, तिल्दा नेवरा-टीका राम वर्मा-6261180440, दिलीप देवांगन -7000354515, जांजगीर चांपा-राधेश्याम साहू, (जांजगीर)- 9131863005, जयचंद पटेल (डभरा)-7725007553, समेलाल चौहान (शक्ति)-9165601201, राजनांदगांव-गनपत नेताम-9406012157, ज्ञानेश तुमरेकी-9907102649, तेजेश्वर गौतम-9827950765, दुर्ग-विकेश वर्मा-7024791221, गरियाबंद-संतोष जैन-7415537926, शिवमूर्ति सिन्हा-7999343781, धमतरी-विषयलाल साहू-97701 26672, महासमुंद-खोमन कन्नौजे-9993377750

11-12 -13 जुलाई 2022

गुरुपूर्णिमा महोत्सव साधना शिविर

शिविर स्थल : रामाधीनसिंह उत्सव भवन, बाबूगंज निकट आई.आई.टी. चौराहा, **लखनऊ** (उ.प्र.)

आयोजक मण्डल - अजय कुमार सिंह-9415324848, डी.के. सिंह-9532040013, प्रदीप शुक्ला-9415266543, सतीश टण्डन-93361 50802, पंकज दूबे-9450156879, दान सिंह राणा-9415766833, अरुणेश गुप्ता-7706861436, सन्तोष नायक-9125238612, हरिश चन्द्र पाण्डेय-7880671504, विजय सिंह (पिंकू)-9450434195, जयन्त मिश्रा, टी.एन. पाण्डेय, शैलेश टण्डन, मनीष पारुल श्रीवास्तव, निधि नवनीत शर्मा, रश्मि श्रीवास्तव, मधुलिका श्रीवास्तव, सन्तोष सिंह (अन्नू)-73900 51177, अनिल श्रीवास्तव, कल्पना शुक्ला, डॉ. प्रवीन सिंह, स्वाती त्रिपाठी, कृषा मिश्रा, उर्मिला राय, गायत्री देवी, मनीष शेखर, अवधेश श्रीवास्तव, सुनील कुमार महरोत्रा, एस.के. वैष्णव, के. जितेन्द्र कुमार, जयन्त मिश्रा, अवधेश शर्मा, जितेन्द्र साहू, जगदीश पाण्डेय, अनुराग साहू, राम प्रकाश (मोनू), आशीष सिंह राठौर, विजय बुद्धई (न्यूयार्क सिटी), अमित वर्मा, संन्यासी प्रकाशानंदजी, अजीत सोनकर, आशीष सिंह राठौर, के. जितेन्द्र कुमार

17 जुलाई 2022

शिवशक्ति महामृत्युंजय साधना शिविर

शिविर स्थल : उज्जैन (म.प्र.)

आयोजक-जगदीश चन्द्र मकवाना-8989573008, रूपेंद्र चावड़ा -9755896505, सुरेश खत्री-9300060104, 9340040767, डी.एन. नीमे, एस बी एन त्रिवेदी, दिलीप सेन, बंडू पद्म, सरिता गिरी, अमित निखिल, अमित हरियाणी, हिमांशु नागर, सुभाष चंद्र खत्री, शारदा दीदी, चिंतन दीदी, अनिल कुंभारे, रूपेश साहू, अभिषेक देवड़ा, डॉ. मानसी सोलंकी, नोवेंदू बारस्कर, बागसिंह पंवार, रामनाथ सिंह देवड़ा, रवि सोलंकी, विष्णु तेजपुरी, डॉ. हितेश नीमा, डॉ. मनीष कुरील, गोपाल वशिष्ठ, दिलीप सेन, विरल सोनी, सुनील सोनी, श्यामलाल जी, आकाश वर्मा, नारायण जी चारण, जगदीश चन्द्र तंवर, विजय दनगाया, सुनिल पडियार, शांति लाल पाटीदार, सीताराम पटेल, भवानीराम वर्मा, दिनेश कतिजा, रोहित लववंशी, मनोज भिलाला, विमल उपड़िया, संजय निंगवाल, मुकेश भूरीया

24 जलाई 2022

श्रीसद्गुरुदेव कृपा युक्त सर्व मनोकामनापूर्ति साधना शिविर

शिविर स्थल : पटना (बिहार)

19 अगस्त 2022

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव साधना शिविर

शिविर स्थल : **लेमन ट्री प्रीमियर, नियर इस्कान गेट, नागेश्वर रोड,** द्वारका (गुजरात)

सम्पर्क-हरेश भाई जोशी-7016108433, सुनील भाई सोनी-9426598298, हेमन्त भाई-9426285578, चिराग माहेश्वरी-9725323930, विजय भाई पटेल- 99251 04035, विवेक कापड़े-7984064374, जयनीश पानवाला-7984248480, हितेश भाई शुक्ला-7048171555, पी.के. शुक्ला-9426583664, विजयनाथ साहनी-9898032172, श्यामलाल राजपूत-9327648601, विजयालक्ष्मी बेन-8401763630, प्रमीत मेहता-7990980150, प्रग्नेश भाई (डाकोर)- 9904922935, राजेश अग्रवाल (राजकोट)-9824391747, धवल भाई (द्वारिका)-9898490019, दीपेश गाँधी-886612400, देवेन व्यास- 95588 07927, रमेशभाई तम्बतकर -7770872022, अतुल भाई जानी (सुरेन्द्र नगर)-8469334185

कानपुर (उ.प्र.) में आयोजित साधना शिविर

दिल्ली कार्यालय – सिद्धाश्रम 8, सन्देश विहार, एम.एम. पब्लिक स्कूल के पास, पीतमपुरा, नई दिल्ली–110034
फोन नं. : 011-79675768, 011-79675769, 011-27354368

Printing Date : 15-16 April, 2022
Posting Date : 21-22 April, 2022
Posting office At Jodhpur RMS

RNI No. RAJ/BIL/2010/34546

Postal Regd. No. Jodhpur/327/2022-2024
Licensed to post without prepayment
Licensed No. RJ/WR/WPP/14/2022
Valid up to 31.12.2024

माह : मई एवं जून में दीक्षा के लिए निर्धारित विशेष दिवस

पूज्य गुरुदेव श्री अरविन्द श्रीमाली जी निम्न दिवसों पर साधकों से मिलेंगे व दीक्षा प्रदान करेंगे। इच्छुक साधक निर्धारित दिवसों पर पहुंच कर दीक्षा प्राप्त कर सकते हैं।

स्थान गुरुधाम (जोधपुर)	स्थान सिद्धाश्रम (दिल्ली)
20 मई	21-22 मई
10 जून	11-12 जून

प्रेषक –
नारायण-मंत्र-साधना विज्ञान
गुरुधाम
डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी
जोधपुर – 342001 (राजस्थान)
पोस्ट बॉक्स नं. : 69
फोन नं. : 0291-2432209, 7960039,
0291-2432010, 2433623
वाट्सअप नम्बर : 8890543002